बलिदान,
जो व्यर्थ नहीं गया....

१६१७ की रूसी क्रान्ति से सम्बन्धित
एक ट्रेजेडी

लेखक
वी० विश्नेव्स्की



इण्डिया पब्लिशर्स,
लखनऊ

बलिदान, जो व्यर्थ नहीं गया....

(एक "आशापूर्ण ट्रेजेडी")

लेखक :
वी० विश्नेव्स्की

हिन्दी अनुवादक :
रमेश सिनहा

प्रकाशक :
इण्डिया पब्लिशर्स,
सी—७/२ रिवर बैंक कालोनी,
लखनऊ

मूल्य : दो रुपया पचास पैसा

मुद्रक :
चेतना प्रिंटिंग प्रेस,
२२ कैसरबाग,
लखनऊ

१६६८

पात्र

प्रथम वक्ता

दूसरा वक्ता

वाइनोनिन, एक फिन्नी नौसैनिक, कम्युनिस्ट

चेचक-दाग नाविक

एलेक्सी, बाल्टिक नौसैनिक बेड़े का नाविक

प्रधान, अराजकतावादियों के गुट का नेता

कमिसार, बाल्टिक नौसैनिक बेड़े के जहाजियों के साथ काम करने के लिए कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा भेजी गयी एक युवती

जहाज का कमाण्डर, ज़ारशाही नौसैनिक बेड़े का भूतपूर्व अफसर

स्विफ्ट, प्रधान का खुशामदी अर्दली

पहला छोटा अधिकारी

दूसरा छोटा अधिकारी

नौअधिकारी

बैण्ड मास्टर

बूढ़ी महिला

लम्बा नाविक

पहला अफसर, जो स्वदेश लौट रहा है

दूसरा अफसर

मुखिया, अराजकतावादियों के एक दूसरे दल का नेता

ओडेसा का आदमी

दुश्मन अफसर

पादड़ी

बाल्टिक नौसैनिक बेड़े के नाविक, स्त्रियाँ जो अपने मर्दों को विदाई देने आयी हैं, श्वेत-गार्ड अफसर, तथा अन्य लोग

नाटक म वर्णित घटनाएँ इस शताब्दी के तीसरे दशक के प्रारम्भिक वर्षों मे घटी थी। यह रूस के गृह-युद्ध का काल था। कुछ घटनाएँ बाल्टिक सामुद्रिक बेड़े के जहाज मे और कुछ जमीन की लडायी के दौरान घटी थी।

प्रस्तावना

कई मानो मे यह नाटक सोवियत सघ के १९१७ की समाजवादी क्रान्ति के बाद लिखे गये दूसरे नाटको से बहुत भिन्न है।

इससे पहले हमने तीन और सोवियत नाटक प्रस्तुत किये थे। **क्रेमलिन की घण्टियाँ, डाक्टर प्लेटन और सच्चा प्रेम।** उन तीन प्रसिद्ध नाटको के माध्यम से सोवियत क्रान्ति के बाद के तीन विशेष कालो के सामाजिक जीवन, नये मानवीय सम्बन्धों, तथा नये समाज मे ढलते हुए नए इन्सानो के विचारो और नए और पुराने मूल्यो और विचारो के टकरावो का सजीव और कलात्मक चित्र सामने आया था।

क्रेमलिन की घण्टियाँ मे (जिसमे लेनिन स्वय एक पात्र है) १९१७ की क्रान्ति के प्रारम्भिक दिनो के सघर्षों तथा समस्याओं का चित्रण है, **डाक्टर प्लेटन** मे नये सोवियत समाज की चौथी दशाब्दि के जीवन का और **सच्चा प्रेम** हमे आधुनिक सोवियत समाज की सुख दु ख और प्रेम-वियोग भरी समस्याओ के बीच पहुँचा देता है। इन तीन नाटको से रूसी क्रान्ति के बाद के पिछले पचास वर्षों के उथल-पुथल भरे इतिहास और उसके सन्देश को समझने मे सहायता मिलती है।

इन तीनो नाटको मे एक आन्तरिक और घनिष्ट सम्बन्ध भी है, चूंकि तीनो का मुख्य विषय मनुष्य और जीवन को बेहतर बनाने तथा उसकी स्वतन्त्रता के सीमान्तो का विस्तार करने के लिए किया जानेवाला उसका सामूहिक और सघर्षशील प्रयास है।

किसी हद तक वी० विश्नेव्स्की का वर्तमान नाटक, **बलिदान,** जो

व्यर्थ नहीं गया का भी विषय यही है। किन्तु, इस नाटक मे नाटककार ने एक दो प्रश्न और भी उठाये हैं। एक प्रश्न उस स्वतन्त्रता का, अथवा यो कहना चाहिये कि उस स्वतन्त्रता की तरफ मनुष्य के दृष्टिकोण का है—जिसकी समाजवादी क्रान्ति ने सृष्टि कर दी थी। इस प्रश्न को उ होंने साम्यवादियो (कम्युनिस्टो) और अराजकतावादियो (अनारकिस्टो) के तत्कालीन सघर्ष के म ध्यम से पेश किया है और एक तरफ तो—कमिसार के कथनो और कार्यों के जरिये—यह दिखलाया है कि साम्यवादी अव्यवस्था के नही, व्यवस्था के—मानवीय स्वतन्त्रता और विकास के हितो पर आधारित व्यवस्था के—अलमबरदार है, और, दूसरी तरफ—अलेक्सी के चरित्र के माध्यम से—यह कि, वास्तव मे, 'आवश्यकता की स्वीकृति ही स्वतन्त्रता होती है'। अलेक्सी—दवग, वेपरवाह, विद्रोही, अलेक्सी पहले अराजकतावादियो की लच्छेदार लफ्फाजी का शिकार हो जाता है पर अपने अनुभव से वह सीखता है कि कम्युनिस्टो की ही वात सच है और फिर वह उनके साथ हो जाता है। किस भाति—इसे नाटक मे पढिये।

दूसरी दार्शनिक समस्या जो नाटककार ने उठायी है वह यह है कि जीवन के लिए मरने से जीवन किस प्रकार विजयी होता है। इसीलिए, इस नाटक का नाम बहुत सोचने विचारने के बाद विश्नव्स्की ने "आशापूर्ण ट्रेजेडी" (Optimistic Tragedy) रक्खा था। नाटक की मुख्य पात्र—कमिसार, जो क्रांति के लिए अर्पित एक कम्युनिस्ट तरुणी है, अन्त मे मर जाती है, लेकिन जिस लक्ष्य के लिए बोहड और विगडे हुए, भद्दे और कटुभाषी, तगडे और मुजाकिए नौसैनिको के बीच वह आयी थी वह लक्ष्य उसकी शहादत से किस तरह अमर और अविजेय हो जाता है यह भी नाटक मे ही अनुभव करने की वस्तु है।

नौसैनिको का रेजीमेण्ट मे जब यह तरुणी कमिसार आयी थी तब

वह लगभग अकेली थी। कुछ समय बाद ही वाईनोनिन, एक फिनलैण्ड-वासी नाविक उसका सहयोगी बना था। बहुत हद तक अन्य जहाजी उसे गैर और दुश्मन समझते थे। लेकिन, अन्त मे, और, वास्तव म, अन्त से काफी पहले ही, उसके इर्द गिर्द वे एक अटूट जीवित दीवाल बन गये थे, एक नये महान लक्ष्य की समझदारी की अदमनीय शक्ति उनके अन्दर पैदा हो गयी थी, उनके दिमागो के भ्रमात्मक जाले दूर हो गये थे और वे आखिरी दम तक उस लक्ष्य की रक्षा के लिए सग्राम करने के लिए कटिबद्ध हो चुके थे।

वस्तुत, इसे एक दार्शनिक नाटक भी कहा जा सकता है। देश और काल की सीमाओ से ऊपर उठकर, मानवीय स्वतत्रता और मृत्यु-विजयिनी मानवीय जीवन धारा जैसे गूढ आध्यात्मिक और, फिर भी, इतने ज्वलन्त प्रश्नो को उठाने और उनका समाधान प्रस्तुत करने की विश्नेव्स्की म कितनी अद्भुत क्षमता है इसे इस नाटक के पृष्ठो से ही जाना जा सकता है। जिन लोगो को समाजवादी यथार्थवाद के बारे म बहुतेरे भ्रम हैं, जो उसे या तो भौंडा यथार्थवाद या फिर महज नारेबाजी समझते है, उन्हे भी इस नाटक से समाजवादी यथार्थवाद के सबल, स्पष्ट दर्शी और कलात्मक दृष्टिकोण को समझने मे सहायता मिलेगी।

यह नाटक कितना लोकप्रिय हुआ है इसका कुछ अनुमान इस बात से भी हो सकता है कि पिछले २५ वर्ष से इसे बराबर रगमच पर खेला जा रहा है। और केवल सोवियत सघ मे नही। स्पेन की राजधानी, मैड्रिड जिस समय फ्रैको की एकतत्रवादी फासिस्ट सेनाओ से घिरी हुई थी उस समय इसे उस घिरे हुए नगर मे अभिनीत किया गया था। हुनान (चीन) म इसे चीनी एक्टरो ने अपनी आजादी की लडाई के दिनो म एक गुफा के अन्दर खेला था। विश्वविख्यात नाटककार, डायरेक्टर और प्रोड्यूसर बर्टोल्ट ब्रेख्ट ने इसे जर्मन जनवादी गणतत्र

मे प्रस्तुत किया था जिसमे १६४६ मे इसे "गेटे राष्ट्रीय पुरस्कार" मिला था। १६५१ मे इसका प्रदर्शन पेरिस म हुआ था। प्राग, बुडापेस्ट, बुखारेस्ट—शायद ही कोई कला-प्रेमी शहर योरुप का होगा जिसमे इसे अभिनीत न किया गया हो।

ऐसा लगता है कि १६३२ मे लिखा गया यह नाटक समय बीतने के साथ साथ अधिकाधिक लोकप्रिय होता गया है।

इस नाटक को राष्ट्र भाषा हिन्दी मे प्रकाशित करने मे हम प्रसन्नता हो रही है। हम आशा करते है कि हिन्दी मे भी इसे उतनी ही प्रसिद्धि प्राप्त होगी जितनी अन्य भाषाओ मे हुई है।

—रमेश सिनहा

अक पहला

[सगीत की लहरियाँ हवा को आलोडित कर रही है। आरोहो अवरोहो मे स्वरो म शक्ति और वेदना है। कभी कभी उल्लास के स्वर फूट पडते है, तो आदमी स्तम्भित हो जाता है और उसकी अनुभूतिया को आघात लगता है। मानवी क्रियाशीलता का तीव कोलाहल है। बीच बीच मे 'क्यो क्यो ?' की दर्दभरी कराहे उठती है। जवाबो और समाधानो की तलाश हो रही है।

हम ८५ हजार नौसैनिक बाल्टिक बेडे के थे और ४० हजार काले सागर के बेड़े के। हम भी उत्तर ढूँढ रहे थे। देखिए ये हमारे दो साथी है। इनकी बात सुनिए।]

प्रथम वक्ता (श्रोताओ की ओर टकटकी लगाकर देखते हुए) ये कौन लोग हैं ?

दूसरा वक्ता श्रोता ! हमारे वशज। यह वही भविष्य है जिसके लिए जहाज पर हम सदा तडपा करते थे—याद है ?

प्रथम वक्ता हूँ । हाड मास के रूप मे भविष्य ! एक सहस्र अवश्य होगे। किस तरह हम घूर रहे हैं। ऐसा लगता है जैसे पहले कभी किसी नाविक को देखा ही नही।

दूसरा वक्ता और जैसे उनके मुँह सीये हुए है। एक शब्द भी नही कोई कहता। यहा वीरतापूर्ण कार्यों और वीरो को देखने वे आय हैं।

प्रथम वक्ता तब तो यही उचित होगा कि स्वय एक दूसरे को वे देखें।

दूसरा वक्ता कितने विनम्र हैं, किस प्रकार चुप है ! उनमे से उठकर क्या कोई कुछ बोल नही सकता ? (श्रोताओं मे से किसी को सम्बोधित करते हुए) हे, आप ! इस प्रकार खिन्न क्यो हैं

आप ? यह थियेटर है, भरती का कोई दफ्तर नही। भरती के दफ्तर और थियेटर के अलग-अलग काम होते हैं—यह तो कदाचित आपको भी मालूम होगा ? नही ? अच्छी बात है। फिर चलिए, हम कार्य शुरू करें (जैसे कोई कविता सुना रहा हो) हमारे वशजो, आज आप लोग अपना काम-काज रोक दो। नाविका के हमारे रेजीमेन्ट को, जो अत तक अपने मार्ग पर अडिग डटा रहा था, आपसे कुछ निवेदन करना है।

[धीरे धीरे, किन्तु भारी झनझनाहट के साथ विशाल क्लिबन्दियो के दृश्य सामने आने लगते है। निरभ्र आकाश मे आग्नेय लाली फैली है। उसकी चकाचौध उत्तरी लोगो की आँखो के लिए असह्य है। सम्पूर्ण पृथ्वी सूय के प्रकाश से दमक रही है। नाविको की टोलियाँ एक प्राचीन मार्ग पर मार्च करती चली जा रही है। नाविको की श्वेत वर्दियो की चमचमाहट और भी बढ जाती है। मार्च करते हुए व मच की रोशनियो के पास आ जाते हैं। वहाँ एक बडी गायक मडली के समान वे श्रोताओ के सामने आ खडे हुए हैं।]

दूसरा वक्ता (गायक मडली का नेता) इनम से प्रत्यक का एक परिवार था। प्रत्येक के एक स्त्री थी। स्त्रियाँ इन मर्दों से प्रेम करती थी। इनम से अनेक के बच्चे थे। उनके बच्चे इस भवन म यहाँ भी उपस्थित हैं। उनमे से प्रत्येक के इर्द-गिर्द मायावी सी कोई वस्तु मडराती रहती थी। उसे हम अगली पीढी कहते थे। १५ वर्ष पूर्व वह अस्पष्ट और अनिश्चित-सी थी। पर अब, यहाँ, वह स्पष्ट और साकार उपस्थित है। अभिनन्दन ! अगली पीढी के लोगो, तुम्हारा अभिनन्दन ! हमारे साथी नही चाहते कि तुम इनके लिए शोक मनाओ। गृह-युद्ध के दिनो मे अनेक सेनाएँ नष्ट हो गयी थी, किन्तु उसके कारण तुम्हारी धमनियों के लहू का

प्रवाह तो नही रुक पाया था। जीवन कभी नही मरता। अपने प्रियजनो की समाधियो पर भी लोग हँस लेते हैं, खा लेते है। और यह अच्छी बात है। अपनी अन्तिम सास तक नाविक यही कहते थे, "ठुड्डियाँ ऊँची रखो ! नजर ऊपर उठाओ ! हँसते-हँसते बोलो, 'इन्कलाब' !" जैसा कि मैंने कहा था, हमारे वारिसो ! ये बातें नाविको की हमारी रेजीमेन्ट तुमसे कर रही है। हमारे साथी तुमसे यह नही कहते कि उनकी स्मृति मे तुम शोक मनाओ, शोक-भोज करो। खामोशी से बैठकर बस यह समझने का प्रयास करो कि इस प्रकार लड़ने और मर जाने का उनके लिए अर्थ क्या था। हाँ, तो, उसका प्रारम्भ इस प्रकार हुआ था।

[प्रकाश मद्धिम पड़ जाता है। सायकाल के उष्ण वातावरण मे लम्बी-लम्बी परछाइयाँ दिखलाई देने लगती है। गहरा सन्नाटा है। इस सन्नाटे मे जैसे कोई असह्य चाह, कोई प्रबल उत्कण्ठा भरी हुई है। इस चाह और उत्कण्ठा की अभिव्यक्ति केवल सगीत ही कर सकती है। एक के बाद एक नाविक अपने रेजीमेन्ट की कहानी बताने लगता है। आरम्भ करता है कम-उम्र, फिनलैण्ड का वासी, वाइनोनिन।]

वाइनोनिन : चारो ओर अन्धकार है। एक भी प्राणी ऐसा नही कही दिखलाई देता जो एक एकाकी नाविक से दो शब्द भी सान्त्वना के कह सके।

[उसकी निराशा, उसका स्वर, उसकी आँखें—जिनसे बिना किसी स्पष्ट कारण के आँसू बहते रहे हैं—हृदय के टुकडे-टुकड़े कर देती हैं।]

ध्वनि : सावधान ! ठीक ! एडियाँ साथ-साथ, अगूठे अलग-अलग ! बन्दूकें कन्धे पर !

[नन्हे फिनलैण्डवासी को पृथ्वी पर ले आया जाता है।]

वाइनोनिन : यह कौन बदमाश है? पुराने जमाने का कोई मक्कार मालूम होता है। (उठकर उस दिशा में क्रोधपूर्वक घूरने लगता है जिधर से ध्वनि आ रही है) चुप रहो! तीन सौ साल तक तुम्हारी बातें सुनते-सुनते हमारा जी पक गया!

ध्वनि : घूमकर खड़े हो!

वाइनोनिन : मैंने कहा न, चुप रहो! बहुत हो गया .

[उसके बगल में खड़ा चेचक के दागवाला नाविक उसे शान्त करने की चेष्टा करता है।]

चेचक दागवाला नाविक : उसकी तरफ ध्यान मत दो। उससे परेशान न हो। वह तो एलेक्सी है। अपनी चिन्ताओं को दूर करने के लिए अकेला कवायद कर रहा है।

ध्वनि : आगे बढो!

वाइनोनिन : ओफ! जैसे इसके शोर के बिना परेशानी कम थी!

[उसी समय अलेक्सी टहलता हुआ अन्दर आ जाता है। वह बाल्टिक बेड़े का नाविक है।]

अलेक्सी : आह, वाइनोनिन, तुम हो! उदास हो रहे हो? लो मैं तुम्हें ढाढस बधाने आ गया। तुम्हारे कन्धे का पलास्टर अभी लगा है?

[दोनों के बीच बातचीत होने लगती है। बातों के दौरान वाइनोनिन अपने आठ इंची पक्के फिनी चाकू से मेज को कुरेदता-तराशता रहता है।]

वाइनोनिन : बिलकुल अनुचित है।

अलेक्सी : क्या अनुचित है ?

वाइनोनिन : अपने साथियों का उपहास करना।

अलेक्सी : उसमें क्या अनुचित है ? और, वास्तव मे, उचित है क्या ? तुमने शायद सच्चाई का पता लगा लिया है ?

वाइनोनिन : ओहो ! तुम तो भारी दार्शनिक बन गये हो।

अलेक्सी : नही, मैं सचमुच जानना चाहता हूँ। उचित क्या है ? (कटुता से) सही क्या है ? पहले मेरे मस्तिष्क में सब कुछ साफ था। सब नियम-कानून रटे हुए थे। अपने देश की सेवा करना, अपने मा-बाप की इज्जत करना, अपनी प्रेयसी को प्यार करना, नियत समय पर प्रार्थना करना—यह सब सही है। दिन के प्रकाश की तरह स्पष्ट था। और हर वस्तु स्थिर और शान्त थी और मैं प्रथम श्रेणी का एक नाविक था, और वह भी सही था। किन्तु अब ? अब क्या सही है ?

चेचक दागवाला नाविक : तुम्हारे पेट में दर्द तो नही हो रहा ?

अलेक्सी : मैं सत्य की तलाश कर रहा हूँ।

चेचक दागवाला : जैसे कि अकेले तुम्ही उसकी तलाश कर रहे हो !

अलेक्सी : मैं यंत्रणा सहता हूँ, चैन नही ले पाता, सोचता रहता हूँ, फिर पी लेता हूँ और भूलने की चेष्टा करता हूँ, किन्तु रात आते ही फिर मैं उन्ही दुश्चिन्ताओं में उलझ जाता हूँ। जीवन क्या है ? बोलो, तुम बताओ : आजकल क्या उचित है ?

वाइनोनिन : उचित वह है जिसमें सबको उनके अधिकार प्राप्त होते हैं। समाजवाद.........

अलेक्सी : क्या कहा, सबको, हर एक को ?

वाइनोनिन : नही, एकदम नहीं। कुछ समय के अन्दर। कुछ वर्षों में।

तब हर चीज सही हो जायगी। इसी को लेकर तो आज लोग आन्दोलित हैं।

अलेक्सी : हो जायगा। "वह दिन आयेगा"—इजील के वादे की तरह। जीवन मे एक बार सुनना चाहता हूँ कि हो गया, होगा होगा सुनते सुनते थक गया हूं। समझ रहे हो ? लोग हमेशा भविष्य की बात करते हैं। अच्छी बात है, मान लो कि भविष्य मे सबकुछ सुन्दर होगा। पर उनका क्या होगा जो मर जाते है ?

वाइनोनिन . उन्हे सम्मान और गौरव प्राप्त होगा।

अलेक्सी : सान्त्वना के लिए शुक्रिया।

वाइनोनिन इसमे व्यग की कोई चीज नही है और तुम मूर्ख हो। जो मारे जाते हैं मारे जाते है। किन्तु अब वे इन्सानो की तरह मरते है। पहले कीडो-मकोडो की तरह, गाय ढोरो की तरह टके टके पर वे मरते थे।

अलेक्सी अब समझा। तो भविष्य मे सबकुछ बढिया होने वाला है।

वाइनोनिन : हाँ ! (वह किसी हद तक शान्त हो गया है, फिर भी उसके स्वर मे अब भी रोष और तिरस्कार की ध्वनि मौजूद है।)

अलेक्सी समझा। तो भविष्य मे किसी भी चीज के लिए सघर्ष करने की आवश्यकता नही रहेगी, यही न ? मानव-जाति निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गई। यही उसका अन्तिम पडाव है। सब लोग उतर आओ। भविष्य कहलाने वाला स्टेशन आ गया ! वास्तविक ? ठोस ? आप अपनी अँगुलियों से उसका स्पर्श कर सकते हैं।

चेचक दागवाला : यदि हम नही, तो दूसरे अवश्य वहाँ पहुँच जायँगे।

अलेक्सी : बकवास है ! कोई कभी कही नही पहुँचता। न हम, न कोई और। चलते रहो, बस चलते रहो। यही यह दुनिया है। इसमे रुकने की जगह नही। अन्तिम लक्ष्य तक न आज तक कभी कोई पहुँचा है, और न आगे पहुँचेगा। यह एक महान खोज है जिसे,

अच्छी तरह जान लो, तुम्हारे वफादार, प्रथम श्रेणी के नाविक अलेक्सी ने किया है। इसे किताब में लिख कर रख दो। (बाहर चला जाता है)

चेचक दागवाला : इससे भी कोई क्या बहस कर सकता है !

वाइनोनिन : किसी दिन ,कोई न कोई उसे ठीक करेगा।

चेचक दागवाला : कहाँ का रहने वाला है ?

वाइनोनिन : प्रशान्त महासागर तट का। अमरीका हो आया है। बहुत घूमा है।

चेचक दागवाला : वह जीवन के बारे में सोचता रहता है।

वाइनोनिन : (कड़ाई से) अराजकतावादी है।

[छोटा-सा फिनलैण्डवासी शान्त और गतिहीन नहीं बैठा है। गोधूलि की वेला में नाविक थके-थके इधर-उधर आ-जा रहे है। कोई ''कोयला झोंकने वाले'' का दर्द भरा गीत गाने लगता है। एक कोयला झोंकने वाला दूसरे से कहता है; ''अब मुझ में और अधिक काम करने की शक्ति नहीं रह गयी। मेरी भट्ठी में अब कोयला पहले की तरह नहीं जलता। बॉयलर्स भाप चाहते हैं।'' अलेक्सी जोश से दौड़ता आता है। उसे देखकर सब ठिठक जाते है।]

अलेक्सी (अपने क्रोध को दबाते हुए) : ए, नाविको ! अराजकतावादियो ! लो अब मुसीबत आ गयी।

वाइनोनिन : क्यों ? क्या हुआ ?

लम्बा नाविक : कैसी मुसीबत ?

चेचक दागवाला नाविक : खतरे का सन्देश आ गया है।

[लोगो मे उत्तेजना फैल जाती है। वे सब अलक्सी को घेरकर पूछते हैं 'क्या बात है?', "क्या हुआ?", 'बोलो!' 'हम भी तो बतलाओ!']

अलेक्सी (उनकी तरफ पीठ करके) हमारे लिए भी एक कमिसार आ गया।

लम्बा नाविक बहुत जरूरी था।

वाइनोनिन (अलेक्सी से) वह तुम्हे बतलायगा जीवन क्या है।

[जो नाविक प्रतीक्षा करते हुए इन बातो को सुन रहे थे उनमे से एक अब क्रोध से चिल्ला उठता है 'तो उन्हे अब हमारे ऊपर विश्वास नही रह गया?' नाविक जिन लोगो को अपराधी समझते हैं उनकी ओर धमकी भरी नजर से देखते हैं। अचानक उत्तेजना का कोलाहल थमने लगता है उनके अन्दर एक परिवतन आ जाता है, वे शान्त हो जाते हैं वे पीछे की ओर हट कर उस लाल चेहरे वाले चौडे कन्धे के अक्खड से प्राणी की ओर देखने लगते हैं जो उनकी ओर एक एक कदम मन्थर गति से बढता आ रहा है। उसके सामने वे सब विनीत बन जाते हैं। यह उनका प्रधान है। उसकी शान्त आवाज उस खामोशी मे प्रभावशाली ढग से गूँज उठती है।]

प्रधान इतना शोर क्यो हो रहा है! ग्रफ? बोलते क्या नही?

अलेक्सी हमारे लिए एक कमिसार भेज दिया गया है।

प्रधान इसके लिए इतना हगामा करने की क्या जरूरत? उसे किस पार्टी ने भेजा है?

अलेक्सी शासक पार्टी ने। बोल्शेविको ने।

प्रधान वह सीख जायगा। हम उसे अच्छी तरह सिखला देंगे।

[क्रोध से तने हुए ख़ामोश नाविकों के इस समूह में अचानक एक स्त्री न जाने कहाँ से आ प्रकट होती है। इस स्थान पर उसकी उपस्थिति बड़ी विचित्र और अविश्वसनीय लगती है। वह सारे नियमों के विरुद्ध है। ये अपरिष्कृत, उजड्ड लोग जो कुछ कहेंगे उससे उसे ऐसा धक्का लगेगा जिससे वह सम्भल नहीं पायेगी। वे आँखें फाड़-फाड़कर उसकी ओर देखते हैं, किन्तु बोलते कुछ नहीं।]

अलेक्सी : मैं कमिसार को सलाह दूंगा कि—

प्रधान : मैं तुम्हें सलाह दूँगा कि मुझे सलाह देने की कोशिश न करो। (थोड़ा रुक कर) तुम बहुत शोर करते हो।

[वह स्त्री तुरन्त समझ जाती है कि प्रधान कौन है। वह सीधे उसके पास जाकर अपना परिचय-पत्र उसके हाथ में रख देती है। प्रधान पत्र को पढ़ता है, ऊपर नजर उठाता है, फिर पढ़ने लगता है।]

प्रधान : तो आपको हमारा 'कमिसार' बनाकर भेजा गया है?

[स्त्री जिस प्रकार सिर हिलाकर स्वीकृति व्यक्त करती है उससे स्पष्ट हो जाता है कि यही बात है और इसमें अब शक या बहस की जगह नहीं है। इस बीच एक नाविक इस अचानक धक्के से कुछ-कुछ संभलने लगता है। उसके मुँह से एक आश्चर्य भरा "अ-हा!" निकल जाता है। प्रधान धीरे से उसकी ओर घूम कर उसके मुंह पर अपना हाथ रख देता है।]

प्रधान : तो आप सोशल-डेमोक्रेट हैं? बोल्शेविक?

स्त्री : जी।

प्रधान : बहुत दिनों से?

स्त्री : १९१६ से।

प्रधान : अच्छी बात है। ठीक है। आप काम शुरू कर दें। (नाविकों से जो उसके समीप आते जा रहे हैं) तुम लोग दूर रहो! धीरे-धीरे वे लोग वहाँ से हट जाते हैं, मुड-मुड कर वे स्त्री की ओर देखते जाते हैं) आपका सामान शायद किसी की मदद ?

चेचक दागवाला नाविक : अब कुली नहीं रह गये।

स्त्री : शुक्रिया, मैं खुद उठा ले जाऊँगी।

[वह अकेली रह जाती है। चारों ओर निस्तब्धता और कौतूहल का वातावरण है। एक ओर से एक आदमी आता है। उसे देख कर स्पष्ट हो जाता है कि जारशाही नौसेना का वह कोई भूत-पूर्व अफसर है। वह भौचक है। उसकी समझ में नहीं आ रहा कि हो क्या गया है। वह स्त्री की सहायता के लिए आगे बढ़ता है।]

अफसर : मैं पहुँचा देता हूँ। (वह आगे बढ़कर उसका छोटा-सा बेग उठा लेता है। वह यह जानने के लिए बेचैन है कि वह कौन है, कहाँ से आयी है, और यहाँ कैसे पहुँच गयी। अपनी आवाज नीची करते हुए) क्या आप इस पुराने युद्धपोत के किसी अफसर से मिलने आयी हैं ?

स्त्री : मैं

अफसर : (झुककर, सम्मानपूर्वक) लेफ्टीनेन्ट बैरिंग। (आहिस्ता से, जैसे कोई गूढ़ बात कहने जा रहा हो। वह समझता है कि जो बात वह कहने जा रहा है वह सर्वथा अस्वाभाविक है) मुझे इस जहाज का कमाण्डर नियुक्त किया गया है। (अपनी टोपी उतार कर उसके हाथ को एक प्रकार से जबर्दस्ती ही पकड़ कर वह अपने ओठों से लगाता है।)

स्त्री : मुझे 'कमिसार' बनाकर आपके पास भेजा गया है। अच्छा हो यदि आप इन पुरानी आदतों को छोड़ दें।

[बात सरल होते हुए भी उसमें आधिकारिकता का स्वर है, किन्तु अफ़सर पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उसे न तो उसकी बात में कोई आश्चर्य होता है न इस परिस्थिति से परेशानी। वह शान्तिपूर्वक सीधा खड़ा हो जाता है, टोपी सिर पर रख लेता है और उसे सैलूट करता हुआ कहता है :]

अफ़सर : (अब उसकी वाणी में मित्रता का वह स्वर नहीं है जो शुरू-शुरू में उसने प्रदर्शित किया था): कमाण्डर बैरिंग काम शुरू करने के लिए हाज़िर है।

[जहाज़ के अन्दर कहीं से शोर-गुल भरी आवाजें सुन कर वे दोनों उसी दिशा में देखने लगते हैं। उसी समय वह छोटा फ़िनलैण्डवासी अपने पक्के चाकू को खोले हुए मंच पर आ जाता है। दूसरे नाविक उसे पकड़ने के लिए बढ़ रहे है। किन्तु अभी तक श्रोतागण उन्हें देख नहीं पाये। दबी जबान से फिनलैण्ड-वासी उनसे कहता है :]

वाइनोनिन : ख़बरदार! आगे मत बढ़ना! *(स्त्री की ओर इशारा करते हुए)* तुम इस पर भी क़ब्ज़ा कर लेना चाहती हो? ...कुत्ते कहीं के।

[अलेक्सी और उसके साथी धमकाते हुए उसकी ओर बढते है। बिना कुछ कहे हुए, केवल अपनी आँखों और ओंठों से वे उसे डरवाने की कोशिश करते हैं। वह खुला चाकू हाथ में लेकर स्त्री की रक्षा के लिए उसके सामने आ जाता है। वे लगभग आमने-सामने खड़े हो जाते है।]

मैं तुम्हे इन्हे हाथ नही लगाने दूँगा। (फिनलैण्डवासी उसकी मदद के लिए तैयार होकर डट जाता है। स्त्री स्वयम् भी सतर्क है)।

अफसर क्या यह कोई राजनीतिक मामला है? शायद मेरी उपस्थिति की यहाँ जरूरत नही?

[अलेक्सी अफसर की तरफ रत्तीभर भी ध्यान नही देता। उसके लिए उसका कोई महत्व नही है।- वह आगे बढ़ कर स्त्री के सामने आ जाता है।]

अलेक्सी चलो, देवी जी, हम लोग शादी कर लें। तुम्हे इतना ताज्जुब क्यो हो रहा है? प्रेम बहुत बढ़िया चीज़ है। हम लोग मानवी नस्ल बढ़ाने मे मदद देंगे और साथ ही कुछ मजा भी लूट लेंगे?

अफसर यह सब क्या हो रहा है। (नाविक से) सुनो, ए!

कमिसार कामरेड कमाण्डर आप बीच म न पड़ें। मैं खुद इसमे निबट लूगी। इस साथी की शादी की समस्या मे दिलचस्पी है।

[अफसर की समझ मे कुछ नही आता कि यह हो क्या रहा है। उसकी बात मान कर वह चुपचाप वहाँ से चला जाता है।]

अलेक्सी चलो, सदर दफ्तर से आयी हुई कामरेड डिप्टी, चलो, हम लोग थोड़ी प्रेम मुहब्बत कर। जल्दी करो, नही तो जो लोग मेरे पीछे क्यू लगाये खड़े है वे उतावले होने लगेंगे। तुम तो जानती हो कि हम लोगो की सख्या काफी है।

[कमिसार उसके शब्दो की तरफ ध्यान नहीं देती। उसकी दिलचस्पी जो कुछ वह कह रहा है उसम न हो कर, जो कुछ हो रहा है उसम है। छिपे हुए अराजकतावादी चारो तरफ से बाहर

आ जाते है। उनकी प्रत्येक गति पर कमिसार की नजर है। वह उनकी चालो से पूर्णतया सतर्क है।]

दूसरा नाविक (कमिसार से). "मकरन्द भरे मत्त पवन के नीचे सारी रात हम आलिगन करेंगे " (दूसरे लोगो के मुंह से दबी-सी हँसी की आवाज आती है) चलो, देवी जी, मर्दो को जीवन-दान दो।

तीसरा नाविक : यह क्या बकवास है जी ! मैं तो समझ रहा था तुम लोग मजे कर रहे हो (हाथ मे एक चादर लिए हुए आगे आ जाता है)। देर किसलिए हो रही है ? लेट जाओ !

कमिसार . साथियो

अलेक्सी (नकल करते हुए) . बिना उबला पानी मत पिया करो।

कमिसार : साथियो

दूसरा नाविक (धमकाते हुए) : तुमने समझ क्या रखा था ? तुम यहाँ किनके पास आयी हो ?

[धीरे-धीरे और अचानक एक विशालकाय आदमी फलके से ऊपर आ जाता है। उसके सारे अर्ध-नग्न शरीर पर गोदने गुदे हैं।]

कमिसार : यह क्या मजाक है ? आप लोग मेरे धीरज की परीक्षा ले रहे हैं।

गुदनेवाला नाविक : हम मजाक नही करते (वह कमिसार के ऊपर कूद पडता है)।

कमिसार : और न हम करते है।

[कमिसार के रिवाल्वर से एक गोली निकल कर पार्टी को हल्के-फुल्के ढग से लेने वाले उस जानवर के पेट मे घुस जाती है।

भौचक नाविक एकदम पीछे हट जाते हैं। वहाँ से चुपचाप वे ऐसे घूर रहे हैं जैसे उन्हे साँप सूँघ गया हो !]

कमिसार के शरीर को और कौन हाथ लगाना चाहता है ? तुम ? या शायद तुम ? या तुम ? (तेजी से सोचते हुए कि आगे क्या करना है, वह बन्दूक हाथ मे लिए हुए नाविको की भीड की तरफ बढती है जिससे कि वे उस पर जवाबी हमला न कर सकें) और कोई नही ? क्यो, क्या हुआ ? (अपने ज़ोर से धक धक करते दिल को शान्त करने के लिए थोडी देर रुक कर, वह अत्यन्त आत्म नियन्त्रण के साथ कहती है) तब सुनो मैं एक पूर्णतया सामान्य और स्वस्थ स्त्री हूँ, यह जान लो। मुझे जब पुरुष की आवश्यकता होगी तो मैं खुद चुन लूँगी। घोडो की किसी घुडसाल की जरूरत मुझे नही है।

चेचक दागवाला नाविक (कुछ कुछ खुशामद के लहजे मे) हाँ, यह तो हमे साफ दिखाई दे रहा है।

[वाइनोनिन तेज़ी से दौडता हुआ आता है। उसके साथ लम्बा नाविक, पुराना नाविक और दो और लोग हैं।]

वाइनोनिन हम आ गये। डरना मत, कमिसार ! ये आपका कुछ नही बिगाड सकेंगे !

कमिसार : अब सब ठीक है।

[उसी वक्त लापरवाही से टहलता हुआ प्रधान आ जाता है। सारे जहाजी उसकी ओर देखने लगते है। पूर्ण निस्तब्धता छा जाती है। लोग आँखो ही आँखो कुछ पूछते रहते हैं। मृत-शरीर सामने पडा है। बिना कोई टीका-टिप्पणी किये प्रधान उसे एक लात लगाता है। शरीर लुढककर जहाज के विपट द्वार से गिर

जाता है। उसके गिरने से सीढियो पर धप धप की आवाज होती है। प्रधान कमिसार की ओर देखता है।]

प्रधान माफ कीजिएगा। वह एकदम गुण्डा था। उससे उम्मीद हा और क्या की जा सकती थी।

अलेक्सी आओ चलें।

कमिसार कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य और हमदर्द रुक जायें।

ग्रफ रुक नही सकते। हम खुद अपनी मीटिंग में [illegible] हैं। (बिना कुछ और कहे वह उन लोगो को चलने के लिए ढकेलता है जो कमिसार के शब्द सुनकर रुक गये हैं। वह लम्बे नाविक को आगे की ओर ढकेलता है। लम्बे नाविक के चेहरे पर घृणा और उपहास के भाव हैं) ओ हो तो एक हमदर्द हमे मिला क्या जी ?

लम्बा नाविक सिर्फ एक नही।

[ग्रफ और उसका सहायक जहाजियो की भीड को वहाँ से भगा देते हैं। सिर्फ वह छोटा सा (फिनलैण्ड वासी) फिन्नी उनकी अवहेलना करके दृढता से जमा रहता है। विशाल खाली डेक पर वह अकेला रह जाता है।]

कमिसार तुम्हे अकेलापन खल रहा है न ?

वाइनोनिन कमिसार आप भी तो अकेली है नही ?

कमिसार पार्टी के साथ रहना क्या अकेले रहना होता है ?

छोटे नौसैनिक अफसर आते हैं।

पहला छोटा अफ़सर अब मैं तुममे से हर एक से पूछता हूँ उन दिनो लाल सेना और नौसेना मे कितने कम्युनिस्ट थे ? याद करने की

कोशिश करो। तुम लोगो ने तो उस वक्त लडाई मे हिस्सा लिया था। (थोडी देर की खामोशी के बाद) २ लाख ८० हजार। पार्टी के कुल सदस्यो का आधा भाग। पार्टी के आधे सदस्य मोर्चे पर गोलियो का सामना कर रहे थे। जो पीछे रह गये थे वे शहरो मे, स्टेपी मे, और जगलो मे, गोलियो का मुकाबला कर रहे थे, क्योकि वर्गयुद्ध मे "पांतो के पीछे" जैसी कोई चीज नही होती। घायल कम्युनिस्टो की सूची मे व्लादीमीर लेनिन का नाम था, और मृतको की सूची मे था—वोलोदास्की और उरित्स्की, २६ कमिसारो तथा स्थानीय पार्टी सगठनो के पूरे नेतृत्व का नाम। किन्तु इस तरह के आघातो से पार्टी क्या कभी भी डगमगाई थी?

दूसरा छोटा अफसर : इस तरह की पार्टी के विकास को कौन रोक सकता है! यह एक वीर, शस्त्रो से लैस, बहुशास्त्र कुशल और सर्वतोमुखी ऐसी पार्टी है जो सम्पूर्ण मजदूर वर्ग को लामबन्द कर सकती है। ऐसी पार्टी जिसने एक नये देश का निर्माण किया है। पार्टी एक ऐसा विशाल शिविर है जिसमे मानवजाति के समस्त श्रेष्ठतम तत्व मौजूद है। यह एक ऐसी पार्टी है जिसने पुरानी दुनिया की ताक्तो के खिलाफ रक्त-रजित और रक्त-हीन, हिंसापूर्ण और अहिंसक, हर प्रकार के सघर्ष मे ससार के सर्वहारा वर्ग को एकजुट किया है। (थोडा रुक कर) यदि कोई ऐसे लोग है जो इस तरह की पार्टी के विरुद्ध, हमारे इस साहसी देश के विरुद्ध हथियार उठाते हैं तो उनका सफाया कर दिया जायगा।

[मच खाली है। प्रधान प्रवेश करता है। उसके साथ ग्रफ और अलेक्सी हैं।]

दारुण नीरवता छाई है। सब सतर्क प्रतीत होते हैं।

अलेक्सी : उसने अपने इर्द-गिर्द कुछ समर्थक इकट्ठे कर लिए मालूम होते है।

प्रफ : हम उन सबका सफाया कर देंगे। चुप, चुप, चुप, किनी आ रहा है (वहां से जाते हुए फिनलंड वासी से) अबे, ओ पार्टी मेम्बर के बच्चे, इधर तो आ।

याइनोनिन : फर्माइये। आपकी मीठी जबान मुझे बहुत प्यारी लगती है। "गाओ प्रिय डरना कैसा

प्रफ (क्रोध को पीते हुए) : तुमसे क्या कह रही थी वह ?

याइनोनिन (अवज्ञापूर्ण ढंग से) : बहुत सी बातें। (मुस्कराता हुआ मन्द गति से वहां से चला जाता है। थोड़ी देर में उसके पदों की आहट भी समाप्त हो जाती है।)

अलेक्सी : छोकरी पागल है।

प्रफ : उसकी बोटी-बोटी काट के कुत्तों को खिला दो !

प्रधान : अबे गधे, जबान संभाल ! (थोड़ा रुककर) उसे जो भी हाथ लगाने की कोशिश करेगा उसका यह हाल होगा। (हाथ से अपना गला काटने का अभिनय करता है।) कुत्तों को खिला दो ? उसकी जगह फिर वे किसी और को भेज देंगे। क्या इतना समझने की भी बुद्धि तुम्हारे अन्दर नहीं है ? (सोच-विचार में पड़ जाता है) उसे सब चाहने लगे हैं। इस औरत से हमें बहुत मदद मिल सकती है।

अलेक्सी : यह राय तुम्हारी कब से बनी ?

प्रधान : (उत्तर देने की परवाह किये बिना) : वह काम में बहुत होशियार है। उसकी आँखों से ही तुम देख सकते हो कि वह समझदार है। उसमें वह चीज खूब है जिसकी अराजकतावादियों को सख्त जरूरत है इच्छा-शक्ति।

अलेक्सी : मैं उसे रास्ते पर लाने की कोशिश करूंगा।

प्रक : (व्यंग से हँसता हुआ) : बिलकुल ठीक ! जाओ और क्रोपाटकिन का कोई पैम्फलेट उसे पढ़ाने की कोशिश करो।

कमिसार (आकर और वस्तुस्थिति को समझते हुए) : साथियो, अपनी मीटिंग में आपने मुझे क्यों नहीं बुलाया ? अब चूंकि सब यहाँ इकट्ठे हैं, नये कमाण्डर को भी यहीं बुलवा लीजिए। कौन बुलबुलाने जा रहा है ?

खामोशी

(विपट द्वार में किसी को देखकर पूछती है।) क्या नीचे कोई है ? (सफेद बालों का एक भारी-सा आदमी विपट द्वार से ऊपर आता है) यहाँ आओ। कामरेड, आप कौन हैं ?

नौ अधिकारी (बेमन से) नौ-अधिकारी।

कमिसार नौ-अधिकारी ? लेकिन यह न तो नौ-अधिकारी की आवाज़ है और न उसका तरीका। एक बार फिर—आप कौन हैं ?

नौ अधिकारी (उसकी आवाज़ में अधिकार का स्वर पहचानते हुए) कामरेड कमिसार, मैं सम्राट पावेल प्रथम युद्धपोत का एक भूतपूर्व नौ अधिकारी हूँ।

अलेक्सी आश्चर्य से कुछ बड़बड़ाने लगता है।

कमिसार : अब पता चला कि आप नौअधिकारी हैं। कृपया नये कमाण्डर को बुला लाइये।

नौ अधिकारी : जी-जी, हुजूर। (नजर बचाकर प्रधान की तरफ देखता है)

कमिसार कहिए ?

[प्रधान सिर हिलाता है, जैसे कि कह रहा हो, "मेरी तरफ़ से तुम्हें पूरी इजाज़त है।"]

नौआधिकारी मैं अभी बुला लाता हूँ। (जाता है)
प्रक (कमिसार से) आप से हमें बहुत मदद मिलेगी।
कमिसार मेरा भी यही खयाल है।
प्रक स्त्री लिंग का हमारे ऊपर बहुत नैतिक प्रभाव पड़ रहा है।
कमिसार मैं भी यही देख रही हूँ।

[कमाण्डर प्रवेश करता है। वह कुछ सैल्यूट जैसा करता मालूम पड़ता है।]

साथियो, देखिए, यही हमारे कमाण्डर हैं।

[लोग एक दूसरे की ओर शत्रुतापूर्ण निगाहों से देखते हैं। मन ही मन वे कुछ बुदबुदाते हैं, फिर अन्यमनस्क भाव से हाथ मिलाते हैं।]

अब हम आज के काम को ले लें। (कमाण्डर से) हमें जो आर्डर मिला है उसके बारे में इन्हें बतलाइये।

कमाण्डर (जेब से एक छोटी-सी पुर्जी निकालकर ज़ोर से उसे पढ़ते हुए) : आदेश "तथाकथित आज़ाद अराजकतावादी क्रान्तिकारी टुकड़ी से सम्बन्धित नाविकगणों के जत्थे को आज से खत्म समझा जायगा। उसकी जगह तीन बटालियनों की एक रेजीमेन्ट कायम की जायगी। इस रेजीमेन्ट का नाम होगा "प्रथम नाविक रेजीमेन्ट।" (पुर्जी को मोड़कर रख लेता है) इस रेजीमेन्ट की कमान मेरे हाथ में होगी।

अलेक्सी (आवेग से आगे की ओर बढ़कर) आपको पता है कि यूराल के क्षेत्र में सम्राट निकोलस द्वितीय का क्या हाल हुआ था?

कमिसार वक्त मिलते ही उनके बारे में विस्तार से मैं आपको बताऊँगी। (कमाण्डर से। अलेक्सी की ओर इशारा करते हुए।) इस साथी की जिज्ञासु प्रवृत्ति है। आपको याद होगा पिछली बार शादी की समस्या में इन्हें दिलचस्पी थी। (अलेक्सी से) उस वक्त आपको जो जवाब मिला था उससे आपको सन्तोष हो गया था? (कोई उत्तर नहीं मिलता) फिलहाल इतना ही काफी होगा। टुकड़ी के अन्दर शक्ति और ऊर्जा की अत्यधिक प्रबलता दिखलाई देती है—अब से हम इसे रेजीमेन्ट कहेंगे। (अलेक्सी से) आप मुझसे सहमत हैं न? ऐसे समय में जबकि हमारा देश और हमारी क्रांति खतरे में है यौन सम्बन्धी समस्याओं पर बहस करना समय बर्बाद करना होगा। (थोड़ी देर खामोशी) कल हम लोग हमला करने जा रहे हैं—यह इत्तिला उस आदेश के अलावा है जो अभी पढ़कर आपको सुनाया गया था। (प्रधान से) मुझे आशा है कि आपका अनुभव मोर्चे पर आपकी मदद करेगा। (कमाण्डर से) सारी तैयारियाँ शुरू कर दीजिए। अब आप सब जा सकते हैं।

कमाण्डर जो आज्ञा।

कमिसार डक सारन, आप भी जा सकते हैं।

नौअधिकारी (प्रधान की ओर देखते हुए) जो आज्ञा।

[खामोशी। इन लोगों के चले जाने के बाद प्रधान खड़ा हो जाता है और कमिसार के पास आ जाता है।]

प्रधान अब हम थोड़ी बात कर लें—आप और मैं?

कमिसार आइए, बैठिए।

[जो चार लोग रह गये थे वे मेज के इर्द गिर्द बैठ जाते हैं। सब चुप बैठे हैं। वातावरण में तनाव है।]

अलेक्सी : हम ने आपस मे बात की है। आपकी केन्द्रीय कमेटी ने कमिसार के लिए गलत व्यक्ति का चुनाव किया है। नौसेना के लिए आप ठीक नही है। सेना की बात छोड दीजिए। उसकी बात दूसरी होती है।

कमिसार : मै सेना मे काम कर चुकी हूँ।

[प्रधान ग्रफ और अलक्सी एक दूसरे की ओर देखते है।]

ग्रफ: तो यह बात है!

अलेक्सी . आपकी उम्र अभी बहुत कम है। जिस समय आपकी दाई गोद मे लेकर आपको खेलाती थी उस समय (प्रधान की ओर, घनिष्ठता तथा सम्मान से इगित करते हुए) ये सज्जन विद्रोह के लिए किसानो को उभाडने के जुर्म मे जल काट रहे थे!

[खामोशी, जिसमे चारों व्यक्ति इस कथन के प्रभाव को समझने की चेष्टा कर रहे हैं।]

बहुत कठिन है—कृपया मेरी बात का गलत मतलब न लगाइएगा, हमे गलत न समझिएगा। लेकिन इस चीज के फर्क को न देखना बहुत ही कठिन है आप (उसकी ओर इशारा करता है) और हम लोग! (अपनी और अपने साथियो की तरफ इशारा करता है, फिर उठकर सीधा तनकर खडा हो जाता है। वह ऊँचा कद्दावर आदमी है।) फर्क को देखिए—मेरा मतलब है आपके और हमारे बीच जो फर्क है उसे। हम लोग आवारा हैं, खानाबदोश—अच्छे, नाविको के अर्थ मे। हम लोग सारी दुनिया के चक्कर लगा आये है, जेलो से भाग चुके है, लडाइयो मे भाग ले चुके है, युद्ध बन्दी बनाये जा चुके हैं।

ग्रफ (कमिसार की बाँह छूते हुए) दो-दो बार फिरग रोग के शिकार हो चुके है!

कमिसार : इससे क्या हुआ ? काम तो उन्ही लोगो से लेना है जो हमारे पास हैं, न कि उनसे जो हमे अच्छे लग सकते हैं। लेकिन मोटे तौर से, हमारी रेजीमेन्ट मे जो लोग हैं वे अच्छे हैं—अच्छे योद्धा,—ऐसे लोग जिन्होने

अलेक्सी : जिन्होने चाटुकारी करना छोड दिया है, जो अब किसी को भी सलामी नही देंगे। (नकल करते हुए) "जी, कामरेड कमिसार।" "सब ठीक है, कामरेड कमिसार।" "माफ कीजिएगा, कामरेड कमिसार।' "हुर्रा, कामरेड कमिसार।" हो सकता है, आप यही सब चाहती हो ?

प्रफ : (घनिष्टता से कमिसार की बांह को फिर स्पर्श करता हुआ) : देवी जी, हमारी जिन्दगियां टेढी-मेढी और कुचली हुई है। जेलो और बारिको मे ये चकनाचूर हो चुकी है। हम गोलियो से छेद डाले गये है, हमारे पोर पोर मे शराब बस गई है, और अब हमे खाने के लिए आप भले आदमियो की दलिए की खुराक दे रही है! देवी जी, अब आप हमे क्या सिखाने की कोशिश कर रही हैं ? भगवान की पृथ्वी पर ऐसी कोई चीज नही है जिसकी हम अपने मन-मुताबिक रहने से अधिक ख्वाहिश करते हो। हम चाहते है कि इसी तरह हम जिन्दगी काट दें। फिर जब वक्त आये तो गोली हमारे सिर को पार कर जाय और हमारी आत्माओ को शान्ति मिले। (क्षण भर के लिए वह चुप हो जाता है) ठीक है, यहाँ—(अपने गले की हड्डी के नीचे रखता है) यहाँ एक छोटी सी जगह है जिसकी यह कामना है कि लोग कुछ अच्छी तरह रह सकें, उनके शरीरो और आत्माओ का कुछ उत्थान हो सके। लेकिन, इस वक्त, जबकि हमे तुरन्त मोर्चे की तरफ कूच कर देना चाहिए, यहां आकर हम सिखलाने-पढाने या डॉट-डपट करने की कोशिश से क्या फायदा होगा !

कमिसार : आप लोग मुझे कुछ सिखा सकें तो मैं तो उसे सीखने को खुशी-खुशी तैयार हो जाऊंगी।

प्रधान : यह बात बड़ी बहादुरी की लगती है। शायद एक छोटी सी चीज आप हमे समझा दें। अपना जीवन कुर्बान करने के लिए हम तैयार है या नही ? है। फिर क्या यह विचित्र बात नही कि आपकी वह पार्टी जिसके हाथ में सत्ता आ गयी है, हमारे सामने अब शर्तें रखती है—लक्ष्य के लिए जो लोग अपने जीवनो तक की बलि चढाने के लिए तैयार है उनके सामने आपकी पार्टी शर्तें रखती है ! इसे आप क्या कहेंगी ?

कमिसार : मैं इसे स्वाभाविक चीज मानती हूँ। हम जानते है कि हम कहाँ जा रहे है और कैसे वहाँ जाया जा सकता है। और यही वजह है जिससे हम शर्तों को स्वीकार कर लेते है। यदि लोग उन्हें न मानें तो हम उनसे जबर्दस्ती थोड़े ही मनवा सकते हैं।

अलेक्सी : ओह, आप तो पूरी स्कूल मास्टरनी है ! शायद आप हमें यह भी सिखायेंगी कि मरा कैसे जाय ?

कमिसार : हाँ। शायद—अगर जरूरत हुई तो।

प्रधान (बात का लहजा बदलते हुए) : हटाइए भी, इस बखेड़े को खत्म कीजिए। मेरे आदमियो ने जिस तरह आपकी आवभगत की है उससे नाराज मत होइयेगा। आपको देखकर वे सकते मे आ गये थे।

कमिसार : मुझे कोई शिकायत नही है। बीती ताहि बिसारिए ।

अलेक्सी (झटके से खड़ा होते हुए) : यहाँ सच कौन बोल रहा है ?—(अपने साथियो को सम्बोधित करते हुए) तुम लोग ? (कमिसार से) या आप ? या मैं ? सब फरेब है ! (प्रधान से) आप झूठ बोल रहे हैं और (कमिसार से) और यही आप कर रही है। इधर सुनिए। ज्यो ही आप आयी त्योंही इन मिस्टर ने (प्रधान

की ओर इंगित करते हुए) मुझे बुलाया और कहा "जाओ और उसके होश ठीक कर दो,' समझी ?

प्रधान (क्रोध को मुस्कराहट से छिपाते हुए) · इसकी बात का बुरा न मानिएगा। यह महज मजाक कर रहा है।

कमिसार यह तो स्पष्ट है।

अलेक्सी मजाक कर रहा हूँ ? मेरी इच्छा यह हो रही है कि कोई बड़ा सा चाकू मिल जाय तो मैं अपनी खोपड़ी को खोल कर दिमाग की अच्छी तरह सफाई कर लूँ। तुम लोग कूड़ा हो तलछट हो तुम्हारे बीच मुझे कौन भली चीज मिल सकती है ! (थोड़ी देर रुककर, कमिसार से) और तुम तुम भी किसी चालाक लोंडी से कम नहीं हो ! तुम्हें और तुम्हारी साजिशों को मैं खूब समझता हूँ। कैसे मजे से बैठी हुई हो—इतनी बुद्धिमान इतनी शान्त ! कहती हो मैं तुमसे सीखना चाहती हूँ।" जी तुम्हारी चालो से हम परिचित हैं। तुम भी उतना ही झूठ बोलती हो जितना कि ये लोग। चालबाज ! हम अपनी आँखो से देख चुके हैं कि नाविको को तुम कैसी गोली मारती हो ! धाँय ! और वह तड़पकर ठंडा हो गया।

कमिसार (प्रधान से) क्रोधी स्वभाव का नौजवान है। (अलेक्सी से) क्या आप अराजकतावादी पार्टी के सदस्य है ?

अलेक्सी मैं अपनी सहज बुद्धि की पार्टी का मम्बर हूँ। मेरी पार्टी कोई पार्टी नहीं है। (हमलावर ढंग से आगे की ओर बढ़ते हुए) आप अपने को समझती क्या है क्यों ? शीत प्रासाद पर जब हमने कब्जा किया था तब क्या हमसे किसी ने पूछा था कि हम किस पार्टी के सदस्य थे ?

प्रफ (अलेक्सी को धक्का देकर एक तरफ को हटाते हुए) देवी जी, सारी बात एक दूसरे की जान लेने की है। देखिए आप यहाँ यह

सोचकर आयी थी कि हम नाविक बेकार के भिखारी है जो अपने मुच्छो को फडफडाते घूमते है। और, वास्तव मे, इन चीजो का आजकल पहनता ही कौन है, सिर्फ जाहिल गवार। लेकिन यहाँ आने पर आपने देखा कि हम सब खूसट बूढे है जो जापानी लडाई म हिस्सा ले चुके है, सुशीमा मे लड चुके हैं

कमिसार यह तो और भी अच्छी बात है। (खडी होते हुए) मेरा खयाल है कि हम लोगो की, आपकी और मेरी अच्छी तरह निभ जायगी।

प्रधान यह आवश्यक है। हम एक दूसरे को समझ जायें, यह जरूरी है। (बड आदमी के ढग से अपना हाथ आगे बढाता है)

कमिसार हमारी जरूर पटेगी। शर्त सिर्फ एक है हर चीज ईमानदारी से और साफ साफ की जाय।

[उसी तनावपूर्ण वातावरण म वे हाथ मिलाते हैं। उनकी नजरें एक दूसरे के अन्दरूनी भावों को समझने की कोशिश करती है। उनकी भावनाएं जटिल है। अलक्सी ध्यान से देखता है। कमिसार बाहर चली जाती है और वे तीनो उसकी तरफ देखते रहते हैं। थोडी देर म उसके पैरो की आहट भी बन्द हो जाती है।]

ग्रफ लकिन, है यह बढिया चीज, है न ?

प्रधान (अलेक्सी स) जानते हो, जो आदमी किसी मूर्ख की तरह बहुत बोलता रहता है उसका हश्र क्या होता है ?

अलेक्सी और तुम जानते हो, उस आदमी का हश्र क्या होता है जो किसी गावदी की तरह धाखाधडी करता है ? तुमने उससे हाथ मिलाया था, नही ? कह रहे थे कि उसके साथ मिलकर काम करोगे ?

प्रधान (अर्थपूर्ण ढग से) चाल है, मेरे दोस्त। आज तुम्हे हो क्या गया है, अलेक्सी ? दोस्त, मेरे ऊपर भरोसा करो। मैं तुमसे अपने सगे भाई की तरह कहता हूँ। अपने विचारो के लिए तुम और मैं अन्त तक साथ-साथ लडते रहेगे। (अलेक्सी को छाती से लगाता है। चेहरा गम्भीर कर लेता है और उसका मुंह चूमता है)।

[अलेक्सी उसकी तरफ देखता रहता है। वह समझ नही पाता कि उसका विश्वास करे या न करे। फिर वह सिर हिलाता हुआ बाहर चला जाता है। प्रफ कुछ कदम उसके पीछे पीछे जाता है, फिर रुक जाता है और जब तक स्पष्ट नही हो जाता कि वह चला गया है तब तक उसके पैरो की आहट सुनता रहता है। फिर प्रधान कहता है]

इन दोनो मे से किसी का विश्वास न करना—न उसका, और न इसका। (मुंह बनाता है जैसे उल्टी होने को हो। फिर ओठ पोछ कर) छि छि ! मैंने उस मैले के ढेर को चूम लिया।

प्रफ मैं किस पर भरोसा करूँ ? (प्रधान अपने कधे उचकाता है) सिर्फ तुम पर ?

प्रधान मुझ पर ? नही ! हम सब झूठे दोगले हैं। हमारे अन्दर ज़हर भर गया है। जरूरत है कि हमे जड से उखाड फेंका जाय—हम सबके अन्दर पुरानी दुनिया का नासूर मौजूद है।

[खामोशी। गमगीन हालत मे वे बाहर चले जाते है। छोटे अफसर प्रवेश करते है।]

पहला छोटा अफसर याद करने की कोशिश करो। अतीत को याद करने की कोशिश करो। कोशिश करो कि कोई चीज भूल न जाओ। हर चीज को याद करो और जल्दी से, इससे पहले कि

अगला युद्ध तुम्हे दुबारा चपेट ले, पिछले युद्ध से सबक को अच्छी तरह समझ लो। दुश्मन की याद करो, प्रति-क्रान्ति की याद करो। याद है, दुश्मन हमें हर छिद्र से घूरता था, हर छिद्र के पीछे प्रति-क्रान्ति खड़ी थी। दिन और रात हमारे साथ गद्दारी की जाती थी। हमे घेर लिया जाता था और बांध कर ले जाया जाता था। अराजकतावाद ने हमारी पांतो को छिन्न-भिन्न कर दिया था। श्वेत गार्ड पैत्रोग्राद से १० वर्स्ट* के फासले पर पडाव डाले पडे थे। अन्डरग्राउण्ड श्वेत गार्ड मास्को के अन्दर बैठे इशारे का इन्तजार कर रहे थे। फिर, हमने "इशारा" भी कर दिया था।

दूसरा छोटा अफसर हमने सारे दफ्तर बन्द कर दिये थे। मुसाफिरों का आना जाना हमने रोक दिया था। हमने अपनी बन्दूकें उठा ली थी, मजदूर वर्ग के एक एक आदमी को लामबन्द कर दिया था, और प्रति क्रान्ति की खोपडी को कुचल दिया था। हमारे प्रहार ठीक वक्त पर होते थे और उनमे भयकर शक्ति होती थी। इतिहास गवाह है। अगर फिर कभी ऐसा दिन आये कि दुश्मन दुबारा हम पर हमला करने का दुस्साहस करे, तो उसकी फिर वही गत बनायी जायगी। उस पर ऐसा हमला किया जायगा जैसा कि दुनिया ने आज तक नही देखा

[कमाण्डर प्रवेश करता है। उसके पीछे पीछे नौअधिकारी आता है।]

कमाण्डर • अच्छा, नौअधिकारी, अब देखें नये प्रधान के नेतृत्व म हम क्या कर पाते है। जीवन हमारे प्रधानो को बदलता जा रहा है।

*वर्स्ट ३५०० फुट का एक प्राचीन रूसी नाप।

नौअधिकारी : (सावधानी से): आप ठीक कहते हैं। पता लगाना कठिन है कि कौन क्या है।

कमाण्डर : बोशुन, मेरी यह बात चाहे तुम्हें अटपटी लगे, लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि अगर ये लोग नौसैनिक परम्पराओं को बनाये रखें तो मैं कोई शिकायत नहीं करूँगा। यह तो अजीब ही तरह की नौसैनिक सेना है! अपनी तरफ उनके रवैये को ही देख लो : क्या उनमें से कोई तुम्हारे अधिकार को स्वीकार करता है? उनमें से कोई क्या तुम्हारी उम्र की इज्जत करता है? तुम्हारी वरीयता को देखता है?

नौअधिकारी (ठंडी सांस लेते हुए) : कोई नहीं।

कमाण्डर : लेकिन एक वक्त था जब नाविक नाविक होते थे और सेवा सेवा थी।

नौअधिकारी : उन दिनों का क्या कहना! उन दिनों नौसेना कितनी अच्छी थी!

कमाण्डर : तुम्हें लगता है कि इन चीजों को फिर कभी हम ठीक कर पायेंगे?

नौअधिकारी : कौन जाने? अगर उन लोगों को मैं वह सिखला सकूँ जो मैं जानता हूँ तो मरते वक्त मुझे सन्तोष होगा।

कमाण्डर (रुख बदलते हुए): समझा। अच्छा, बोशुन, अब नाविकों को बुलाओ।

नौअधिकारी : जी, सा'ब! बिगुलची!

[बिगुलची जोर से बिगुल बजाता है। उसकी आवाज सुनकर एक बार फिर अनुशासन, फुर्ती और काम की चुस्ती की कल्पना जीवित हो उठती है। नौसैनिक बेड़े के सारे गुण उभर कर सामने आ जाते हैं।]

सब लोग डेक पर जमा हो जाओ

[लम्बा नाविक तेजी से कदम बढाता हुआ आता है। उसके पीछे पीछे कुछ कम तेजी से चलता पुराना नाविक आता है। फिर दूसरे नाविक एक के बाद एक आते जाते है। उनके बाद चेचक निशान वाला नाविक आता है। उसका रवैया कार्य-विमुक्तता का, स्फूर्ति हीन और ढीला ढाला है। उसे देखकर दूसरे कई लोग भी उसी की तरह आलस्य और अवसाद की निस्तेज मूर्ति बन जाते है।]

पुराना नाविक हे बागी लोगो तुम क्या कर रहे हो!

चेचक दागवाला नाविक यह क्या हो—हल्ला मच रहा है?

नौअधिकारी तुमने आदेश नही सुना? भूल गये, तुम्हे क्या करना है?

चेचक दागवाला मुझे रत्तीभर भी खयाल नही है!

[बिगुलर फिर बिगुल बजाता है। फिर कुछ और लोग आकर लाइन में खडे हो जाते हैं। दूसरे यह दिखाते हुए आहिस्ता-आहिस्ता टहलते आते है कि उन्हे किसी की परवाह नही है। उनके हाथ उनकी जेबो में है। कमाण्डर के सामने खडे होकर वे जमुहाई लेते है और अँगडाई लेते हुए हाथ पैरो को सीधा करते है। लेकिन प्रधान आता है तो हमेशा की तरह वे सब यकायक खामोश हो जाते हैं।]

प्रधान यह शोर किस लिए हो रहा है?

कमाण्डर (मुँहफट ढग से) तुम्हारी जगह कहाँ है?

भयपूर्ण सन्नाटा

प्रधान (अपने को सभालते हुए) डेक्सारन!

नौअधिकारी जी हुजूर ?

प्रधान इस आदमी को बतला दो कि यह वक्त नाविका के आराम का है।

[नौअधिकारी अनुनय भरे स्वर मे दोहराता है आदेश यह है कि नाविक आराम करें। प्रधान बोलता जाता है]

आराम करना भी हमारे काम का एक हिस्सा है। कल फिर हम मोर्चे पर जा रहे है है न ? तब फिर आज हमे अपने को किसी तरह थकाना नही है। नाविको को पूरा आराम करने दो।

[नौअधिकारी फिर दोहराता है 'आदेश यह है कि नाविक पूरे तौर से आराम करें।]

बैंडमास्टर ! कुछ गीत सगीत सुनाओ कुछ हल्का फुलका बढिया सा जिससे कि सबकी तबियत खुश हो जाय

बैंडमास्टर (दौडता आता है) जी हुजूर !

प्रधान कुछ हल्का फुलका बढिया सा जो हमारे मन म खुशी भर दे।

[बैंडमास्टर जल्दी जल्दी सगीत शुरू करता है।]

चेचक दागवाला नाविक (लापरवाही से अँगडाई लेते हुए) इकसारन आराम कर लो। आदेश है कि हम लोगो के आराम मे किसी तरह का खलल न डाला जाय।

[नौअधिकारी खिझाया खडा है। तभी ग्रफ आ जाता है। उसके पीछ कुछ और लोग हैं। अब वह अपने क्रोध का नही सभाल पाता। हर आदमी को लगने लगता है कि कुछ गडबड हो गया है। सख्ती से डाँटते हुए ग्रफ सगीत रुकवा देता है।]

ग्रफ खामोश ! मुंह बन्द करो । जो कुछ अभी हुआ है उससे बदतर चीज क्रान्तिकारी नाविको के साथ हो नही सकती । (फलके के द्वार की तरफ चिल्लाते हुये) उस महिला को, उस घँघरिया को, जो अपने को कमिसार बताती है, ऊपर मत आने देना । (एक नाविक आज्ञाकारी भाव से जाकर फलके के द्वार पर पहरा देने लगता है) । एक वृद्ध महिला का अपमान किया गया है । उसका बैग चुरा लिया गया है । उसे अन्दर आने दो ।

[एक वृद्ध महिला, जो काले वस्त्र पहने हैं तथा बुढापे के कारण झुक गयी है, अन्दर आती है । एक नाविक उसकी बाँह थामे हुए उसे अन्दर लाता है ।]

प्रधान हाँ, माताजी, तुम्हे क्या तकलीफ है ?

ग्रफ मा, तुम पहचानने की कोशिश करो । इनमे से किसने तुम्हारा बैग उडाया था ? (नाविक एक दूसरे की तरफ देखते हैं) बोलो, मा, बताओ वह कौन था ? इनमे से कौन ?

प्रधान सब एक लाइन मे खडे हो जाओ ! तुरन्त न्याय होना चाहिए !

[वृद्ध महिला नौसैनिको की पाँत की तरफ धीरे-धीरे बढती है । उसकी बाँह अब भी एक नाविक थामे है । टढे-मेढे और परेशान खडे नाविको के चेहरो को एक एक कर गौर से और काफी देर-देर तक वह देखती है । कभी-कभी आगे बढने से पहले वह अपना सिर हिलाती है । लम्बा नाविक इस दृश्य को तिरस्कार भाव से देखता है । उसके चेहरे पर एक विकृत हँसी है ।]

ग्रफ (अचानक) बूढी मा, वह तो नही था ? (खामोशी) या वह ? (वह कोई जवाब नही देती तो लम्बे नाविक को सम्बोधित करते

हुए) क्यों जी, तुमने तो नहीं लिया था? (खामोशी) साबित करो कि तुमने नहीं चुराया!

लम्बा नाविक : देखो जी, मुझे न परेशान करो।

प्रफ : तुम कानून तो जानते हो?

लम्बा नाविक : किसका क़ानून?

प्रफ़ : अच्छा! तो तुम्हारा यह ख़याल है! (प्रधान की तरफ देखता है।)

प्रधान (सिर हिलाते हुए) : ठीक है, फिर आगे बढ़ो!

प्रफ़ : (अपने साथियों से) : बढ़ो!

[उसके साथी तुरन्त दौड़कर एक रस्सी और एक तिरपाल ले आते हैं। नाविक आगे बढ़कर लम्बे नाविक को घेर लेते हैं। प्रफ़ बढ़ता जाता है : तुमसे आखिरी बार कहा जाता है—साबित करो कि वेग तुमने नहीं चुराया है!]

लम्बा नाविक : एक बार कह चुका हूँ कि मैंने नहीं लिया। मैं दोहराना नहीं चाहता। दूसरे, मैं अराजकतावादियों की सत्ता को नहीं मानता।

प्रफ : हाथ उठाओ, अपनी राय दो!

कमाण्डर : इन चीजों के फ़ैसले के लिए हमारी एक अदालत है।

प्रफ़ : तुम अपना काम देखो जी! तुम्हारा काम टेक्नीकल है।

पुराना नाविक : साथियो!

प्रफ़ : और तुम्हारा काम राजनीतिक है—कमिसार की मदद करने का, पैम्फलेटों, आदि को लाने-पहुँचाने का।

कमाण्डर : लेकिन आप तो कानून तोड़ रहे हैं, क़ानून को अपने हाथ में ले रहे हैं! मैं इसकी इजाजत नहीं दे सकता।

प्रधान खामोश ! अपनी जबान सँभालो। हम लोगो के फैसले सीधे और तात्कालिक होते हैं। उठाओ हाथ !

[कुछ हाथ उठते हैं लेकिन वे काफी नही हैं। ग्रफ खड़े नाविको की पात के पास जाता है और उनके बदन से अपना रिवाल्वर छुआकर उन्हे हाथ उठाने के लिए मजबूर करता है। इस भाँति अपने प्रस्ताव के लिए वह बहुमत प्राप्त कर लेता है।]

ग्रफ चलो, अब सामने आओ।

लम्बा नाविक लेकिन मैं

ग्रफ खामोश ! सजा दे दी गयी। उसे बदला नही जा सकता।

नाविक उठाओ, इसे जहाज से नीचे फेंक दो !

[लम्बे नाविक की तरफ कई लोग झपटते हैं। वह उनम से एक को गिरा देता है फिर एक और को। थोड़ी देर की झपटा झपटी के बाद वे उसे पकड कर ले जाते है।]

लम्बा नाविक साथियो ! तुम लोग मेरे साथ कैसा अन्याय कर रहे हो ?

[किसी के पानी मे फेंके जाने स पैदा होने वाली छपाक की आवाज सुनाई देती है।]

नेपथ्य से ध्वनि लो यह भी ठीक रहा।

ग्रफ बूढी मा देखो न्याय हो गया।

पुराना नाविक तुम्हे इसकी सजा मिलेगी।

ग्रफ उसकी बात छोडो। सगीत शुरू करो ! (बूढी स्त्री से) मा, अब तुम जा सकती हो, तुम्हारी शिकायत पर अमल कर लिया गया।

चेचक दागवाला चलो, इसके लिए हम कुछ चन्दा कर दें।

[बूढी स्त्री के दुर्बल हाथो म सिक्के रखे जाने लगते हैं। उसकी समझ मे कुछ नही आता कि क्या हुआ और क्या हा रहा है, फिर भी झुककर वह उन सबको धन्यवाद देती है। इसके बाद उसका हाथ उसकी जेब मे जाता है और वहाँ उसे उसका खोया बटुआ मिल जाता है। वह उसे बाहर निकालती है। सगीत समाप्त हो जाता है। सन्नाटा छा जाता है। बूढी स्त्री पहले तो आश्चय और विमूढता से अपने बटुए की तरफ देखती है, फिर एकदम घबडा जाती है।]

ग्रफ तुम्हारा बटुआ मिल गया!

चेचक दाग मालिक मिल गया?

खामोशी

प्रधान देखो!

ग्रफ अराजकता ही सुव्यवस्था की मा है। एक और तिरपाल लाओ!

चेचक दाग मालिक (रास्ता रोकते हुए) खबरदार जो उसको हाथ लगाया!

नेपथ्य से ध्वनि उसने जानकर नही झूठी रिपोर्ट की थी।

पुराना मालिक उससे भूल हो गयी।

बूढ़ी औरत नेक लोगो तुम लोग मेरे बेटो के समान हो मुझस भूल हो गयी है

ग्रफ न्याय!

[बूढ़ी स्त्री को जैसे बदले की भावना से जबर्दस्ती तिरपाल के बोरे मे ठूँस कर उठा लिया जाता है।]

प्रधान (जाते हुए) देखना, फेंकते वक्त वह जहाज से टकरा न जाय ।

[उसी समय कमिसार, कमाण्डर तथा नौअधिकारी आ जाते हैं ।]

कमिसार आप लोगो ने काम शुरू कर दिया ?

प्रफ जी हाँ, क्यो नही ! (बूढी महिला को जिस तरफ लोग ले गये हैं उस तरफ देखते हुए) हम लोग मास उतार रहे है । आप जबसे आई है, नाविक काम करने के लिए मतवाले हो रहे है ।

पुराना नाविक (आगे की ओर बढकर) कामरेड कमिसार, मै अपना कर्तव्य समझता हूँ कि आपको बता दू कि

[दूसरे लोग धक्का देकर वहाँ से उसे हटा देते हैं ।]

चेचक दागवाला साथियो, यह क्या हो रहा है ?

[अकॉर्डियन बाजे के स्वर सुनाई पडते है । तभी जोरो से सीटी बजाते और नाचते अलेक्सी और उसके मित्र रगमच पर आ जाते है ।]

अलेक्सी (सामने आकर) नाविको की माँग है कि

कमिसार नाविको की प्रार्थना है ।

अलेक्सी आइये, हम इस तरह कहे कि नाविक चाहते है कि

कमिसार क्या ?

अलेक्सी विदाई की एक पार्टी की जाय ।

अलेक्सी का एक दोस्त हम लोग कल मोर्चे पर जा रहे हैं ।

कमाण्डर (कमिसार से) देखता हूँ कि नई-नई परम्पराएँ कायम की जा रही है ।

अलेक्सी नही, हम लोग एक पुरानी परम्परा पर ही अमल करने की कोशिश कर रहे है जारशाही के अफसर जब भी मिल जायें उनको खूब धुनाई करो। (अकार्डियन को जोर से बजाकर भयकर आवाज़ करता है)

नौअधिकारी कामरेड कमिसार, वह वह जो दूसरा कमिसार है अराजकतावादियो का उसने आर्डर दिया है कि नाविको को न छेडा जाय, उन्हे आराम करने दिया जाय।

अलेक्सी *यह क्या है ? क्या वह हम लोगो के खिलाफ काम करना चाहता है, क्यो ? नाविक जो चाहते हो वही करो, समझे ?*

[खामोशी। लगता है कि कमिसार परिस्थिति का मूल्याकन और मन मे कुछ निर्णय करने का प्रयत्न कर रही है। बात करने की अपेक्षा वह वस्तुस्थिति को समझने की सी कोशिश कर रही है, *क्योकि उसे तै करना है कि क्या किया जाय।*]

[अलेक्सी का भाषण जारी है]

तो क्या अपने सवाल को मुझे फिर दोहराना पडेगा ?

प्रफ (आगे आकर) आदेश यह है कि शोर न मचाया जाय।

[अचानक सन्नाटा]

कमिसार हम विदाई की पार्टी करेंगे।

नौअधिकारी आर्डर है (अपने भोपू से चिल्लाकर) कि विदाई की पार्टी के लिए सब लोग बाहर आयें।

[उसके आवाहन को दूसरे नाविक भी दोहराने लगते हैं। अलेक्सी मस्त होकर अकार्डियन बजाने लगता है। उसके यार-दोस्त तेज़ी से सीटियाँ बजाते हुए उन्मत्त होकर नाचने लगते हैं ?

किन्तु किसी अविश्लेष्य भावना के वशीभूत होकर वे प्रधान को आता देखते ही हमेशा की तरह धीरे धीरे खामोश हो जाते है।]

प्रधान (नौ-अधिकारी के भोपू को हाथ से रोकते हुए) यह इतना शोर क्यो कर रह हो ?

[अन्य भोपू भी बन्द हो जाते है। अलेक्सी भी अकार्डियन बजाना बन्द कर देता है।]

कमिसार (कमाण्डर को डाटती हुई) कामरेड कमाण्डर, मेरे आदेशो का पालन क्यो नही हो रहा है ?

कमाण्डर डेकसारन ! जो दोस्त और सम्बन्धी विदा लेने आये है उन्हे जहाज पर आ जाने दो !

[अलेक्सी के साथी फिर नृत्य करने लगते हैं। इस भाँति, बिना लाग-लपेट के, किन्तु अपने हर काम की तरह, खूब सोच समझकर कमिसार प्रधान को चुनौती देती है। यह एक ऐसी चीज है जिसे करने की आज तक किसी की हिम्मत नही हुई थी। उसके इस कदम का कुछ लोग समर्थन करते प्रतीत होते हैं, कुछ दूसरे उससे भयभीत हैं।]

कमिसार और भी तेजी से ! नाचो, गाओ, आनन्द मनाओ।

[प्रधान एकदम चुप है।]

अलेक्सी (प्रधान के नजदीक जाकर ठीक उसके मुंह के सामने अकार्डियन बजाते हुए) उन्हे सब के बाद ही हँसना अच्छा लगता है।

कमिसार इसका मतलब हुआ कि हम दोनो की पसन्द एक ही जैसी है।

[विदाई की पार्टी की तैयारियाँ होने लगती हैं।]

प्रथम छोटा अधिकारी . ओह, पार्टी ! जहाज पर विदाई की पार्टी। उन दिनो कितनी ऐसी पार्टियाँ हुई थी। एक टुकडी—३०० नौसैनिको की टुकडी आगे बढी। वे सबके सब देवदारु के ऊचे वृक्षो की तरह कद्दावर और सीधे थे। बेसब्र और जोश भरे कदमो से मार्च करते हुए महाद्वीप के उस पार तक वे चले गये थे। उनके नीले-नीले कॉलर, सफेद कॉलर, सुनहरी धारियो वाले काले कॉलर पवन मे फरफर उडते थे। उनके दिलो मे उबलते खून की उमग थी। वे कहते प्रतीत होते थे अलविदा, मेरे गाँव, अलविदा! मेरे प्रिय नगर, अलविदा! लौटकर उनमे से विरला ही कोई आया था।

दूसरा छोटा अधिकारी विरले ही लौटकर आये थे, लेकिन उनकी जगहे दूसरे लोगो ने जो जीवित थे, ले ली थी। और जहाज को लेकर फिर एक टुकडी आगे बढ गयी थी। लगातार ऐसा ही होता था। नीलाकाश आग उगलता रहता फिर भी हमारी ये टुकडियाँ न रुकती, वे दुश्मन को पीछे हटने को मजबूर कर देती—हस्तक्षेप-कारियो को वापिस लौटने के लिए बाध्य कर देती। एक बार, यूराल पर्वत के समीप, उनकी मुठभेड जारशाही अफसरो की एक रेजीमेन्ट से हो गयी। रेजीमेन्ट का नाम था "अविजेय"। नौ-सैनिको ने कहा, "इन्ह ठिकाने लगाने के लिए हमे एक रात दे दीजिए।" और सुबह तक रेजीमेन्ट का सफाया हो गया था।

प्रथम छोटा अधिकारी • नौसैनिको ने इसी तरह उक्राइन को पार कर लिया था। उन्होने क्राइमिया को पार किया था। उनके नथुनो मे सागर और स्टेपी की खुशबू बसी हुई थी। उनकी टोपियो के रिबन हवा मे फडफडा रहे थे। उक्राइन के लिए उन्होने अपनी जिन्दगियो की बाजी लगा दी थी (छोटा अफसर झटके से अपनी टोपी उतार लेता है)। लेकिन जब तक हमारा एक भी नौसैनिक

जिन्दा है हमार बेडा पराजित नही हो सकता, हमारे सागर दुश्मनो के कब्जे मे नही जा सकते।

[हवा मे नृत्य-सगीत की लहरियाँ झूम उठती हैं। शुरू-शुरू मे वाल्ज नृत्य की धुन बजती है। फौजी होते हुए भी धुन उदासी भरी है। कुछ जोडे उसी पर नाचते हुए फिरकियाँ लगा रहे है। समुद्र से शाम की नीली-नीली धुन्ध उठने लगती है। सगीत की लय मे एक अव्यक्त दबी हुई-सी वेदना है। जब तक हाथ हाथ का स्पर्श करता रहता है, शरीर शरीर से मिलता है, आँखे आँखो मे सन्देश खोजती है तब तक यह वेदना भी बनी रहेगी। बीच-बीच मे सशस्त्र नौसैनिक आ जाते हैं और लय मे कुछ व्यवधान आ जाता है। प्रेम, घबडाहट, उदासीनता, अविचारशीलता, ईर्ष्या, सत्ता की भूख ....सभी प्रकार की भावनाएँ एक ही जगह मिलती प्रतीत होती है.......अचानक एक सकेत मिलता है कि नौसैनिक पाँतो मे खडे हो जायँ। नाचते जोडे धीरे-धीरे अलग हो जाते हैं : विछोह का समय आ गया है। कुछ स्त्रियो के चेहरे सफेद हो रहे है। कुछ जाते हुए अपने मर्दो से चिपकी रहने की कोशिश करती हैं। कुछ अपने बेटो या पतियो के ऊपर सलीब का चिन्ह बनाती है। कुछ घुटनो पर बैठकर प्रार्थना करने लगती है। एक हृदय-विदारक क्रन्दन सुनाई पडता है। शत्रु मे लोहा लेने के लिए जाते सैनिक विदा ले रहे है। वाल्ज के स्वर असह्य हो जाते हैं। एक युवा स्त्री एकदम हताश होकर आगे की तरफ दौडती है तो कमिसार उसे आहिस्ता से रोक लेती है। नौसैनिक मार्च करते हुए चले जाते है। प्रगाढ स्तब्धता और खामोशी छा जाती है। स्त्रियाँ अपने हृदयो को थामे हुए नौसैनिको को जाता देखती है। पीतल के बाजो से ज़ोर से युद्ध का एक नगमा बज उठता है। जोर-ज़ोर से फौजी जोश के साथ सैनिक गाने लगते हैं। गाते हुए चेहरो पर

शाम के अँधेरे मे आँखें चमक-चमक उठती हैं, उनके दाँत दमक उठते हैं। नौसैनिको की टोपियो पर चमकते अक्षरो मे उनके युद्ध-पोतो के नाम लिखे हैं। किनारा, जिसपर स्त्रियाँ खडी है, धीरे-धीरे दूर होता जा रहा है। बीच का फासला हर सेकेण्ड बढता जा रहा है। अपने प्रिय नगर, अपने प्रियजनो को अन्तिम बार आँख भर देख लेने के लिए सैनिक बार-बार पीछे की ओर घूमकर नज़र डालते है। राइफलो से एक साथ गोलियाँ दागकर वे ज़ोर से उनका अभिवादन करते हैं।]

परदा गिर जाता है।

अंक दूसरा

[पूर्ण निस्तब्धता छाई है, पर उसके अन्दर बड़ी जोखिम और आशका छिपी है। उड़ते बादल तेजी से भाग रहे हैं। क्षितिज की रेखाएँ अस्पष्ट हैं। नौसैनिको की पाँतें निरन्तर आगे बढ रही हैं। सगीत युद्धारम्भ की घोषणा करता है। पाँतो मे जगहे खाली होने लगती हैं। सैनिक कट-कट कर गिर रहे हैं। घबड़ाकर वे भागने के लिए मुड़ते हैं। तभी उनके पास कुमुक आ जाती है। "नाविको, तुम गलत दिशा मे हमला कर रहे हो।" कमिसार का यह सीधा-सादा कथन उन्हे रोक देता है, अलेक्सी को पीछे की तरफ मुड़ने के लिए बाध्य कर देता है। वह आज्ञा देती है "लेट जाओ।" सैनिक लेट जाते है।

दुश्मन के सैनिक धीरे-धीरे, किन्तु जलते लावा के नद के समान प्रचण्ड रूप से आगे बढते आते हैं। कमाण्डर कूदकर खड़ा हो जाता है और "आगे बढो"— का रण-नाद करता हुआ दुश्मनो पर टूट पड़ता है। इधर उधर, चारो तरफ से आगे बढने और दुश्मन पर हमला करने की हुकार सुनाई देती है। समस्त वातावरण रण के एक विराट आवाहन से गूँज उठता है। दुश्मन की छाती पर चढने के लिए रेजीमेन्ट तेजी से आगे बढती है। क्रमश, फासले की वजह से, उसकी ललकार धीमी सुनाई पड़ने लगती है।

यह रात का हमला था। सगीत से पता चलता है कि युद्ध का मोर्चा दूर होता जा रहा है। फिर सगीत ही से मालूम होता है कि सागर के किनारे सुबह की किरणें फूट रही है। ध्वनियो के सम्मिलन से एक शुद्ध अवर्णनीय सगीत की सृष्टि

होती है। वह इतना मर्मभेदी है कि श्रोताओ के अन्तरतम तक को आलोडित कर देता है।

रेजीमेन्ट का सदर दफ्तर आ गया। कमिसार अकेली बैठी है। वह कुछ लिख रही है।]

कमिसार (जो कुछ उसने लिखा है उसे जोर-जोर से पढते हुए) : "प्रिय मार्या, तो, लगता है कि हम लोग निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गये है। यहां की जलवायु बहुत बढिया है। इससे बहुतो के फेफडो का भला हो सकता है। मै नही जानती कि इन सैनिको को मैं कभी सँभाल भी सकूँगी या नही। ये काफी कठिन लोग है। मैं तुमसे छिपाऊँगी नही कि मैं एक रात भी नही सो सकी.

आशा है कि ऊपर के लोग मेरी स्थिति को समझेंगे और मेरी मदद के लिए कम से कम एक व्यक्ति और भेजेंगे।.

[दरवाजे पर दस्तक। कमिसार कहती है, "आ जाइये" और नौ अधिकारी अन्दर आ जाता है। खँखार कर वह गला साफ करता है और अपनी टोपी उतार लेता है।]

नौ अधिकारी कामरेड कमिसार, मैं रिपोर्ट देने आया हूँ।

कमिसार बतलाइये।

नौ अधिकारी (पहले एक, फिर दूसरा कागज निकालते हुए) नयी रेजीमेन्ट के लोगो के लिए गोला-बारूद तथा दूसरी चीजें चाहिए। उन्हे मगाने के लिए आपके दस्तखतो की जरूरत है। (हाथ से जगह बतलाते हुए) यहाँ, इस खाली रेखा पर दस्तखत कर दीजिए—नही-नही, माफ कीजिएगा, यह सही कागज नही है। यह तो खाने के सामान का आर्डर है।

कमिसार देखूं। (उस पर नजर डालते हुए) आप लोगो ने किस

चीज़ का आर्डर दिया है ? मक्खन का ? अरे, मक्खन तो बच्चो तक के लिए नहीं है ! बेहतर हो कि आप लोग राइफिल मे लगाने की चिकनाहट के लिए आर्डर भेजें।

नौ अधिकारी ज़ारशाही के खात्मे से पहले, २५ साल तक मैं यही करता रहा था।

कमिसार (कागज़ की ओर इशारा करते हुए) इसे दुरुस्त कर दीजिए। हमारे स्टॉफ मे कितने लोग है यह भी इसमे लिख दीजिए। (चेक करती है) अब ठीक है। (दस्तखत करती है) लीजिए, अब ले जाइये।

नौ अधिकारी मुझे जाने की इजाजत है, कामरेड कमिसार ?

कमिसार हाँ।

नौ अधिकारी (जाता है, लौट आता है, फिर सरकारी ढग को तिलाजलि देकर धीरे से पूछता है) क्या सचमुच रूस म फिर कभी व्यवस्था कायम होगी ?

कमिसार इसके बारे म जरा भी शक-सन्देह की गुन्जायश नही है। दरअसल तो, उसकी स्थापना हमने शुरू भी कर दी है।

नौ अधिकारी क्या सेना और नौसेना मे भी ? कम स कम थोडी-सी तो कायम ही हो जानी चाहिए, जिससे कि सेना की भावना बनी रहे और सिपाही-सिपाही की तरह रह सकें। आखिर तो हमारा एक महान् देश है और इसमे इतनी क्षमता होनी चाहिए कि इसकी तरफ जो भी टेढी नज़र से देखने की हिम्मत करे उसकी आँखें निकाल ली जायें।

कमिसार डेक सारन, चिन्ता न करो। दुश्मन के हम अवश्य छक्के छोडायेंगे—और इतनी अच्छी तरह छोडायेंगे कि फिर वह कभी भूलेगा नही।

नौअधिकारी कामरेड कमिसार, इस सेवा कार्य मे हाथ बँटाने मे मुझे खुशी है। (सैलूट करके बाहर चला जाता है)

कमिसार (फिर अपने पत्र को पढती है) " बस, आज इतना ही काफी है। सिर्फ अपने परमप्रिय पेत्रोग्राद को और सलाम कर लेना चाहती हूँ मैंने पढा था कि वहाँ टाइफॉइड हो रहा है। अपना ध्यान रखना "

[वाइनोनिन बिना दस्तक दिये ही अन्दर आ जाता है। उसके चेहरे पर मुस्कराहट है।]

वाइनोनिन गुडमार्निंग, कामरेड कमिसार।

कमिसार गुडमार्निंग, वाइनोनिन।

वाइनोनिन आप अब भी लिख रही है? थोडा आराम कीजिए, आप का सिर फट जायगा। रिपोर्ट भेज रही है?

कमिसार ऐसी ही कोई चीज मैं लिख रही हूँ कि हमारी रेजीमेंट म लडने वाले तो अच्छे है—कम से कम कामचलाऊ तो हैं ही, लेकिन जोश दूसरी टुकडियो के बराबर नही है, क्योकि नौसैनिक तीन सदिग्ध व्यक्तियो के असर मे हैं।

वाइनोनिन अराजकतावादी शैतान! वे हरामजादे हैं!

कमिसार वे सचमुच शैतान हैं। लेकिन यह तो बतलाओ कि इन शैतानो का हमारे बीच असर कैसे है? उसे रोकने के लिए तुमने कुछ किया है?

वाइनोनिन मैंने? मैं यानी आप जानती है

कमिसार यह कोई बात न हुई।

वाइनोनिन *रूसी भाषा म मैं अपनी बात अच्छी तरह नही कर पाता।* आदमी क्या कर सकता है? (दार्शनिक ढग से) मैं समझ नही

पाता—ऐसा क्यों होता है कि एक आदमी का दूसरों के ऊपर इतना अधिक असर होता है, दूसरे का रत्ती भर भी असर नही होता ? इसका क्या कारण है ?

कमिसार : अब कृपया धरती पर उतर आओ। (स्वयं उठकर खड़ी हो जाती है) हमारी रेजीमेन्ट मे कुछ अच्छे आदमी हैं। तुम देख चुके हो वे कितनी वीरता से लड़े थे। अगर हम सावधानी से सोचें कि हमे क्या करना है तो उन्हें हम अपनी तरफ कर सकते है।

वाइनोनिन बहुत ठीक, लेकिन किया क्या जाय ?

कमिसार : किया क्या जाय ? सबसे पहले पार्टी के तमाम सदस्यो को हम एक करें। फिर प्रधान को और उसको —— क्या नाम है उसका ?

वाइनोनिन अलेक्सी ?

कमिसार हाँ, अलेक्सी को। उन दोनों को भिड़ा दें। और, अन्त मे, हमे उस अफसर से बात करनी चाहिए।

वाइनोनिन क्या कहा —— प्रधान और अलेक्सी को एक दूसरे से लड़ा दें ? तो आपका खयाल है कि ऐसा करना सही होगा ?

कमिसार : जरूरी है, और इसलिए सही भी होगा।

वाइनोनिन (खड़े होते हुए) : इस तरह तो किसी भी चीज़ को आप सही सिद्ध कर दे सकती है ! उसके जैसे आदमियो को हमे ठुकरा नही देना चाहिए। आखिर तो, जारशाही सरकार ने उसे देश-निकाला दिया था। और, फिर, अपनी टुकड़ी मे फूट क्यों हम डालें ?

कमिसार : रेजीमेन्ट, वाइनोनिन —— टुकड़ी नही, और, फूट नही डालना, सफाई करना है। और, एक बात मत भूलना ...पार्टी के

लिए मैं कुछ भी कर सकती हूँ, और तुम भी ऐसा ही करोगे। अच्छे लोगो को बचाने के लिए सडे-गले तत्वो को साफ करना होगा तो वह भी हम करेंगे। समझ गये ?

वाइनोनिन (क्षणभर विचार करने के बाद) · उस प्रधान को — आप उसे जानती नही। उसकी बडी ताक्त है। वह बहुत चालाक और कुटिल है।

कमिसार इसमे मुझे सन्देह नही।

वाइनोनिन और वह अफसर ? फासी की रस्सी बेताबी से उसका इन्तजार कर रही है। (राइफिल से निशाना लेकर मारने का अभिनय करता ह) बेताबी से इन्तजार कर रही है ! मैं उसके क्वार्टर की तलाशी लूँगा।

कमिसार तुम रुको। इस मामले को मैं खुद सभालूँगी।

वाइनोनिन उससे उसके दिल की बातें निकलवायेंगी ?

कमिसार अब जाओ। वह आने ही वाला है।

वाइनोनिन अगर वह क्रान्ति-विरोधी है, गद्दार है तो, आप उसे गोली से उडवा दे सकती है। उसके बाद उसकी सारी बदमाशियाँ बन्द हो जायेंगी।

कमिसार अच्छा, अब तुम जाओ। मैं देखती हूँ।

[*नन्हा फिन्नी बाहर चला गया। उसके निकलते ही कमाण्डर अन्दर आता दिखाई देता है। फिन्नी सशकित दृष्टि से उसको घूरता है।*]

.. आ जाइये। आप समय के बहुत पाबन्द है।

कमाण्डर पुरानी जहाजी आदत।

कमिसार (मुस्कराते हुए) : आप नाविक लोग भी खूब ही होते है। मेरा खयाल है कि सारे अच्छे गुण जहाजियो मे ही होते है ?

कमाण्डर (उसी के स्वर मे) : सब नही, तो अधिकतर तो अवश्य।

कमिसार : जल-सेना मे आपको कितने दिन हो गये ?

कमाण्डर (किंचित अभिमानपूर्वक) बीस साल। दस वर्ष की उम्र से मैं उसी मे रहा हूँ। यह भी कहा जा सकता है कि उसमे काम करते मुझे २०० साल बीत गये।

कमिसार : दो सौ ?

कमाण्डर : हाँ, हम लोग—यानी मेरे परिवार के लोग—पीटर महान के दिनो से जल-सेना मे ही काम करते आ रहे है।

कमिसार : सचमुच ?

कमाण्डर . सचमुच। हम लोगो ने सम्राट् पीटर की सेवा की थी। इस तरह के और भी कई नौसैनिक परिवार हैं। (थोडी देर की खामोशी)

कमिसार : कल की लडाई मे तो आपने बहुत दिलेरी दिखाई थी।

कमाण्डर :'अपने पेशे से अधिक नही। (हल्की मुस्कराहट के साथ और फिर एक महिला की भी तो उपस्थिति थी... (रु जाता है)

कमिसार . क्या मुझे आप सच-सच बता सकते है कि हम लोगो के बा मे, सोवियत सरकार के बारे मे आप लोग क्या सोचते है ?

कमाण्डर (आहिस्ता से, बिना किसी उत्साह के) : अभी तक सन्नाटा है। (थोडा रुककर) लेकिन आप पूछती क्यो हैं ? लोग तो प्रसिद्ध है कि लोगो के, पूरे के पूरे वर्ग के गहरे से ग विचारो को भी आप जान लेते हैं। पर सचमुच, यह क इतना कठिन भी नही है। आदमी के लिए आवश्यक है

वह रूसी साहित्य में पृष्ठ भर उलट जाय। उसे मालूम हो जायगा कि . . .

कमिसार (कविता की कुछ पंक्तियाँ सुनाती है) कि "जब जन-समुदाय अपनी मुक्ति के लिए आगे बढ़ा तो तड़प कर अपनी बंदूक उसने निकाल ली जिससे उसकी कोमल कलाई पर लहराती गोटा का स्वर्ण निकलकर छितरा गया "

कमाण्डर (आश्चर्यचकित होकर) विचित्र बात है कि आप जैसा व्यक्ति गुमिलियोव की कविता की पंक्तियाँ भी सुना सकता है, किन्तु रूसी अफसरों के बारे में केवल गुमलियोव ने ही नहीं लिखा है। उनके बारे में लरमोन्तोव ने भी लिखा था, और तोल्सताय ने भी।

कमिसार आपको मानना पड़ेगा कि लरमोन्तोव और तोल्सतॉय की आप लोगों से अधिक नहीं पटती थी। हमने उनकी कृतियों को बड़े यत्न से सँभाल कर रखा है। उनमें से अधिकांश का हम बहुत सम्मान करते हैं। इस बात में मुझे शक है कि सर्वहारा कला के साथ आप लोग भी इसी तरह का व्यवहार करेंगे ?

कमाण्डर आपका शक ठीक है। लेकिन, सर्वहारा वर्ग भी एक द्वितीय नवजागरण की सृष्टि कर सकता है, एक द्वितीय इटली एक द्वितीय तोल्सतॉय की अभिसृष्टि कर सकता है

कमिसार हम लोग किसी भी द्वितीय चीज की सृष्टि नहीं करना चाहते। हम लोग जिस चीज की सृष्टि करेंगे वह हमारी अपनी होगी, और मौलिक होगी। और, उसमें हमें आप लोगों की तरह दो सौ साल नहीं लगेंगे।

कमाण्डर आप शायद कारखानों के तेज तरीकों का इस्तेमाल करेंगी ?—उत्पादन बढ़ाने के लिए कन्वेयर (सम्प्रेषक) प्रणाली का इस्तेमाल करेंगी?

कमिसार मैं आपसे कुछ सजीदगी की आशा करती हूँ, और साधारण शिष्टाचार की भी।

कमाण्डर आपने बडे कठिन काम का बीडा उठाया है—बालिग लोगो को सिखलाने के काम का। आपसे मुझे पूरी सहानुभूति है। किसी समय मुझे भी रगरूटो को सिखलाने का काम मिला था। मैं उन्हे बतलाता था (उसके हाव-भाव व्यगपूर्ण हैं) कि यही तुम्हारा धर्म है, यही तुम्हारे सम्राट है (यद्यपि वे अत्यधिक आरामतलब थे), और यही तुम्हारा रूस है। तुम्हारी मातृभूमि है। एक-दो शब्द भविष्य के बारे मे भी कह देता था। सुन्दर, जाज्वल्यमान भविष्य के बारे मे। आपको भी वही करना पड रहा है यह हमारा कार्य-क्रम है, और यही हमारा सुन्दर जाज्वल्यमान भविष्य होगा। मेरी आपसे हमदर्दी है। (चहलकदमी करने लगता है)

कमिसार (मुस्कराती हुई) अगर तब और अब मे कोई फर्क नही है तो आप इतने परेशान क्यो हैं ?

कमाण्डर (कटुता से, किंचित् चिडचिडाता हुआ) मानवजाति के सुख और कल्याण के लिए ! सम्भवत मेरे और मेरे परिवार के उन सदस्यो के भी सुख और कल्याण के लिए जिन्हे बिना कुछ पूछे-ताछे ही आपने गोली मरवा दी है ? आपकी चिन्ता का विषय जब सम्पूर्ण मानवजाति है तब किसी एक व्यक्ति की किस्मत की आपको क्या फिक्र हो सकती है ?

[अकॉर्डियन के बजने की आवाज सुनाई देती है। स्पष्ट है कि अलेक्सी बजा रहा है।]

आपकी इजाजत हो तो (यह सुनकर सलाम करते हुए बाहर जाने का उपक्रम करता है)।

कमिसार (टलीफोन हाथ मे लेते हुए) वाइनोनिन को भेज दीजिए।

कमाण्डर (तनकर खड होते हुए) इसका मतलब क्या यह हुआ कि आप मुझे गिरफ्तार कर रही है ?

कमिसार (थोडी देर रुककर) मुझे खुशी है कि आपने इतनी साफ साफ और ईमानदारी से बातें की। (उठकर उसके पास जाती है और हाथ मिलाती है)।

कमाण्डर (परेशानी की हालत म) धन्यवाद।

[कमिसार की ओर देर तक दखता हुआ, आहिस्ते आहिस्ते कमाण्डर चला जाता है। नन्हा फिनी अन्दर आ जाता है।]

वाइनोनिन क्यो इसका विश्वास नही करना है न ?

कमिसार उसे हाथ न लगाना, सुन रहे मेरी बात ?

वाइनोनिन आप उसकी जमानत लेती है ? जरा, होशियार रहिएगा।

कमिसार वाइनोनिन तुम जानते हो कि उसके बारे म मेरा क्या खयाल है ? वह घबडा गया है वह बहादुर बनने का दिखावा कर रहा है। वह अपने सर को पानी से ऊपर रखने की जबदस्त कोशिश कर रहा है। लेकिन हम लोगो की वह सच्चाई स सवा करेगा। वह आदमी हमारे दुश्मन विदेशियो से कभी नही मिलगा।

वाइनोनिन मरी समझ म जरा भी नही आता। आप कही गलती तो नही कर रही है ?

कमिसार कम से कम उन तीन अराजकतावादियो के खिलाफ सघष म तो तुम उसके समथन का भरोसा कर ही सकते हो। और यदि उन लोगो के विरोध के कारण वह कोई एसी चीज करने की ठान लेता है जो उस नही करनी चाहिए, तो समझ ?

वाइनोनिन बहुत नही। मैं ऐसी अच्छी तरह नही समझता।

कमिसार (आवाज को जरा ऊंचा करते हुए) : "मैं नहीं समझता .. मैं बोल नहीं सकता . ..." का पचड़ा छोड़ो। अगर तुम सावधान नहीं रहते तो .. (उसकी ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखती है)।

वाइनोनिन (क्रोध से) : बात क्या है ? क्या आप आज सबकी परीक्षा ले रही है, हरेक को सिखला रही है ? (थोड़ी देर रुककर फिर वह मुस्कराता है) पर ठीक है। "ज्ञान ही प्रकाश है, अज्ञान ..... अन्धकार है।" आप रूसी लोग यही तो कहते हैं न ?

कमिसार : हाँ, कुछ इसी तरह की चीज। लेकिन, देखो तो वाइनोनिन, तुम तो रूसी कहावतें तक जानते हो। अलेक्सी को बुलवाया तुमने ?

वाइनोनिन हाँ। आप सुन रही हैं ? (जिधर से अकार्डियन का संगीत आ रहा है उस तरफ इशारा करता है)

कमिसार कह देना कि मैं उनका इन्तजार कर रही हूँ।

[किसी चला जाता है। तभी टहलता हुआ अपने अकार्डियन के साथ अलेक्सी अन्दर आता है। वह अब भी एक धुन बजाने मे व्यस्त है। बीच-बीच मे रुककर कुछ कहता है।]

अलेक्सी : *यह अकार्डियन है। कभी-कभी इसे कन्सरटीना भी कहते* है। जनता का बाजा है। बड़े काम की चीज है, खास तौर से उस समय जब आदमी का मन उदास हो।

कमिसार मैं आपसे कुछ बात करना चाहती थी। मैंने गलत समय पर तो नहीं आपको बुला लिया ?

अलेक्सी (बैठते हुए) ओफ, कोई हर्ज नहीं। आइये, बातें कर लें। जिन्दगी के बारे में औरतों से बातें करने मे मुझे बहुत आनन्द आता है।

कमिसार : यह विषय तो बहुत बढ़िया है। लेकिन पहले यह तो

बतलाइये कि इस मोर्चे से क्यों आप भाग खड़े हुए थे ? दुश्मन को लुभाकर अपने पीछे ले जाना चाहते थे ?

अलेक्सी (हड़बड़ाकर खड़ा हो जाता है) मैं　ओ　,

कमिसार या शायद वर्गीय घृणा का ऐसा उबाल आपके अन्दर आ गया था कि उन श्वेत गार्डों* को देखने मे भी आपको तकलीफ होने लगी थी ? इसीलिए पीठ दिखाकर भाग लिये थे ?

अलेक्सी ओफ, खत्म भी कीजिए ! गलती हुई। मानता हूँ। तो हो क्या गया ? हम सब कभी-कभी कमजोरी दिखा जाते है।

कमिसार ज़रूर। (उसके नजदीक पहुँच कर) आइये, अब हम जरा बाते कर लें। मुझे अपने बारे मे कुछ और जनकारी देने की कृपा कीजिए। आप कहाँ से आये है ?

अलेक्सी (सावधानी से, पर व्यंगपूर्ण ढग से शुरू करता है) : तो यह बात है ! मेरा घर कहाँ है ? मैं किस वर्ग मे पैदा हुआ ? श्रमजीवी मध्यम वर्ग म। देख लीजिए (दिखाने के लिए अपनी हथेलिया फैलाता है) ढट्ठे पड गये हैं। मध्यम वर्ग मेरे पासपोर्ट मे लिखा है। मध्यम वर्ग ही मेरी रूह पर लिखा है। जहाँ तक मेरे विचारो की बात है, उन पर रोक है—यानी सरकारी तौर पर वे गैर-कानूनी हैं।

कमिसार ओहो, आप तो असाधारण व्यक्ति हैं ? अराजकतावादी ?

अलेक्सी हाँ　ओ　शायद। अब और आप क्या मेरे बारे मे जानना चाहती हैं ? श्रमजीवी मध्यम वर्ग का सदस्य होने के नाते मैं खुद अपने हितो के लिए लड रहा हूँ। जहाँ तक रूस के अन्य नागरिकों का सवाल है, मुझे उनसे कोई प्रेम नहीं है। पर आप—मेरा खयाल है कि आपको हमारे ही प्रकार की भावनाएँ पसन्द हैं—जोशीली, सर्वहारा वर्गीय, सबको एकताबद्ध करने वाली-

---

* गद्दारों।

और आप की शायद यह भी इच्छा होगी कि मेरे जैसे लोग आपके खिलाफ न जायं।

कमिसार ऐसा खयाल आपको कैसे हो गया ? बहुत से लोग हमारे खिलाफ चले जाते है। आप भी कोशिश कर सकते हैं।

अलेक्सी हूँ ! श्वेत गार्ड उसकी कोशिश कर रहे हैं। मित्रराष्ट्र भी इसी में जुटे हुए हैं। उनकी ताकत थोडी नहीं है, लेकिन रूस उन सबके परखचे उडा रहा है—उन सबके होश दुरुस्त किये दे रहा है (रुक जाता है)

कमिसार एक प्रश्न और पिछले चुनाव के समय किस राजनीतिक सगठन को आपने वोट दिया था ? (रुक जाती है)

अलेक्सी (अन्यमनस्क भाव से) आप लोगो को। सूची नम्बर पांच के समर्थन मे। आप लोग कम से कम दूसरो से तो कुछ अच्छे हैं—गोकि इसकी भी जांच जरूरी है।

कमिसार जांच कर लीजिए। आप हर बात को इसी तरह की शाब्दिक धमकियो से शुरू करते है। किस लिए ? रोब डालने के लिए ?

अलेक्सी यह आप खुद तै कर लीजिए। (कमिसार के चेहरे पर दृष्टि गडाकर एकटक देखता है। यह कहना कठिन है कि उसने जो बात कही है वह सजीदा है या मजाक बनाने के लिए कही गयी है। वह फिर अकॉर्डियन बजाने लगता है—इस बार उसके अन्दर से कोमल, उदासी भरे स्वर फूट पडते हैं।)

कमिसार नये कमाण्डर के बारे मे क्या खयाल है आपका ? क्या उसका विश्वास किया जा सकता है ?

अलेक्सी उस भले आदमी से व्यवहार करते समय आप सतर्क रहना

कमिसार और वह आपको जानते है। और प्रधान महाशय के क्या हाल-चाल हैं ?

अलेक्सी (यकायक अकार्डियन बजाना बन्द कर देता है) कैसा हाल चाल ?

कमिसार आप लोग दोस्त हैं ?

अलेक्सी हूँ। यह कह सकना कठिन है। तै नही कर पाता। जनरल कालेदिन के खिलाफ वह और मैं साथ साथ लडे थे। इसलिए हम लोगो की दोस्ती तो है, किन्तु कुछ अजीब सी।

कमिसार यही मेरा खयाल था। वह आपको जिधर चाहता है उधर घुमा देता है।

अलेक्सी किसे, मुझे ? आपका खयाल है मैं उस बूढे बैल से डरता हूँ ?

कमिसार मैं तो जरूर ऐसा ही सोचती हूँ असल म जरूरत इस बात की है कि आपकी जिन्दगी मे थोडी व्यवस्था आ जाए।

अलेक्सी (कूद कर खडा हो जाता है) व्यवस्था ? उन लोगो ने आपको यही सिखलाया है, क्यो ? आपको बडा आसान लगता है यह शब्द पर मुझसे उसका नाम न लो। अरे, वही तो चीज है जिसे लोग नही चाहते पुरानी व्यवस्था के इतने वर्षों के बाद वे तरस रहे हैं आजादी के लिए, आजादी न मिले तो उसकी जैसी ही कोई चीज मिल जाय। "व्यवस्था" की इतनी घूँटो उनको पिलाई गयी है कि अब वे उसका नाम तक नही सुन सकते। दस वर्ष की 'व्यवस्था' के बाद वे बोलना तक भूल गये।

कमिसार लेकिन कम से कम आपके बारे मे तो यह बात नही कही जा सकती।

अलेक्सी (थोड़ा हँसते हुए) · ठीक कहती हैं आप। जो चीज दूसरे कहते है उसी को मैं दोहराता हूँ "निजी सम्पत्ति खत्म हो जाय तो सब कुछ बढिया हो जायगा।" "हो जायगा", समझी? "हो जायगा"—देखिए, आप भी खूब अच्छी तरह जानती है कि पुराने विचार लोगो के दिलो मे कितनी गहराई तक जमे हुए है। एकमात्र चीज जिसकी आदमी फिक्र करता है वह यह है कि धनी कैसे बन जाया जाय, घर कुछ कैसे ले जाया जाय, दूसरे किसी आदमी के हाथ से कुछ कैसे झपट लिया जाय। अपनी नीद तक मे हम अपनी चीजो से चिपके रहते हैं। मेरी अकार्डियन, मेरी बिरजिस, मेरी औरत, मेरी मछली। अरे, अभी ही तो सिर्फ एक पर्स को लेकर उन्होने एक इन्सान को जिन्दा समुद्र मे फेंक दिया था। एक को नही, दो इन्सानो को। आपका खयाल है, आप लोगो को बदल दे सकती है? आप सोचती है मनुष्य स्वयम् अपने स्वभाव पर काबू कर सकता है? वह छोटी सी चीज है, वह शब्द "मेरा", लेकिन आप देखेंगी कि वह आपको चैन नही लेने देगा। उसका, यानी "मेरे" के इस विचार का आपको बराबर सामना करना पडेगा। उस छोटे-से दुबले पतले चूजे के कारण, जिसे प्रत्येक किसान अपना कहता है, सारे रूस मे बेहिसाब रोना-धोना, सिर पटकना और लडना झगडना होने जा रहा है। यही नन्ही-सी चीज है जिसकी वजह से हमारे सारे मनसूबे चकनाचूर हो जायेंगे। काफी लुत्फ आने वाला है! (वह जोरो से अपना कोट को खीचने-उतारने की कोशिश करने लगता है)

कमिसार सभालकर, वर्ना कोट फट जायगा आप सोचते है, हम लोग इस सबको नही समझते? हम लोग अन्धे हैं? हम अन्धे नही हैं, लेकिन हमारा जनता मे विश्वास है। इस "मेरे" शब्द का विचार लोगो के बीच रोटी के एक टुकडे की तरह फेंक दिया गया

था। धूर्त घासेठा—वे जानते थे कि इस तरह का जहर जब वे बो रहे थे तो वे क्या कर रहे थे। मरियल चूज़े को देखते ही लोग सब कुछ भूल गये। देखते हैं आप, कितनी भयकर बात है? इसलिए, आवश्यक है कि लोगों से हम यह कहें कि "चूज़ा ही सबकुछ नहीं है। मनावजाति को लूट लिया गया है।" अगर आदमी इस पर भी नहीं समझता तो उसे, कीड़ों से भरे इस प्यारे इन्सान को उसके बाल पकड़कर हम दलदल से निकाल लायेंगे। और कहेंगे: क्या तुम जिन्दगी में पहली बार अच्छी तरह स्नान करके स्वच्छ बनना चाहते हो, बेहतर जीवन बिताना चाहते हो, खाने के लिए पर्याप्त भोजन प्राप्त करना चाहते हो? क्या तुम चाहते हो कि तुम आनन्दपूर्वक नाच-गा सको, बच्चों को जन्म दे सको, उन्हें प्यार कर सको, गाते हुए खुशी-खुशी अपना काम कर सको? क्या तुम अपने मस्तिष्क और अपनी प्रतिभा का विकास करना चाहते हो? तब फिर अपना सिर ऊपर उठाओ! इन कीड़ों को निकाल फेंको। दलदल से निकलकर अपने दुश्मनों पर टूट पड़ो! लड़कर स्वच्छ हवा और सुहानी धूपभरी दुनिया का निर्माण करो! धरती पर अभिमान से चलो—वह तुम्हारी है—सारी की सारी तुम्हारी है। पशु जीवन का काल समाप्त हो गया। निजी सम्पत्ति खत्म कर दी गयी। सूर्य और प्रकाश से भरे जीवन के, तुम्हारे नाम और काम के अनुरूप उदात्त जीवन के द्वार खुल गये—नये जीवन का अभिनन्दन करो! तुम हर तरह से असाधारण हो, किन्तु तुम्हारे दिमाग में न जाने कितना कूड़ा भर दिया गया है।

अलेक्सी (दुष्टता से): हो सकता है, मैं सिर्फ मज़ाक कर रहा था?

[कमिसार सामने खड़ी हुई है—चट्टान की तरह अविचलित, सुदृढ़, सीधी और सुन्दर।]

'इस सारे वक्त जब आप अधिकारों और सिद्धान्तों पर भाषण दे रही थीं मैं आपको देख रहा था और सोच रहा था—और इस बात को स्वीकार करने में मुझे कोई शर्म नहीं है—कि इस तरह की स्त्री मेरी बीवी क्यों नहीं होनी चाहिए ? मेरे सामने से दूर हट जाओ, वर्ना

कमिसार फिर शादी की समस्या पर लौट आये, क्यों ?

अलेक्सी देखो, मुझे छेड़ो मत ! मैं तुम्हें छोड़ूँगा नहीं। समझीं, मैं अपने अंतरतम की बात तुम्हें बता रहा हूँ। (उसके समीप आकर) सुनो।

कमिसार (एक गिलास में पानी भरकर आगे बढ़ाती है) लो, पानी पी लो।

अलेक्सी (पानी को वोदका की तरह एक ही घूँट में पी जाता है) शायद मैं बहुत बोल गया ? शायद मैं तुम्हारे मन की टोह ले रहा था ?

[नौअधिकारी और कमाण्डर द्वार पर दिखलायी पड़ते हैं। क्षणभर के लिए वे ठिठक जाते हैं फिर कमाण्डर दृढ़ कदम बढ़ाता हुआ अन्दर आ जाता है। अलेक्सी आहट सुनकर दरवाजे की तरफ घूमता है, अफसर को देखता है। अपनी आँखों को बनाता हुआ तिरस्कार के लहजे में एक मूर्खतापूर्ण गीत की धुन छेड़ देता है।]

कमाण्डर (क्रोध से भड़ककर) बन्द करो ! खामोश !

[अलेक्सी बाजा बजाता रहता है। फिर कमिसार के कहने पर बन्द कर देता है। सब खामोश है।]

कमाण्डर (पढ़ता हुआ) फौजी कानून कहता है, 'सेना में एक ही आदमी का हुक्म चलना चाहिए।' इस रेजीमेन्ट में अधिकार

जिनके काम मे आज तक धब्बा नही लगा और जिनके अफसर सारी लडाई से गुजर चुके हैं, जारशाही के कुछ दलाल घुस आये है। (पहले अफसर की तरफ देखता है, फिर नौअधिकारी की तरफ) टोडी कही के ! जहरीले साप ! टुकडी को पता लग गया है कि वे क्या चाहते है ! वे हमे बेवकूफ नहीं बना सकते। (कमिसार से) हमे टुकडी को बचाना पडेगा, फौरन कुछ करना पडेगा। हमारी स्वयम् अपनी भावनाएँ है, स्वस्थ भावनाएँ है, किसी को क्रान्ति को धक्का पहुंचाने का मौका हम नही दे सकते।

कमाण्डर स्वस्थ ? तुम, सुआकी !

ग्रफ हाँ शायद मेरे जैसा सुआकिया उन स्वस्थ क्रान्ति विरोधियों से कही अच्छा है जिन्हे मैं जानता हूँ। (अधीरता से अपने एक हाथ को दूसरे हाथ पर मारता हुआ) बताइए, कमिसार आपका क्या जवाब है !

कमिसार मैं,

कमाण्डर आपका जवाब, कमिसार।

अलेक्सी बोलिए, बताइए।

प्रधान आप किसकी तरफ है ?

कमिसार (कुछ सोचने के बाद) नाविको की तरफ।

ग्रफ सच कहती हैं ?

कमिसार मेरे शब्द एक कम्युनिस्ट के शब्द हैं।

प्रधान इन शब्दो को आपको सबके सामने दोहराना होगा। (कमाण्डर के हाथ से कागज छीन लेता है गुडमुड करके उसे जमीन पर फेंक देता है, फिर कमिसार से कहता है) इसने जो कूडा लिखा था उसके बजाय मैं खुद अपना आदेश आपके पास भेज दूंगा। आप उस पर दस्तखत करेंगी। (ग्रफ से, कमाण्डर और

बँट गये है। कई-कई लोगो के हुक्म चलते हैं। हालत इतनी खराब हो गयी है कि—"

कमिसार आप चाहते क्या हैं ?

कमाण्डर पूरा अधिकार।

[अलेक्सी हल्के से सीटी बजा देता है। कमिसार सतर्क है।]

कमिसार पूरा अधिकार ? उस कागज से क्यो पढ रहे हैं ? तमाम रेजीमेन्टो के नाम जारी की गयी क्या वह कोई सरकारी दस्तावेज है ?

कमाण्डर मैं पढ इसलिए रहा हूँ कि नौसैनिक अकादमी मे मुझे सिखलाया गया था कि फौजी मामलो मे हमेशा कम से कम शब्दो का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। फौजी सेवा के बारे मे आदमी बात नहीं करता, काम करता है। पर आजकल, देखता हूँ, बेकार के शब्द बहुत इस्तेमाल किये जाते हैं। (वह अलेक्सी की तरफ इस तरह देखता है जैसे कि वही दोषी हो।)

अलेक्सी (धमकी भरे ढग से) बेकार के, क्यो ? मैं तुझे बताऊँगा ! श्वेतगार्ड का बच्चा !

[*उसकी आँखें कमाण्डर के सफेद कालर पर जम जाती हैं। इसी समय अपने हमेशा के ढग से टहलता हुआ प्रधान अन्दर आ पहुँचता है। उसके साथ ग्रफ है। एकत्रित लोगो को ग्रफ सम्बोधित करता है।*]

ग्रफ हमारी टुकड़ी मे—

कमिसार · रेजीमेन्ट मे।

ग्रफ कोई फर्क नहीं पड़ता। आप जो चाहे कह लीजिए। चीज यह है कि हम क्रान्तिकारी नौसैनिको के बीच, उन सैनिको के बीच

जिनके काम में आज तक धब्बा नही लगा और जिनके अफ़सर सारी लड़ाई से गुजर चुके हैं, जारशाही के कुछ दलाल घुस आये हैं। (पहले अफ़सर की तरफ़ देखता हैं, फिर नौअधिकारी की तरफ) टोड़ी कहीं के! जहरीले साप! टुकड़ी को पता लग गया है कि ये क्या चाहते है! ये हमें बेवकूफ नहीं बना सकते। (कमिसार से) हमें टुकड़ी को बचाना पड़ेगा, फ़ौरन कुछ करना पड़ेगा। हमारी स्वयम् अपनी भावनाएँ है, स्वस्थ भावनाएँ हैं, किसी को क्रान्ति को धक्का पहुंचाने का मौका हम नही दे सकते।

कमाण्डर : स्वस्थ ? तुम, सुजाक़ी !

प्रफ़ : हाँ.......शायद मेरे जैसा सुजाकिया उन स्वस्थ क्रान्ति-विरोधियों से कही अच्छा है जिन्हे मैं जानता हूँ। (अधीरता से अपने एक हाथ को दूसरे हाथ पर मारता हुआ) बताइए, कमिसार आपका क्या जवाब है!

कमिसार : मैं........

कमाण्डर : आपका जवाब, कमिसार।

अलेक्सी : बोलिए, बताइए।

प्रधान : आप किसकी तरफ है ?

कमिसार (कुछ सोचने के बाद) : नाविकों की तरफ।

प्रफ़ : सच कहती हैं ?

कमिसार : मेरे शब्द एक कम्युनिस्ट के शब्द हैं।

प्रधान : इन शब्दों को आपको सबके सामने दोहराना होगा। (कमाण्डर के हाथ से कागज छीन लेता है, गुड़मुड़ करके उसे जमीन पर फेंक देता है, फिर कमिसार से कहता है) इसने जो कूड़ा लिखा था उसके बजाय मैं खुद अपना आदेश आपके पास भेज दूंगा। आप उस पर दस्तखत करेंगी। (प्रफ़ से, कमाण्डर और

नौअधिकारी की तरफ इशारा करते हुए) देखो जी, इन पर कड़ी नजर रखना। इनके साथ क्या करना है इसे बाद में मैं तै करूँगा।

[सब बाहर चले जाते है। ग्रफ कमाण्डर की रखवाली करता हुआ जाता है। कमिसार अकेली ही रह जाती है। बैठी हुई वह नय घटनाचक्र के बारे में विचार कर रही है। तभी वाइनोनिन आ जाता है।]

वाइनोनिन कमिसार, हालत अच्छी नही लगती।

कमिसार वाइनोनिन, पार्टी मेम्बरो को बुला लो।

वाइनोनिन (अपनी ही विचार शृखला मे खोया हुआ) हो सकता है उस अफसर की रगो मे बढ़िया ही खून बहता हो, और फिर भी

कमिसार वाइनोनिन, पार्टी मेम्बरो को मीटिंग के लिए बुला लो।

वाइनोनिन क्या प्रधान के खिलाफ़ ? क्या लडाई शुरू कर रही हैं ?

[नन्हा फिन्नी तेजी से बाहर चला जाता है।]

कमिसार (उसकी तरफ देखते हुए) इसी तरह आदमी को तजुर्बा होता है, समझी, कामरेड कमिसार !

[टहलते हुए एक-एक कर बूढा नाविक, चेचक के दाग वाला नाविक और कुछ दूसरे लोग अन्दर आते हैं।]

बूढ़ा नाविक आपने बुलाया है, कमिसार ?

कमिसार आपने सुना, क्या हुआ है ?

बूढ़ा नाविक थोडा-बहुत।

कमिसार : आपकी क्या राय है कमाण्डर के बारे में ?

चेचकदाग नाविक वह दोगला है।

वाइनोनिन मैंने कहा न था कि मौत उसका इन्तजार कर रही है।

कमिसार वाइनोनिन, आप थोड़ी देर चुप नहीं रह सकते ?

वाइनोनिन (पीछे की ओर मुड़ते हुए) मैं बिल्कुल ही चला जा सकता हूँ। अगर आपकी यही आज्ञा हो।

कमिसार यहाँ बैठो। (छोटा फिन्नी बैठ जाता है। अन्य लोग भी उसका अनुकरण करते हैं)

चेचकदाग नाविक अब हम लोग मतलब की बात पर आजायें। बोलिए, किसकी अक्ल ठिकाने लगानी है ?

कमिसार सूचना मिली है कि प्रधान ने अराजकतावादियों की एक और टुकड़ी को बुलवा भेजा है। वह आती ही होगी। दूसरा समय होता तो हम प्रधान से बात करते और उसे समझाने की कोशिश करते। युद्ध का उसका रिकार्ड अच्छा है। लेकिन, इस समय लोग बहुत कठिनाई में हैं, तथाकथित "शिक्षात्मक कार्य" करने के लिए हमारे पास समय नहीं है।

चेचकदाग नाविक सबको पीट-पाटकर गूदा बना दो।

कमिसार "सबको' से तुम्हारा क्या मतलब ?

[अलेक्सी प्रवेश करता है। खामोशी छा जाती है।]

अलेक्सी कोई साजिश की जा रही है ? मेरे आ जाने से विघ्न पड़ गया ? (शिकायती भाव से बाहर चला जाता है। जाते-जाते अपनी चिर-संगिनी अकार्डियन पर हाथमार कर जोर से आवाज करता है। फिर "सेबके गीत" को एक उदासी भरी धुन में बजाने लगता है।)

बूढ़ा नाविक (जाते हुए अलेक्सी की तरफ देखते हुए) भोंदू अकेला ही घमता है।

दूसरा नाविक उसी का कसूर है।

वाइनोनिन क्या मैं बता सकता हूँ कि कमाण्डर के बारे मे मेरा क्या खयाल है ?

कमिसार तुम्हारी खोपडी पर तो सिर्फ कमाण्डर सवार है। उसका कोई महत्व नही। महत्व हमारा है, पार्टी सगठन का है, और इस सम्बन्ध म सचमुच तुम लोगो ने बहुत ढील की है।

चेचकदाग नाविक हम लोगो ने। हम हैं यहाँ कितने ? हमारी सख्या एक हाथ की अगुलिया पर गिनी जा सकती है।

वाइनोनिन हम कितने हैं ? आधी दुनिया आगे है, पूरी दुनिया पीछे है और कामरेड लेनिन बीचोबीच है। क्या इतना काफी नही है ?

चेचकदाग नाविक (उस पर वाइनोनिन की बात का कोई असर नही पडता) आपकी इजाजत हो तो मैं बाहर हो आऊँ और जरा उन लोगो से कुछ बात कर लू ? (उठकर खडा हो जाता है, उसका हाथ रिवाल्वर पर है)

[प्रफ प्रवेश करता है। चेचकदाग नाविक उसकी बात सुनने के लिए रुक जाता है।]

प्रफ (इकट्ठा लोगो पर एक नजर डालते हुए) टुकडी के प्रधान ने हुक्म दिया है कि तजी से काम किया जाय। (कमिसार से) जो परचा उसने भजने को कहा था वह यह है। दस्तखत कर दीजिए, देवी जी आप देख क्या रही है ? यह उसके बारे म है—उस कमाण्डर के बारे म। शडी की टुकडी को आदेश दिया गया है कि वहाँ, जमीन के नीचे (परचा कमिसार को थमा देता है। दूसरो से

कहता है) : तुम लोग क्यों हम से अलग हुए जा रहे हो ? दोस्तो, अच्छा होगा कि जो कुछ हमें करना हो साथ ही करें। साथ ही मरें (कम्युनिस्टों पर उसकी अपील का कोई असर नहीं पड़ता) अच्छी बात है, प्रधान इन्तजार कर रहे हैं—बहुत देर न कीजिएगा। (जाता है)

कमिसार (पुर्जे को पढ़ती है, उसे दोहरा मोड़ती है, फिर फाड़ देती है) : जान की बाजी लगाने के लिए कौन तैयार है ?

[खामोशी]

वाइनोनिन : किसलिए ?

कमिसार : कुछ वक्त ऐसे होते हैं जब पार्टी में यह नहीं पूछा जाता कि किसलिए। (दूसरों को सम्बोधित करते हुए) बतलाइये ?

[बैठे लोगों के बीच हलचल]

बूढ़ा नाविक (खड़ा होकर) मैं।

कमिसार : आप पैट्रोग्राद के हैं ?

बूढ़ा नाविक : हूं... ऊँ... !

कमिसार : हम चीजों को ठीक करने जा रहे हैं। ठीक किए बिना अब निस्तार नहीं है (बूढ़े नाविक से) दूसरों की बनिस्यत आप ज्यादा हिम्मती है। रेजीमेन्ट से आपको ही बात करनी होगी। यदि वे आपको मार देते हैं तो आपकी जगह पर.................. (लोगों की तरफ देखती है)............वाइनोनिन ले लेंगे।

वाईनोनिन : बात साफ है। लेकिन, लिखकर दे दीजिए, मुझे क्या कहना होगा।

कमिसार (कठोरता से) : लिखकर न दिया जाय तो तुम्हें मालूम नहीं क्या कहना है ? असलियत क्या है—तुम्हें मालूम नहीं ?

चेचक दाग नाविक इतना तो साफ़ है। वे उसे मार देते हैं, उसके बाद अगले आदमी को भी मार देते हैं और आपका क्या होगा?

कमिसार साथियो सबसे पहले मैं खुद बोलूगी।

[छोटे अफसर प्रवेश करते है।]

द्वितीय छोटा अफसर मास्को। आदेश संख्या १२५०. अगर कोई छापेमार दस्ता ऊपर के आदेशों को मानने से इनकार कर देता है उसके सदस्य बागी और अनुशासनहीन हो जाते हैं अथवा वे सेना के अदर फूट के बीज बोने की कोशिश करने लगते हैं तो दस्ते को सख्त से सख्त सजा दी जानी चाहिए। ऐसी परिस्थिति म उच्च कमान का फ़ज़ हो जाता है कि वह जोर से प्रहार करे। कम से कम समय के अन्दर—२४ घटे से अधिक कभी न बीतने पायें—बागी सैनिकों के हथियार ले लिए जाएं और उनके दस्ते को तोड़ दिया जाए।

प्रथम छोटा अफसर यह बात तो समझ म आती है परन्तु बागियों म कुछ लोग तो निश्चित रूप से—चाहे वे छ ही सात हों—पार्टी के सच्चे वफादार और विश्वस्त सदस्य होंगे। उनका क्या किया जाय? उन्हें गोली मार दी जायगी?

द्वितीय छोटा अफसर परिस्थितियाँ चाहे जैसी हों कमिसार और पार्टी सदस्यों के लिए जरूरी हो गया है कि अब दृढता से काम लें और अपनी जान पर खेल करके भी दूसरों के सामने एक आदश प्रस्तुत करें।

[प्रधान ग्रफ तथा उनके कुछ अनुयायी प्रवेश करते हैं। प्रधान असंतुष्ट भाव से एक क्रांतिकारी गीत गुनगुना रहा है। ग्रफ अपनी बन्दूक साफ़ कर रहा है—वह बीच-बीच मे उसके घोड़े

को चलाता है। उसके चलन की आवाज स्पष्ट कठोर, और अर्थपूर्ण लगती है।]

प्रधान चलो, एकाध घूट पी आयें ?

प्रफ मेरा खयाल है कि अब मुझे अपनी तन्दुरुस्ती का खयाल रखना चाहिए।

प्रधान धत्! चारो तरफ जो हो रहा है उसे देख कर भी ? मेरा तो दिल जल उठता है। न ईश्वर, न कोई भले लोग। (अपने अनुयायियो की ओर घूमते हुए) इन्हे आदमी कहते हो ? इनमे एक भी आदमी नही।

प्रफ लेकिन, उस महिला को तो देखो जो हमारे यहाँ भेजी गयी है ! यह सब हगामा समाप्त हो जायगा तो क्या मैं नही चाहूगा कि इसी तरह की एक सुन्दर सी मठरी से मैं भी ब्याह कर लूँ ?

प्रधान (हँसते हुए) तुम सोचते हो कि इस तरह की बातें करके अपने गुनाहो को छिपा लोगे ? याद है उस आदमी की जिसे तुमने समुद्र म उछाल दिया था, और उस बुढिया की भी जिसे तुमने लहरो के जबडे म फेंक दिया था ? वाह रे, खूनी अराजकतावादी !

[एक नाविक प्रधान के पास आकर कहता है "उन लोगों ने दो आदमियो को गिरफ्तार कर लिया है।" इशारे से प्रधान उससे कहता है कि उन्हे ले आओ। दोनो कैदियो को ले आया जाता है। नाविक उन्ह घेर लेते है, कैदी हर चीज को गहरी चिन्ता से देखते है। किसी भी तरफ उन्ह सहानुभूति का चिन्ह नही नजर आता।]

प्रफ : तुम कौन हो ?

कैदियों में से पहला एक आदमी।

ग्रफ कहो कि—एक मरणशील प्राणी।

क़ैदी ठीक तुम्हारी ही तरह।

ग्रफ तुम हम क्या बतला सकते हो ?

कैदी मेरा दोस्त और मैं

ग्रफ सिर्फ अपनी बात करो।

क़ैदी मैं फिर कहता हूँ मेरा दोस्त और मैं युद्ध के भागे हुए क़ैदी हैं। हम श्लैशविग के कैम्प से आ रहे है। पोलैण्ड और छोटे रूस को हमने पैदल पार किया है।

ग्रफ छोटा रूस नही। युक्राइन।

कैदी . हम अपने घर लौटने की कोशिश कर रहे हैं। तुम्हारे सैनिको ने हमारे कागज़ात ले लिये है।

[जिन लोगो के पास उनके कागज हैं उनकी तरफ इशारा करता है। कागजात पहले ग्रफ को, फिर प्रधान को दिखाये जाते हैं।]

प्रधान आपका पद क्या है ?

कैदी हम दोनो अफसर हैं।

[नायिका के मुँह स आश्चर्य से निकल पडता है "दखो ?" "अहा !]

ग्रफ आपको पता है, रूस म क्या हो रहा है ?

पहला अफसर सारी दुनिया को पता है। आप हम लोगो की तरफ दुश्मना की तरह क्या देखते हैं ? मेरे पास कोई जागीर-जायदाद नहीं हैं—आजकल सबसे ज्यादा चिढ इसी स लोगा को लगती मालूम पडती है। मुझे फ़ौज म भरती कर लिया गया था।

प्रधान (किंचित हंसते हुए) मैं खूब समझता हूँ कि इस समय का क्या अर्थ है। और मैं समझ रहा था कि तुम को [illegible]।

पहला अफसर : भूल जाने दें नहीं, कभी नहीं। [illegible] होना चाहिए [illegible] इन लोगों ने [illegible] इस तरह घूर रहे हो [illegible] है फिर भी मैं अपनी बात कहूँगा। [illegible] आप खुद लड़ाई देख चुके हैं, और जानते हैं कि [illegible] काम करने का अर्थ क्या होता था। हमारे साथ [illegible] व्यवहार कीजिए। हम पर विश्वास कीजिए। [illegible] है कि आप हमारी बात पर यकीन करेंगे।

प्रधान इतना अधिक भरोसा मत करो।

[कुछ नाविक हँस पडते है ।]

पहला अफ़सर - हम लोग मामूली अफपर हैं । अभी खदको से निकलकर आये है । हम सोवियत सत्ता को समझना चाहते है ।

प्रधान : *अब काफी हो गया ! अब तर्क से काम लिया जाय, तर्क-शास्त्र* तो तुमने पढा होगा ?

पहला अफ़सर : जी—हाँ ।

प्रधान : वह क्यो नही कुछ बोलता ? (दूसरे अफसर की तरफ सकेत करता हैं ।)

पहला अफ़सर : वह बहरा हैं । एक दुर्घटना के कारण उसी श्रवण-शक्ति लुप्त हो गयी हैं ।

[नाविक एक दूसरे की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखते हैं । उनमे से कुछ के चेहरो का भाव बदल जाता हैं ।]

प्रधान : तो तुम लोग भागे हुए युद्धबन्दी हो ? घर वापिस जा रहे हो ?

पहला अफ़सर : जी हाँ ।

प्रधान (दूसरे कैदी से) : *और तुम ?* (दूसरा अफसर चकित-सा मुस्कराता है । पहला उसे "हाँ" कहने के लिए लिए कहता हैं और वह सिर हिला कर "हाँ" कहता है) हूँ । इसका मतलब *हुआ कि तुम लोग घर जाओगे और फिर जाकर हमारे देश के* दुश्मन, श्वेत-गार्डों से मिल जाओगे ! यही न ?

पहला अफ़सर : हम लोग वही नही जायेंगे । कही भी नही ।

प्रधान : तुम लोग अगर खुद, अपनी मर्जी से नही जाओगे, तो तुम्हे जबर्दस्ती ले जाया जायगा । इतना तो अब तक तुम्हे समझ ही जाना चाहिए । यही तर्कपूर्ण है, नही ?

पहला अफ़सर : लेकिन वह तो बहरा है, और जहाँ तक मेरी बात है......(गले से बंधी पट्टी से लटकते अपने घायल हाथ को दिखलाता है) इसके अलावा, यह क्यो जरूरी है कि हम लोग श्वेत गार्डों के साथ शामिल हो जायेंगे ? कुछ लोग आपके साथ भी तो शामिल हो जाते हैं (वह वैरिंग की तरफ इशारा करता है। उस पर अभी ही उसकी नजर पडी है)

प्रधान : हमारे साथ शामिल हो जाओ ? इसकी कोई सम्भावना नही। इस तरह का एक नमूना हमारे पास है (उसकी आँखें भीड मे कमाण्डर को ढूंढती हैं। वह देखता है कि उसे उसका एक आदमी गिरफ्तार किये हुए है), लेकिन अब अधिक दिन वह हमारे साथ नहीं रहेगा। (कुछ लोग नजर बचा कर कमाण्डर को देखते हैं) तुम्हारी पूरी कौम को, एक-एक आदमी को हमे खत्म करना होगा। ऐसा नही करेंगे, तो क्रान्ति विफल हो जायगी। यह तो सीधा तर्क है, है न ?

[ख़ामोशी।]

दूसरा अफ़सर (अचानक) . क्या वे हमे घर जाने दे रहे है ?

पहला अफ़सर (निराशा के आँसुओ को घूँटकते हुए) : एक मिनट सुन लीजिए......मैं इतना उत्सुक था......वहाँ हम लोग, नये रूस के बारे मे, लेनिन के बारे मे, कितने चाव से पढते थे। आप लोग इतने बेरहम क्यो हैं ?

प्रधान : बेरहम ? (हंसता है) मुझसे और उस ठूंठ से अधिक रहमदार आदमी तुम्हे दूसरा नही मिलेगा। (ग्रफ की तरफ इशारा करके कहता है।)

पहला अफ़सर . एक......अन्तिम शब्द......और मुझे कह लेने दीजिए... मैं आप से बिनती करता हूँ।

प्रधान ये सब चोचले पूँजीवादी अदालतो मे चलते है—हमारे यहाँ नही। ये सब बच्चो को बहलाने की बातें हैं। यहाँ वह कुछ नही चलेगा। (अपने एक आदमी से) ले जाओ इन्हे—तुम जानते हो कहाँ ले जाना है।

पहला अफसर (तनकर सीधे खड़े होते हुए) ऐसी हालत मे मैं आप से विदा लेता हूँ। मौत के मुँह मे भेजने के पहले अभी जो लेक्चर आपने हमारे सामने पढा है उसके लिए धन्यवाद।

दूसरा अफसर (पहले से) उन्होने हमे घर जाने की इजाजत दे दी? तुम जवाब क्यो नही देते?

प्रधान इन्हे ले जाओ।

दूसरा अफसर उन्होने हमे घर जाने की इजाजत दे दी? (प्रधान से) आपने हमे घर जाने की इजाजत दे दी? जी? आह, शुक्रिया। घर पर मेरा इन्तजार हो रहा है।

बूढ़ा नाविक (भीड को चीरकर आगे पहुँचते हुए) आप उनके साथ इस तरह का बर्ताव क्यो कर रहे है?

[नाविको के अन्दर हलचल।]

एक आवाज खबरदार, जो उनको हाथ लगाया!

अलेक्सी (प्रधान के पास जाकर और पहले अफसर की ओर सकेत करते हुए) : मुझे वह आदमी पसन्द है।

प्रधान इन्हे ले जाओ।

अलेक्सी खबरदार, जो उन्हे हाथ लगाया!

प्रधान (भीड मे घुसकर कैदियो को अपनी पीठ से ढकेलता हुआ) : होशियार हो जाओ, जो लोग इनका साथ देंगे उनका भी यही हाल किया जायगा! (अपने आदमियों से) ले जाओ इन्हें!

[दोनो अफसरो को ले जाया जाता है।]

अलेक्सी (प्रधान से) तुम्हे इसकी सज़ा मिलेगी!

[कमिसार, नन्हा फिन्नी, चेचकदाग वाला नाविक तथा दो और नौसैनिक प्रवेश करते हैं।]

प्रधान आपने उस कागज पर दस्तखत कर दिये ?

कमिसार (थोडी देर रुककर) हाँ।

प्रधान लाइये, कहाँ है ?

अलेक्सी आपको मालूम है अभी क्या हुआ ?

कमिसार क्या हुआ ?

प्रफ घबडा रहा है, है न ? हम लोग तो केवल कुछ काले नागो की सफाई कर रहे है।

बूढ़ा नाविक वे कैदी है!

अलेक्सी (रोष से बिगडते हुए) : आप अपने को कमिसार कहती हैं!

कमिसार रोको उन्हे!

[यही क्षण है जिसमे रेजीमेन्ट की किस्मत का फैसला हो जाता है। कमिसार के सामने पूरी परिस्थिति स्पष्ट है। वह जानती है कि खुद उसकी किस्मत, पार्टी सदस्यो की किस्मत, सारे नौसैनिको की किस्मत का फैसला इसी क्षण मे होना है। अलेक्सी, नौअधिकारी, बूढा नाविक, वाइनोनिन तथा थोडे से और लोग कैदियो को मौत से बचाने के लिए तेज़ी से दौडते हैं। लोगो की ज़ोर ज़ोर से आवाज़े सुनाई दे रही हैं। "रोको!", "ठहरो ", "उन्हे पकडो!" एक-दो सेकेण्ड सख्त प्रतीक्षा मे बीतते हैं। फिर दो गोलियो की आवाज सुनाई देती है। खामोशी]

(प्रधान से) लाल सेना युद्ध-बन्दियो को गोली नही मारती। क्या आप नही जानते थे ?

प्रधान : ओ हो : मनुष्यता दिखला रही है ? निरा पागलपन है ! सिर्फ दो ही पक्ष है : उनका और हमारा।

कमिसार : हो सकता है कि वे हमारे पक्ष मे रहे हो। इस तरह के लोग निश्चित रूप से हमारे साथ आ जायेंगे। इस वक्त भी २२,००० पुराने अफसर लाल सेना में काम कर रहे है।

प्रधान : वे २२,००० गद्दार हैं।

[वह अपनी नज़र कमाण्डर की तरफ उठाता है। और भी कई लोग उसकी तरफ घूरने लगते है। कमाण्डर चुपचाप उनकी ओर देखता रहता है।]

कमिसार : लेनिन ने कहा है—

प्रधान : *लेनिन ने क्या कहा है इसकी मुझे कोई परवाह नहीं है।*

बूढ़ा नाविक : तुम्हारे लिये अच्छा होगा कि तुम सोवियत सरकार द्वारा जारी किये गये आदेशो की परवाह करना सीख लो।

प्रधान : मेरे पास खुद अपने आदेशो की परवाह करने का थोडा काम नही है !

[प्रधान के आदेशों को पूरा करके उसके सिपाही लौट आये।]

सिपाही (आहिस्ता से) : उनमे से एक ने नारा लगाया था : "क्रान्ति चिरजीवी हो !"

प्रधान : तो इसमे क्या हुआ ? डर गया ! अपनी आत्मा को उसने कलुषित कर लिया।

अलेक्सी (भयंकर क्रोध से) और अगर सचमुच उसकी यही भावना रही हो ?

कमिसार (अलेक्सी तथा कुछ और लोगो को शान्त करती हुई) : शान्तिपूर्वक बात कर ली जाय।

प्रफ मुझे भी समझदार लोग ही पसन्द हैं। बैठ जाइये।

प्रधान ठीक है—बैठकर बात कर ली जाय। मैं हमेशा आम राय को सुनता हूँ।

[प्रत्येक व्यक्ति इधर-उधर जगह ढूँढकर बैठ जाता है।]

तो, शुरू करो,

[नौ सैनिक एक दूसरे की तरफ देखते है। बातचीत शुरू करने के लिये कोई उत्सुकता नही दिखाता।]

आवाज़ अपने मन की बात बतलाना यहाँ इतना आसान नही है।

कमिसार (प्रधान से) हर आदमी आप से इतना डरता है कि ये लोग अपना मुँह खोलने की हिम्मत नही कर रहे हैं।]

बूढा नाविक (उठकर सामने आता है) मैं कह नही सकता कि यह बात कहाँ तक सच है।

अलेक्सी (बूढे नाविक की बात को बीच मे काटता हुआ) इससे कौन डरता है ? ये इतने बडे हैं कौन ? किसके अफसर हैं ये? हमारे ? (प्रधान से) तो हम बात करने की "इजाजत" है, क्यो साहब ? आप सुनना चाहते हैं कि हमे क्या कहना है ? आपके सामने हमारी जबानें नही खुलती, क्यो (प्रधान की आवाज की अपमानजनक ढग से नकल करते हुए), " यह शोर क्यो हो रहा है ?"

प्रधान (प्रफ से) लगता है कि इस गधे का दिमाग खराब हो गया है।

अलेक्सी : क्या उस समय तुमने हमारी राय माँगी थी जिस वक्त उस बूढ़ी औरत को समुद्र में ज़िन्दा डुबो दिया था ?

आवाज़ : नहीं !

अलेक्सी : क्या तुमने हमारी यह बात मानी थी कि इनको (कमिसार की तरफ इशारा करता है) न परेशान करना ।

आवाज़ : नहीं !

नौअधिकारी (कमाण्डर की तरफ इंगित करता हुआ) : और इसको भी ? और मेरे बारे में तो बात ही करना फिजूल है ।

अलेक्सी : बिल्कुल ठीक । क्या तुमने उस वक्त कमिसार की और हम लोगों की राय पूछी थी जिस वक्त तुमने एलान किया था कि इनका (कमाण्डर की तरफ संकेत करता है) सफाया कर दिया जाय ? और उन दो घायल बन्दियों को मरवाने की इजाज़त तुम्हें किसने दी थी ? किसकी अनुमति से तुमने उन्हें मरवा डाला है ?

[भीड़ से धीरे-धीरे बहुत सी आवाज़ें उठने लगती हैं ।]

प्रधान बकवास बन्द करो ! बहुत बेअदबी हो चुकी ! जैसे कि तुम्हें पता हो कि उस सबके पीछे क्या राज़ था । तुम लोग खाक नहीं जानते ! (खड़ा हो जाता है) एक साज़िश हो रही है । मिनट भर में तुम्हें सब-कुछ मालूम हो जायगा । कमिसार, उस कागज़ को पढ़िये !

[प्रधान पूर्ण आत्म-विश्वास के साथ कमिसार के बगल में आकर खड़ा हो जाता है । सबकी नजरें कमिसार के चेहरे पर केन्द्रित हो जाती हैं । सब आश्चर्यचकित हैं ।]

कमिसार (पढ़ते-पढ़ते स्वयं मसौदा बनाती जाती है) "सर्वहारा क्रान्ति

अलेक्सी (५फ की ओर इगित करते हुए) दिमाग इसका खराब हुआ है—तुम्हारे इस सजाकिए चर का ! और अब मैं तुम्हारे मुंह पर, तुम्हारे उस बदशक्ल थूथने के सामने एलानिया कहता हूँ तुम बेईमान और गद्दार हो !

प्रधान ये बढिया बढिया शब्द तुम्हे किसने सिखला दिये हैं ? (गौर से वह कमिसार, बूढे नाविक और वाइनोनिन की तरफ देखता है)

बूढ़ा नाविक (प्रधान से) देख ले, खूब अच्छी तरह देख ले, गुण्डा कही का ! हम लोग भी अब तुमको अच्छी तरह से देख चुके है—इस चीज को भूल न जाना !

प्रधान अच्छा, अच्छा

वाइनोनिन (अभी तक भयभीत से चुपचाप खडे नाविको के एक दल मे शामिल होते हुए) तुम लोग अपने को लडाकू नाविक कहते हो ? और मुह खोलने म डर लगता है? छि ! (घृणा से थूकता है)

[उन लोगो को बुरा लगता है ।]

उनके दल से एक आवाज हा ! हम लोग अपने को ऐसा ही कहते हैं ।

चेचकदाग नाविक किसका अपमान किया जा रहा है ? हमारा ?

आवाज तुम्हारा खयाल है कि हम पेत्रोग्राद के नाविक इस तरह के जानवर से डरते है ? (प्रधान की ओर इशारा करता कहता हुआ है)

अलक्सी (प्रधान से) जिस वक्त उस पस के पीछ उस छोकरे को तुमने लहरा म फिकवा दिया था उस वक्त क्या तुमने हमारी राय सुनी थी ? बतलाओ ?

आवाज नही, कतई नही ?

[प्रधान सुन्न खड़ा है ।]

अलेक्सी क्या उस समय तुमने हमारी राय माँगी थी जिस वक्त उस बूढी औरत को समुद्र म ज़िन्दा डुबो दिया था ?

आवाज़ नही !

अलेक्सी क्या तुमने हमारी यह बात मानी थी कि इनको (कमिसार की तरफ इशारा करता है) न परेशान करना।

आवाज़ नही !

नौअधिकारी (कमाण्डर की तरफ इगित करता हुआ) और इसको भी ? और मेरे बारे म तो बात ही करना फिजूल है।

अलेक्सी बिल्कुल ठीक। क्या तुमने उस वक्त कमिसार की और हम लोगो की राय पूछी थी जिस वक्त तुमने एलान किया था कि इनको (कमाण्डर की तरफ सकेत करता है) सफाया कर दिया जाय ? और उन दो घायल बन्दियो को मरवाने की इजाजत तुम्हे किसने दी थी ? किसकी अनुमति से तुमने उन्ह मरवा डाला है ?

[भीड से धीरे धीरे बहुत सी आवाज़ें उठने लगती है।]

प्रधान बकवास बन्द करो ! बहुत बेअक्ली हो चुकी ! जैसे कि तुम्हे पता हो कि उस सबके पीछे क्या राज था। तुम लोग खाक नही जानत ! (खडा हो जाता है) एक साजिश हो रही है। मिनट भर म तुम्ह सब कुछ मालूम हो जायगा। कमिसार उस कागज़ को पढिय !

[प्रधान पूर्ण आत्म विश्वास के साथ कमिसार के बगल म आकर खडा हो जाता है। सबकी नजरें कमिसार के चेहरे पर केन्द्रित हो जाती हैं। सब आश्चयचकित है।]

कमिसार (पढते पढते स्वय मसौदा बनाती जाती है) सर्वहारा क्रान्ति

रेजीमेंट की कमिसार और उनके द्वारा नियुक्त किये गये व्यक्तियो की रेजीमेन्टल फौजी अदालत की तरफ से "-

ग्रफ नियुक्त किये गये किन लोगो की तरफ से ?

बूढा नाविक • टोको मत ।

कमिसार " भूतपूर्व "

[सबकी नजरें कमाण्डर की तरफ घूम जाती है] " टुकडी के भूतपूर्व प्रधान के मामले की जांच पडताल करने के बाद और इस नतीजे पर पहुँचने के बाद कि प्रधान बिना मुकदमा चलाये रेजीमेन्ट के एक सदस्य, बूढी स्त्री और दो युद्ध बन्दियो को मरवाने का अपराधी है, और इस नतीजे पर पहुँचने के बाद कि वह सावियत सत्ता का प्रतिनिधित्व करने वाली कमिसार की हुक्म-उदूली करने का भी अपराधी है, उसे, यानी प्रधान को सबसे कडी सजा देने का फैसला किया जाता है "

[जिस समय कमिसार अपना फैसला पढती है उस समय ग्रफ घबडाहट स अपने आस पास के तमाम लोगो के चेहरा का अध्ययन करने लगता है और फिर धीरे धीरे प्रधान के पास से खिसक जाता है । यानी, एक तरह स, डूबते हुए जहाज को वह भी तिलाजलि दे देता है ।]

प्रधान (अपनी बन्दूक हाथ म लेते हुए) धोखा ! गद्दारी ! सैनिको, मरी रक्षा के लिए आगे बढो !

[६ नाविक प्रधान को पकड लेते हैं । वह उन्हे ढकेलकर दूर कर देता है । इसी बीच उसकी बन्दूक उसके हाथ से छीन ली जाती है ।]

(ग्रफ से) : तुम कहाँ जा रहे हो ?

प्रफ (जिसे अलेक्सी जोर से पकड़े हुए हैं) मैं ?.....मैं.....इन्होंने मुझसे जबरिया काम कराये है !

प्रधान : उस कागज को पढ़ो—जिसे वह हाथ मे लिये हुए हैं ! यह तो बिल्कुल दूसरी चीज है। मेरे साथ धोखा किया गया है।

[खामोशी। अलेक्सी कमिसार के हाथ से कागज के सादे टुकड़े को ले लेता है। वह उलट-पुलट कर कभी एक तरफ देखता है, कभी दूसरी तरफ। स्थिति को समझकर वह भी फैसला कर लेता है।]

अलेक्सी · वही चीज तो इसमे लिखी हुई है .. वही जो कमिसार ने अभी पढ़ी थी। तुमने पहले ही मानने का वचन दे दिया था। क्या तुमने नही कहा था कि आम राय को तुम हमेशा सुनते हो ? (प्रफ को अपने साथ खीचते हुए वह प्रधान के सामने जाकर खड़ा हो जाता है) ऐसे मामलों के सम्बन्ध मे तुम क्या कहते थे ?

प्रफ (प्रधान के चेहरे के सामने चुनौती के स्वर मे) . फैसला अन्तिम है, इसे बदला नही जा सकता।

अलेक्सी (कमिसार तथा आम लोगो को सम्बोन्धित करते हुए) : सही है ?

कमिसार · हाँ।

[खामोशी]

चाइनोनिन (अपने रिवाल्वर को भरता है) : मैं पूरा कर दूं ?

कमिसार . बेहतर होगा कि कामरेड अलेक्सी उसे पूरा करें।

[इस अचानक जिम्मेदारी से चौककर अलेक्सी घूमकर सामने देखने लगता है।]

रेजीमेंट की कमिसार और उनके द्वारा नियुक्त किये गये व्यक्तियों की रेजीमेन्टल फौजी अदालत की तरफ से . "..

ग्रफ : नियुक्त किये गये किन लोगों की तरफ से ?

बूढ़ा नाविक : टोको मत।

कमिसार : " भूतपूर्व "

[सबकी नजरें कमाण्डर की तरफ घूम जाती है] " टुकडी के भूतपूर्व प्रधान के मामले की जांच-पडताल करने के बाद और इस नतीजे पर पहुँचने के बाद कि प्रधान बिना मुकदमा चलाये रेजीमेन्ट के एक सदस्य, बूढी स्त्री और दो युद्ध बन्दियों को मरवाने का अपराधी है, और इस नतीजे पर पहुँचने के बाद कि वह सोवियत सत्ता का प्रतिनिधित्व करने वाली कमिसार की हुक्म-उदूली करने का भी अपराधी है, उसे, यानी प्रधान को सबसे कडी सजा देने का फैसला किया जाता है . "

[जिस समय कमिसार अपना फैसला पढती है उस समय ग्रफ घबडाहट से अपने आस-पास के तमाम लोगों के चेहरों का अध्ययन करने लगता है और फिर धीरे-धीरे प्रधान के पास से खिसक जाता है। यानी, एक तरह से, डूबते हुए जहाज को वह भी तिलाजलि दे देता है।]

प्रधान (अपनी बन्दूक हाथ में लेते हुए) धोखा ! गद्दारी ! सैनिको, मेरी रक्षा के लिए आगे बढो !

[६ नाविक प्रधान को पकड़ लेते हैं। वह उन्हें ढकेलकर दूर कर देता है। इसी बीच उसकी बन्दूक उसके हाथ से छीन ली जाती है।]

(ग्रफ से) : तुम कहाँ जा रहे हो ?

अराजकतावादियो का नेता जुझारू साथियो, अभिवादन ! साथी अराजकतावादियो, अभिवादन ! इन खुशदिल लोगो को हम आपकी मदद के लिए भर्ती कर लाये है। हम एक बार फिर सन्त बार्थोलेम्यू की रात मनायेंगे ! अपने सम्मानित प्रधान की सहायता के लिए आगे बढो ! (कमिसार और वैरिंग पर यकायक नजर पडने पर) यह खूबसूरत जोडी कहाँ से उठा ले आये ? (उनकी ओर विचित्र कुतूहल की दृष्टि से देखता है। परिस्थिति को समझ नही पाता) कोई अफसर और उसकी पत्नी ? पकड गये, क्यो ? अच्छा, इसके बारे मे बाद मे बात होगी। (ग्रफ से) हाँ, बिरादर ! प्रधान कहाँ है ? उनसे मिले हजार वर्ष हो गये। उनका क्या हाल है ? मेदे की जलन की शिकायत किया करते थे। अब ठीक है ?

ग्रफ : अब बिल्कुल ठीक है। (खामोशी)

अराजकतावादियो का नेता : आप लोग कुछ बोलते क्यो नही ?

कमिसार : इन्हे बतला दो। सक्षेप मे।

ग्रफ हूँ हूँ—तुम्हारे उस प्रधान को साफ कर दिया गया है। उसका खेल खत्म हो गया ! एकदम रद्दी आदमी निकला।

नेता तुम्हारा कोढ यहाँ भी पहुँच गया ? (ग्रफ के माथे पर अँगुली स टकटक करते हुए कहता है)

ग्रफ (झटके से उसके हाथ को दूर करता हुआ) बकवास बन्द करो। तुमसे कोई मतलब नही कि वह कहाँ पहुँच गया है।

[अलेक्सी लौट आता है। प्रधान का टोप, पेटी और रिवाल्वर का केस उसके हाथ मे है। उन्हे वह सामने डाल देता है।]

अलेक्सी (नेता से) : इन्हे पहचानते हो ?

प्रधान (जिसे छः नाविक पकड़े हुए है, छूटने की कोशिश करता है) : मेरी एक आखिरी बात सुन लो ! अलेक्सी ! बिरादर !

अलेक्सी (प्रधान के पास जाकर और नाविकों की गिरिफ़्त से उसे मुक्त करके) : आख़िरी बात ? ये चोचले पूँजीवादी अदालतों मे चलते हैं, हमारे यहाँ नही। वे बच्चो को फुसलाने की तरकीबें हैं। हम लोग उन्हें नही मानते। (बैग से अपना रिवाल्वर निकालते हुए) चलो !

प्रधान : इन्कलाब जिन्दाबाद !

अलेक्सी (अधीरता से प्रधान को अपने कन्धे मे ढकेलता है) : ओह, चलो भी तो।

[अलेक्सी प्रधान को लेकर चला जाता है। नाविक बेसब्री से इन्तज़ार करते हैं। गोली चलने की आवाज़ सुनाई देती है।]

नौअधिकारी : ख़ुदा उसकी आत्मा पर रहम करे !

वाइनोनिन (कमिसार से जो कि विचारो मे खोई हुई खडी है) : अब आप क्या सोच रही है ? आपका सिर फट जायगा।

कमिसार : वाइनोनिन, तुम्हे इससे क्या मतलब ? (कमाण्डर से) कामरेड कमाण्डर, आप आज़ाद है। जाइये, कमान सँभालिए।

कमाण्डर (तनकर सीधा खडा होकर) : जी, जी, कामरेड कमिसार।

[अचानक आदमियो के गाने की आवाज़ सुनाई देती है। उनकी आवाजें बराबर नज़दीक आती जा रही हैं। एक आवाज़ : "अराजकतावादियो की कुमुक आगयी !" हमेशा की तरह शोर-गुल और गडबडी मचाता हुआ अराजकतावादियो का एक नया दल मौके पर आ जाता है। अपने सामान और हथियारो को वे लोग मनमाने और अव्यवस्थित ढग से जहाँ चाहे लटकाये हुए है।]

अराजकतावादियो का नेता . जुझारू साथियो, अभिवादन ! साथी अराजकतावादियो, अभिवादन ! इन खुशदिल लोगो को हम आपकी मदद के लिए भर्ती कर लाये है। हम एक बार फिर सन्त बार्थोलेम्यू की रात मनायेंगे ! अपने सम्मानित प्रधान की सहायता के लिए आगे बढो ! (कमिसार और बैरिंग पर यकायक नज़र पडने पर) यह खूबसूरत जोडी कहाँ से उठा ले आये ? (उनकी ओर विचित्र कुतूहल की दृष्टि से देखता है। परिस्थिति को समझ नही पाता) कोई अफसर और उसकी पत्नी ? पकड गये, क्यो ? अच्छा, इसके बारे मे बाद मे बात होगी। (ग्रफ से) हाँ, बिरादर ! प्रधान कहाँ है ? उनसे मिले हजार वर्ष हो गये। उनका क्या हाल है ? मेदे की जलन की शिकायत किया करते थे। अब ठीक है ?

ग्रफ : अब बिल्कुल ठीक है। (खामोशी)

अराजकतावादियो का नेता : आप लोग कुछ बोलते क्यो नही ?

कमिसार : इन्हे बतला दो। सक्षेप मे।

ग्रफ : हूँ हूँ—तुम्हारे उस प्रधान को साफ कर दिया गया है। उसका खेल खत्म हो गया ! एकदम रद्दी आदमी निकला।

नेता तुम्हारा कोढ यहाँ भी पहुँच गया ? (ग्रफ के माथे पर अँगुली स टकटक करते हुए कहता है)

ग्रफ (झटके स उसके हाथ को दूर करता हुआ) बकवास बन्द करो। तुमसे कोई मतलब नही कि वह कहाँ पहुँच गया है।

[अलेक्सी लौट आता है। प्रधान का टोप, पेटी और रिवाल्वर का केस उसके हाथ मे है। उन्हे वह सामने डाल देता है।]

अलेक्सी (नेता से) : इन्हें पहचानते हो ?

[नेता उन्हे घूरता है। फिर विक्षिप्त-सा अपने सिर को ज़ोर से झटका देकर]

नेता (अपने सैनिक साथियो से) साथियो, गद्दारी हुई।

[नवागन्तुको के अन्दर एक हलचल पैदा होती है।]

वाइनोनिन : चुप रह ! समझे ! तुम्हारे भी दिन खत्म हो गये। अब चलो, काम करो। अगर यह पसन्द नही है तो तुम्हारी खोपडी मे एक और छेद कर दिया जायगा !

[नवागन्तुको को नई शक्ति का, रेजीमेन्ट का, एहसास होता है।]

कमिसार : साथी नौ-अधिकारी, इन लोगो को अपने साथ ले जाओ।

नौअधिकारी : जी, जी, कामरेड कमिसार ! (नवागन्तुको से) लाइन मे खडे हो जाओ। सावधान ! आँखें—सामने ! खामोश ! सावधान !

[अराजकतावादियों का दल सावधान खडा हो जाता है। कमिसार उनके पास जाकर आधिकारिक रूप से दल का अभिनन्दन करती है।]

नेता : हलो, देवी जी !

कमिसार (उसके नजदीक आकर और सख्ती से बोलते हुए) . मैं तमीज़ से जवाब चाहती हूँ।

[जवाब एक साथ नही, अलग-अलग आते हैं। रेजीमेन्ट के सदस्य उन लोगों की तरफ घूरते हुए उन्हे बार-बार चेतावनी देते हैं . "सँभलकर बोलो।" "तुम अपने को समझते क्या हो?" "याद रखो, तुम किससे बात कर रहे हो?"]

(नवागन्तुको से) नही, उससे काम नही चलेगा। एकबार फिर बोलो।

[काफी देर तक इसी तरह करने के बाद वे एकसाथ ठीक से जवाब देने लगते है। परिस्थिति को उन्होने भाँप लिया है।]

कमिसार : अब कुछ ठीक है। मैं आपको बधाई देती हूँ, आज से आप लाल सेना की प्रथम नौसैनिक रेजीमेन्ट के सदस्य बन गये।

नवागन्तुक (एक स्वर से निर्धारित उत्तर देते हुए) हम मजदूर वर्ग के सेवक है।

नौअधिकारी : हूँ! एकदम खूब याद आ गया।

कमाण्डर (कमिसार से) : आश्चर्य! ये कैसे मजे से बदल गये!

कमिसार : मैने कहा न था, उन्हे बदलने म सदियाँ नही लगेंगी?

ग्रफ (कमाण्डर से—लापरवाही से) अभी आप हमे जानते नही! हमे जरूरत है इनकी तरह के सिर्फ कुछ और कम्युनिस्टो की! (कमिसार की पीठ सराहना से थपथपाता है)

नौअधिकारी (ग्रफ की ओर देखते हुए) : ए! अपने पजे दूर रख!

कमिसार साथियो! चलिए, अब हमे मोर्चा बुला रहा है।

[रेजीमेण्ट सावधानी की मुद्रा मे खडी हो जाती है। वह अब एक सुगठित शक्ति बन गयी है। मार्च करती है तो उसकी चापो की गूँज से एक अद्‌भुत गति का प्रेरणापूर्ण अहसास होता है।]

कमिसार साथियो! देखें तो, लाल सेना के बाकायदा सैनिको के रूप मे अब आप किस प्रकार सलामी देते हैं।

[रेजीमेण्ट की सलामी से आकाश थर्रा उठता है। एक सशक्त सेना की यह पहली ललकार है। उसके बढाव को देखकर हृदय आनन्द-विभोर हो उठता है।]

पर्दा गिर जाता है

अंक तीसरा

सायकाल। नौ-अधिकारी, बूढ़ा नाविक और आइनोनिन कमिसार के पास बैठे हैं।

कमिसार (*टेलीफोन की बात खत्म करते हुए*) हाँ ठीक है। हम ऐसा ही करेंगे। (टेलीफोन का रिसीवर रखती है) साथियो, असल बात यह है कि हम लोग बात बहुत करते हैं, किन्तु काम कम किया है। अब लडाई का वक्त आ गया। वक्त कीमती है। मार्च के दौरान कमाण्डर से मैंने बहुतेरी बातें कर ली हैं। (बूढे नाविक से) कामरेड, आपको अब एक बटालियन की जिम्मेदारी सभालनी होगी।

बूढा नाविक मैं तो खूब बढिया कमाण्डर बनूँगा ! मैं सिर्फ कोयला झोकने का काम कर सकता हूँ।

कमिसार इसके बारे म अब और बात की जरूरत नही। किसी न किसी वक्त तो हम सब को जिम्मेदारियाँ लेनी ही पडेंगी !

नौ-अधिकारी जमीन पर लडने का हम जरा भी अनुभव नही। पैदल सेना को हमशा हम तिरस्कार की नजर से देखते आए हैं।

कमिसार लकिन अब ऐसा नही करेंगे।

नौअधिकारी ठीक है, ठीक है, कामरेड कमिसार।

[कमाण्डर प्रवेश करता है।]

कमाण्डर मैं आपको कुछ खबर देना चाहता हूँ।

कमिसार क्या ?

[कमाण्डर बूढे नाविक की तरफ शकायुक्त ढग से देखता है। मामूली सैनिकों के सामने बोलने मे उसे हिचकिचाहट होती है।]

कमिसार : इनके सामने बोलने मे आपको आशका हो रही है ? आप जानते नही ये साथी कौन है ? आइए, परिचय करा दूं। जिस नयी बटालियन के बारे मे आपने और हमने बातें की थी यही उसके कमाण्डर हैं। आपके प्रथम सहायक।

[दोनो अफसर हाथ मिलाते है।]

वाइनोनिन : एकाध छोटा बटालियन मुझे नही आप दे सकती ?

कमिसार : धीरज रखो, वाइनोनिन, तुम्हारे लिए भी हम कुछ न कुछ करेंगे। जरा तुम और तैयार हो जाओ। हाँ, कामरेड कमाण्डर, आप कुछ हमे बतलाना चाहते थे न ?

कमाण्डर (कमिसार से) : बात छोटी-सी है, लेकिन है महत्वपूर्ण। दुश्मन ने पैदल सेना के एक शाही ब्रिगेड को पश्चिमी मोर्चे से इधर भेजा है। वह हमारी तरफ बढता आ रहा है।

नौअधिकारी . शाही ब्रिगेड ? १६०८ मे मैंने एक देखा था। उन दिनो हम लोग विदेशो मे थे।

कमाण्डर . ठीक वैसा ही हमारे ऊपर चढाई के लिए भेजा गया है।

कमिसार : फिर आप का क्या खयाल है, कामरेड कमाण्डर ? हमे क्या करना चाहिए ?

[वाइनोनिन और बूढा नाविक कमाण्डर के और नजदीक आ जाते है।]

कमाण्डर : मेरा सुझाव यह है। (नक्शे पर जगह दिखलाता हुआ) इस वक्त हम यहाँ है। हमारे पास तीन बटालियन हैं। मेरा

कहना है कि दो को हम आगे भेज दें—देखिए, उन्हें इस जगह तैनात किया जा सकता है। एक बटालियन को हम रिज़र्व रखेंगे। नया कमाण्डर उसी के साथ यहां रह सकता है।

[खामोशी।]

कमिसार (कमाण्डर के प्रस्ताव को दोहराते और मन मे तौलते हुए) दो बटालियनो को आगे भेज दें। एक को रिज़र्व म रखें। हूँ। कायदे कानून और पुराने तौर तरीको के हिसाब से बिल्कुल सही है। लेकिन, इस समय ? इस समय की परिस्थितियो मे ?

[अलेक्सी प्रवेश करता है।]

अलेक्सी (उन सबको ध्यान से देखते हुए) मैं फिर आप लोगो की बातचीत के बीच आ गया ?

कमिसार नही-नही। बैठिए। सैनिको का क्या हाल है ?

अलेक्सी काफी ठीक है। ताजी हवा का मजा ले रहे है। औरतो को घूर घूरकर देखते है। (सजीदगी से) अफवाह है कि कुछ होने जा रहा है ?

कमिसार अफवाहो को गोली मारिए। दुश्मन की प्रशिक्षित सेना का एक ब्रिगेड हमारी तरफ बढ़ता आ रहा है।

अलेक्सी (आवेशपूर्वक, बिना सोचे हुए) चलिए, उसकी अक्ल ठिकाने लगा दी जाय !

बूढ़ा नाविक किसकी अक्ल ? कहाँ ? कैसे ? (व्यग मे) अक्ल ठिकाने लगा दी जाय !

अलेक्सी (धप से एक सीट पर बैठते हुए) रणनीति, आदि मैं क्या जानूं। (कमाण्डर की ओर सकेत करते हुए) विशेषज्ञ तो यह हैं।

कमिसार : इन्होने तो अपना सुझाव रख दिया है : अपनी सेनाओ को एक सुविधाजनक जगह पर तैनात कर दिया जाय और दुश्मन का इन्तज़ार किया जाय। आपका क्या खयाल है ? (सब लोग खामोश हैं) मेरी राय मे, इससे काम नही चलेगा। (कमाण्डर से) बुरा न मानिएगा, लेकिन मुझे लगता है कि अगर हम निश्चित रूप से जानते हैं कि दुश्मन हमारी तरफ बढा आ रहा है तो हमे चाहिए कि हम लोग आगे जाकर उससे भिड जायें और इससे पहले कि वह जान सके कि क्या हो रहा है उसका सफाया कर दें।

अलेक्सी : मैं आप से सहमत हूँ।

नौ-अधिकारी : अब नाविक जैसी बात हुई।

कमिसार · खेतो मे छिपकर इन्तजार करना, कीचड मे पेट के बल लेटने और थोडी-सी रिजर्व शक्ति पीछे रखकर इस बात का इन्तजार करने कि दायें-बायें से, अपनी मर्जी के मुताबिक दुश्मन बढे और जो चाहे करे—मुझे लगता है कि इस पुराने रूसी तरीक़े को हम बहुत देख चुके। हमारा जी भर गया है। इसलिए मेरा सुझाव है—ध्यान रखिएगा, मैं सिर्फ सुझाव दे रही हूँ—कि हम खुद आगे बढकर दुश्मन को घेर लें।

अलेक्सी : ओ हो !

कमिसार आपकी क्या राय है ?

कमाण्डर (शान्तिपूर्वक) · आप बहुत उग्र उपाय बता रही हैं। लेकिन, व्यक्तिगत रूप से परन्तु, पार्टी का यही फैसला है तो

कमिसार : तो, ठीक रहा। हम लोग इस दूसरे तरीक़े को ही अपनायेंगे। अपनी सेनाओं को आप अब किस तरह तैनात करेंगे ?

कमाण्डर : जरा ठहरिए (नक्शे का अध्ययन करते हुए) डेढ मील का पैमाना है ? अच्छा। बस, एक क्षण,। समझा (मन मे हिसाब

लगाते हुए) उस हालत में पहला बटालियन यही रहेगा, दुश्मन के आने की सूचना देगा, और एक इच भी पीछे हटे बिना पूरी ताकत से उसका मुकाबला करेगा। दूसरे दोनो बटालियन (न० २ और ३) चुपचाप आगे बढ़ेंगे। चुपचाप। वे दुश्मन के पीछे .... लगभग १५ मील पीछे, पहुँच जायेंगे और यकायक उस पर हमला बोल देंगे, यहाँ—इस जगह पर (नक्शे पर जगह बतलाता है)।

कमिसार : ऐसे सख्त काम के लिए हमको बहुत मजबूत नेता चुनना चाहिए।

कमाण्डर (रुखाई से) : निस्सदेह। इसका फैसला आपको करना है।

कमिसार : मेरा खयाल है कि जिन दो बटालियनो को हमला करना है उनका नेतृत्व आप खुद सँभालें। नये कमाण्डर को अपने सहायक के रूप मे लेलें। जहाँ तक पहले बटालियन की बात है उसके साथ मैं खुद यहाँ रहूँगी और नौअधिकारी और अलेक्सी मेरे साथ रहेंगे।

वाइनोनिन : और मैं ? (कमिसार से) मुझे भी उस अफसर के साथ भेज दीजिए।

कमिसार : वाइनोनिन, तुम भी यही मेरे साथ रहोगे।

वाइनोनिन : बहुत अच्छा।

कमिसार (वाइनोनिन से) : देखो, कोई सुन तो नही रहा है।

[वाइनोनिन दरवाजे के पास जाता है, वहाँ से इशारे से बतलाता है कि आस-पास कोई नही है।]

कमाण्डर : हमे निम्न प्रकार से आक्रमण करना होगा. पहली बटालियन सामने से हमला करेगी, दूसरी और तीसरी पीछे से। हमले का समय सूर्योदय से ठीक पहले ५ बजे होगा। अपनी घड़ियाँ मिला लो। इस समय रात के ठीक साढे ग्यारह बजे हैं।

[कमाण्डर और अन्य लोग अपनी-अपनी घड़ियाँ निकाल कर मिलाते है ।]

बूढा नाविक : ५ बजे सुबह ।

कमिसार : ठीक ५ बजे ।

[घड़ियाँ मिलाई जाती है ।]

कमाण्डर ब्योरे की बातें, मार्ग, रुकने की जगहो, वगैरा की सूचना बाद मे दी जायगी ।

कमिसार : मैं एक बात की तरफ आप सबका ध्यान दिलाना चाहती हूँ रेजीमेंट की यह पहली बडी परीक्षा है। इस अभियान के भेद को आपको दिल मे छिपा कर रखना होगा। यदि हममे से कोई दुश्मन के हाथो मे पड जाता हूँ तो चाहे उसे मरना ही क्यो न पडे, इस भेद को वह न बताये । दुश्मन को हमे अचानक मारना है ।

याइनोलिन . एक शब्द भी नही । उससे पहले मर जाना ।

कमिसार : आपका क्या खयाल है : इस परीक्षा में रेजीमेन्ट पास हो जायगी ?

कमाण्डर · दुर्भाग्य से मुझे भविष्यवाणी करने की शक्ति नही प्राप्त है । मै आपको सलाह दूँगा कि फौरन काम शुरू कर दें । हमारे पास वक्त बिल्कुल नही है ।

[आदेश दिये जाते हैं । लोगो के रात मे इधर-उधर चलने-दौडने की आवाजें सुनाई देती है । बटालियनो का अभियान शुरू हो गया है ।]

प्रथम छोटा अधिकारी : वे लोग रवाना हो गये, वे रवाना हो गये ! (क्षणभर सुनता है, फिर धीरे-धीरे कहता है) बायें, दाहिने ! !

बाकायदा फौज के रूप मे ये उनके पहले कदम हैं। यह एक ऐसी फौज है जिसका हर सैनिक जानता है कि वह कहाँ जा रहा है। आह, वह भी कैसा रोमाचक समय था। लाल सेना हमारी तरुणाई के वे दिन ! हम १८ वर्ष के थे। सारी दुनिया को सम्बोधित करते हुए हमने कहा था : "सुनो, सारी दुनियाँ वालो, सुनो। अपनी इस विद्रोही ललकार और उन हमलो को जो हमने किये थे हम कभी नही भूलेंगे। हमारी ललकार थी "उस सकटपूर्ण *अन्तिम क्षण मे, बाल्टिक नौसैनिक बेडे के नाविक अपनी आवाजें बुलन्द करेंगे !"* हमारे साथियो, पैदल सेना के डिवीजनो और घुडसवारो की टुकडियो ने जो लम्बा और कठिन मार्ग तै किया था उसकी हमे याद है..... हमे हर चीज याद है... ..और जब भी हममे से कोई गिर जाता था तो ऐसा लगता था कि हर आदमी के खुद अपने शरीर का एक अग गिर गया है।

दूसरा छोटा अधिकारी सूर्य हमारे ऊपर दमकता था और लेनिन का नाम एक मशाल की तरह हमारे रास्ते को रोशन करता था। हमारी मुस्कराहटें और हमारी तोपो की गडगडाहटें मैदानो और पर्वतो को लाघती हुई आगे बढती जाती थी। हम मार्च कर रहे थे। साल-दर-साल, दिन और रात, ४५–५० मील प्रतिदिन के हिसाब से हम मार्च करते जा रहे थे। विश्चुला से लेकर आमूर तक सारी नदियो को हमने पार किया था। और जहाँ से भी हम गुजरते थे वहाँ अपने पीछे एक चौकी, एक मोर्चा छोडते जाते थे।

[सैनिक अपनी ड्यूटियों पर पहुँच जाते हैं। नमक, आयोडीन, मछली और नागदौन की खुशबुओ से भरी हवा खुले मैदानो मे अठखेलियाँ कर रही है। रात गहरी है। ग्रफ और वाइनोनिन पहरे पर तैनात हैं।]

ग्रफ वाइनोनिन आँख खोल रहना।

वाइनोनिन अच्छी तरह खोले हू। फिक्र न करो।

ग्रफ पीछ भी दखत रहना।

वाइनोनिन पीछ ?

ग्रफ हमारा एक सच्चा साथी खोया जा चुका है रेजीमन्ट म कहीं गद्दारी है।

वाइनोनिन क्या यह सच है ? वह अफसर भगवान जाने कौन कह सकता है ?

ग्रफ उस अफसर क एवज म कैसे अच्छ आदमी को हम खो बैठ है। छोकर चमगीदडो की तरह अन्ध है। अतीत का वे भूल गय। उसे भी भुगतना पडगा—वह समझती नही।

वाइनोनिन उस जसी स्त्री का कोई नुकसान नहीं हो सकता। लकिन अब बात बन्द करो। होशियार रहने की जरूरत है। दुश्मन अब किसी भी क्षण हमला कर सकता है।

ग्रफ होशियार रहो चाहे न रहो मरी बात गाँठ बाधकर रख लो रजीमन्ट का दु खद अन्त नजदीक है।

वाइनोनिन खामोश खामोश !

ग्रफ वाइनोनिन अब भी सोच लो। छोडो इस सवाल को। चलो भाग चलें—स्टेपी क मैदानो की तरफ समुद्र की तरफ—चलो। तैर कर निकल जायग दौडकर भाग जायेंग हम अपनी जाग को ढूढ निकालेंग। सत्य की खोज करग।

वाइनोनिन वह मुय म्द्दा अभी मिल गया है। कल पार्टी की मीटिंग है। हमार सदस्यो की सख्या बढ गयी है और हमदर्दों की भी। यह सब उस कमिसार की ही देन है। वह हम एसी जगह ल आयी है जहाँ स अब लौटा नहीं जा सकता।

ब्रफ़ : आख़िर वह चाहती क्या है ? वह पिछली मीटिंग किसलिए की थी उसने ?

वाइनोनिन : मुझे नहीं मालूम ।

ब्रफ़ (दांत किटकिटाते हुए) : नहीं मालूम, तुम्हें नहीं मालूम ? एक पुराने साथी पर विश्वास नहीं करते ? जो आदमी १६०५ में लड़ा था उस पर भी विश्वास नहीं करते ?

वाइनोनिन : १६०५ वाले, अब खामोश हो जाओ। चुपचाप बैठो, वरना मैं.. ...

ब्रफ़ : सिगरेट पियोगे ?

[वे सिगरटें तैयार करते है । वाइनोनिन की सिगरेट जलाने के लिए ब्रफ उसके पास जाता है, उसकी पेटी में वह बडी छुरी लटकती देखता है, तेजी से उसे खीचकर वाइनोनिन की पीठ मे घुसेड़ देता है जिससे वह वही पसर जाता है । फिर भी वह उस पर वार करता जाता है ।]

ब्रफ़ (वाइनोनिन के फैले शरीर पर बैठकर) : तुम किसे फुसलाने की कोशिश कर रहे थे ? इस आजाद पृथ्वी पर जब तक एक भी आजाद इन्सान मौजूद है तब तक तुम्हारे जैसो को मैं ठिकाने लगाता रहूँगा ! (छुरी की फलक को अपनी अगुंलियों से पोछता है ।)

[जाने के पहले एक बार फिर वह वाइनोनिन पर नज़र डालता है । लौट कर उसके शरीर को वह बैठी हुई पोज़ीशन में रख देता है । पर वह लुढक जाता है, उसका सिर एक पत्थर से टकरा जाता है । ब्रफ़ धीरज के साथ, अत्यन्त परिश्रम से उसे फिर बैठाने की कोशिश करता है ।

जब उसे बैठी हुई मुद्रा में रखने में वह सफल हो जाता है तो अपने राइफिल को अपने कन्धे पर डालकर और कारतूसों की अपनी पेटी को अच्छी तरह देखकर बिल्ली की तरह आहिस्ता-आहिस्ता क़दम रखता हुआ वहाँ से चल देता है । उसके दिमाग मे एक ही विचार है जिसे बडबड़ाता हुआ वह जाता है : "अराजकता चिर-जीवी हो !" धीरे-धीरे वाइनोनिन का शरीर अकड़ जाता है ।

अचानक जिस दिशा में ग्रफ गया था उधर से चीत्कार की एक तीव्र आवाज़ आती है । स्तब्धता । अनिश्चितता । पेटों के बल खिसकते लोगों की गति की साफ सरसराहट । एक आदमी काला कन्टोप पहने हुए चुपचाप पहरेदार के पास जा पहुँचता है । गहरी नीरवता । अँधेरे में कन्टोप वाला आदमी तेज़ी से पहरेदार के पेट मे छुरा भोंक देता है । परिणाम से चकित होकर वह पहरेदार के शरीर की जाँच करता है । उसके दूसरे साथी भी आ जाते है । पहरेदार के प्राण-पखेरू उड़ चुके हैं, इसलिए तेजी और खामोशी से सैनिक उसकी जगह बैठ जाते हैं ।

फ़ासले पर आवाजें सुनाई देती है । गोलियों के चलने की आवाज़ आती है । कोई चिल्लाता है : "दुश्मन !" लोगों को सतर्क करने के लिए बिगुल बजने लगती है, किन्तु तुरन्त उसे बन्द कर दिया जाता है । लोग तेज़ी से इधर-उधर दौड़ रहे है । उन्हें धोखे में घेर लिया गया है । वे दिखलाई नही पडते, लेकिन हमे दर्दभरा एहसास हो रहा है कि वे भारी विपत्ति में फंस गये है । मंच पर कुछ आकृतियाँ सुरक्षित स्थान की तलाश मे दौड़ती दिख-लाई देती है । उनमें कमिसार तथा थोड़े से दूसरे सैनिक है ।]

कमिसार : लेट जाओ !

[टॉर्च की तेज रोशनी चारों तरफ ढूंढती हुई उनके ऊपर चम-

कने लगती है । पहली बटालियन के जो अवशेष रह गये थे उन पर पहली गोली दागी जाती है ।]

अलेक्सी (जिस दिशा से गोली आयी है उसी ओर मुंह करके) : हे ! तुम लोग आपसी सम्बन्ध खराब करना चाहते हो ?

कमिसार : अलेक्सी ! यहाँ आओ !

अलेक्सी (पेट के बल खिसक कर आते हुए) : क्या बात है ?

कमिसार अपना अकार्डियन लिये हो ?

अलेक्सी . इसमे भी कोई शक हो सकता है !

कमिसार क्या तुम "उठो जागो, बन्दियो, खीचो तलवार " बजा सकते हो ?

अलेक्सी नही, नही । मुझे तो प्रेम के गीत अधिक अच्छे लगते है। पर बात क्या है ?

कमिसार मैं चाहती हूँ कि उसी गीत को सुनाओ।

नौअधिकारी लो, वे आ गये !

[पहली बटालियन के बचे-खुचे लोग मुकाबले की तैयारी करते है। वे जमीन से चिपक जाते हैं, जैसे उसी का अग बन जाते है। एलेक्सी इधर-उधर दो-चार हाथ लगाने के बाद "उठो, जागो, बंदियो".... बजाने लगता है।]

अलेक्सी : मेरी रेजीमेन्ट के सैनिको, इधर ध्यान दो ! मेरी बात सुनो !

[दुश्मन की तरफ से गोलियाँ आती हैं । खतरा और अपने साथियो का उत्साह देखकर अलेक्सी स्वयम् एक शोला बन जाता है।]

नौअधिकारी : वे बढ़ते आ रहे है !

[दुश्मन आगे आ जाते है। भयङ्कर गोलाबारी।]

अलेक्सी : डटे रहना, साथियो ! पीठ न दिखाना ! अगला गीत हमारे शानदार जहाज "वरियाग" की वीरतापूर्ण कहानी के बारे मे होगा।

[दुश्मन बढता आ रहा है। नाविको के कारतूस खत्म हो जाते है।]

नौअधिकारी : गोला-बारूद खत्म हो गया।

अलेक्सी : सावधान !

[नाविक खाइयो से बाहर निकल आते है। अलेक्सी विद्रोह की तस्वीर बना हुआ और भी जोरो से अकार्डियन बजा रहा है। नाविक अपनी बन्दूकें दुश्मन की तरफ किये खड़े हैं। अलेक्सी अपनी अकार्डियन फेंककर उनके मुँह पर प्रहार करता है। अपनी कमीज फाड़कर उतार लेता है। पसीने से भीगी हुई कमीज को मरोड़कर वह एक हन्टर की तरह बना लेता है और उससे हमला करने वाले दुश्मन को मारता है। नाविक आखिरी वक्त तक जो कुछ भी उन्हें मिल जाता है उससे शत्रु का मुकाबला करते है, लेकिन अन्त मे उनके प्रतिरोध को कुचल दिया जाता है। हमारे मित्र पकड़ लिये जाते है।]

अलेक्सी (जो आदमी उसे पकड़े हुए है उसे धक्का देकर दूर करता हुआ) : तुम लोग घूर क्यो रहे हो ? मुझे ले चलो, दोगलो, उठाओ, ले चलो मुझे ! मैं खुद चलकर नही जा सकता ! (जान-बूझकर बगावत की मुद्रा मे वह नीचे पड़ जाता है।)

कमिसार : लाल सेना जिन्दाबाद।

[दुश्मन के आदमी अपने हाथो से उसका मुँह बन्द कर देते हैं और उसके गले मे कपडा ठूस देते है। कमिसार के नारो की ललकार के उत्तर मे दूसरे बन्दी भी नारे लगाते हैं। उनके भी गलो मे चीजें ठूंस दी जाती हैं, फिर भी उनकी आवाजें दबती नही। इसके बाद खामोशी छा जाती है। छोटे अधिकारी प्रवेश करते है। वे एक दूसरे की तरफ देखते हैं।]

दूसरा छोटा अधिकारी . हमारे साथियो को बन्दी बना लिया गया।

पहला छोटा अधिकारी (दर्शको से) आप क्या सोचते है—क्या उनकी हार हो गयी ?

दूसरा छोटा अधिकारी : मेरी बात अच्छी तरह सुन लीजिए। कम्युनिस्ट अपनी अन्तिम सांस तक लडता रहेगा, वह तब तक लडता रहगा जब तक हाथ हिला सकता है, चाहे वह बॉया ही हाथ क्यो न हो! हाथ हिलाने मे असमर्थ हो जायगा तो वह अपनी जबान से लडेगा, अपनी जबान से दूसरो को समझायेगा, प्रोत्साहित करेगा, आगे बढने के लिए ललकारेगा। जब जबान से भी बोलने मे वह असमर्थ हो जायेगा तब वह अपनी आंखो से बोलेगा वह कहेगा वे उसे पकड कर ले गये है। हिम्मत मत हारना! जब उसे जजीरो से जकड दिया जायगा और उसका मुंह बन्द कर दिया जायगा तब वह अपने हत्यारा के मुँह पर उस डाटे को ही थूककर मारेगा जिससे उसका मुंह बन्द किया गया है। गर्दन पर आरी चलने के समय भी उसका अन्तिम विचार क्रान्तिकारी लक्ष्य की पूर्ति के सम्बन्ध मे होगा। स्वयम् मृत्यु भी पार्टी का एक काम हो सकती है।

[जिन विषयो के बारे मे अभी हमने वक्तव्य सुना वही सगीत की स्वर लहरियो मे गूंज रहे है। सगीत तेज है, उत्तेजक है, और आने वाली मृत्यु तथा नसीबे की पूर्व-सूचना देता प्रतीत हो रहा है। स्टेपी के मैदानो से उल्लुओ के बोलने—रोने की आवाजें आ रही है। बन्दी नाविक जमीन पर सो रहे है। उनमे से चार तेजी से चल रहे हैं जैसे कि पिंजडे मे बन्द जानवर चल रहे हो। पहरेदार उसी तरह उदास और निर्जीव है जिस तरह कि ध्वस्त साम्राज्य। अलेक्सी अन्तिम युद्ध का स्वप्न देखता प्रतीत होता है। सोते सोते वह बीच मे चिल्ला उठता है, "उठाओ, दोगलो, ले चलो मुझे।" उसकी नीद खुल जाती है तो वह कमिसार को देखता है। वह चुप बैठी है, सर्वथा अविजित।]

अलेक्सी मैं कहा हूँ ? अहा ! कैसी अजब अजब चीजें होती है। (कमिसार से) नीद आ रही है ?

कमिसार मैं यह समझने की कोशिश कर रही हूँ कि क्या हुआ होगा। पहरे पर कौन था ?

नौअधिकारी वाइनोनिन।

कमिसार वाइनोनिन। उन्ह् क्या हो गया होगा ?

आरक्षित टुकडी का नेता हो सकता है आप के साथ गद्दारी की गयी हो ? क्या खयाल है, नौअधिकारी ? हो सकता है वह श्वेत गार्ड गद्दारो से मिल गया हो ? आप के साथ भी विश्वासघात किया ! लेकिन क्यो नही ? आखिर आपने उस प्रधान को साफ करवा दिया था और उस अफसर को छुट्टा छोड दिया था।

अलेक्सी (उसे ढकेल कर दूर हटाता हुआ) ऐसी ही अक्लमन्दी के और भी कोई सुझाव हैं ?

ओडेसा का आदमी सब कुछ गुपचुप ढग से, अन्दर-खाने किया गया।

नौअधिकारी (ओडेसा के आदमी को सम्बोधित करते हुए) गद्दारी की

कमिसार . लाल सेना जिन्दाबाद ।

[दुश्मन के आदमी अपने हाथो से उसका मुँह बन्द कर देते हैं और उसके गले मे कपडा ठूस देते है । कमिसार के नारो की ललकार के उत्तर मे दूसरे बन्दी भी नारे लगाते हैं । उनके भी गलो मे चीजें ठूँस दी जाती है, फिर भी उनकी आवाजें दबती नही । इसके बाद खामोशी छा जाती है । छोटे अधिकारी प्रवेश करते है । वे एक दूसरे की तरफ देखते हैं ।]

दूसरा छोटा अधिकारी : *हमारे साथियो को बन्दी बना लिया गया ।*

पहला छोटा अधिकारी (दर्शको से) आप क्या सोचते है—क्या उनकी हार हो गयी ?

दूसरा छोटा अधिकारी : मेरी बात अच्छी तरह सुन लीजिए । कम्युनिस्ट अपनी अन्तिम साँस तक लडता रहेगा, वह तब तक लडता रहगा जब तक हाथ हिला सकता है, चाहे वह बाँया ही हाथ क्या न हो ! हाथ हिलाने मे असमर्थ हो जायगा तो वह अपनी जबान से लडेगा, अपनी जबान से दूसरो को समझायेगा, प्रोत्साहित करेगा, आगे बढने के लिए ललकारेगा । जब जबान से भी बोलने मे वह असमर्थ हो जायेगा तब वह अपनी आँखो से बोलेगा वह कहेगा वे उसे पकड कर ले गये हैं । हिम्मत मत हारना ! जब उसे जजीरो से जकड दिया जायगा और उसका मुँह बन्द कर दिया जायगा तब वह अपने हत्यारो के मुँह पर उस डाट को ही थूककर मारेगा जिससे उसका मुँह बन्द किया गया है । गर्दन पर आरी चलने के समय भी उसका अन्तिम विचार क्रान्तिकारी लक्ष्य की पूर्ति के सम्बन्ध मे होगा । स्वयम् मृत्यु भी पार्टी का एक काम हो सकती है ।

[जिन विषयो के बारे मे अभी हमने वक्तव्य सुना वही सगीत की स्वर लहरियो मे गूंज रहे हैं। सगीत तेज है, उत्तेजक है, और आने वाली मृत्यु तथा नसीबे की पूर्व-सूचना देता प्रतीत हो रहा है। स्टेपी के मैदानो मे उल्लुओ के बोलने—रोने की आवाजें आ रही है। बन्दी नाविक जमीन पर सो रहे हैं। उनमे से चार तेजी से चल रहे हैं जैसे कि पिंजडे म बन्द जानवर चल रह हो। पहरेदार उसी तरह उदास और निर्जीव है जिस तरह कि ध्वस्त साम्राज्य। अलेक्सी अन्तिम युद्ध का स्वप्न देखना प्रतीत होता है। सोते सोते वह बीच मे चिल्ला उठता है, "उठाओ, दोगलो, ले चलो मुझे।" उसकी नीद खुल जाती है तो वह कमिसार को देखता है। वह चुप बैठी है, सर्वथा अविजित।]

अलेक्सी मैं कहाँ हूँ ? अहा ! कैसी अजब अजब चीजें होती है। (कमिसार से) नीद आ रही है ?

कमिसार मैं यह समझने की कोशिश कर रही हूँ कि क्या हुआ होगा। पहरे पर कौन था ?

नौअधिकारी वाइनोनिन।

कमिसार वाइनोनिन। उन्हे क्या हो गया होगा ?

आरक्षित टुकडी का नेता हो सकता है आप के साथ गद्दारी की गयी हो ? क्या खयाल है, नौअधिकारी ? हो सकता है वह श्वेत गार्ड गद्दारो से मिल गया हो ? आप के साथ भी विश्वासघात किया ! लेकिन क्यों नही ? आखिर आपने उस प्रधान को साफ करवा दिया था और उस अफसर को छुट्टा छोड दिया था।

अलेक्सी (उसे ढकेल कर दूर हटाता हुआ) ऐसी ही अक्लमन्दी के और भी कोई सुझाव हैं ?

ओडेसा का आदमी सब कुछ चुपचुप ढग से, अन्दर खाने किया गया।

नौअधिकारी (ओडेसा के आदमी को सम्बोधित करते हुए) गद्दारी की

यह बकवास बन्द करो। यह न भूलो कि यह जमीन अब भी सरकार की है।

ओडेसा का आदमी जहन्नुम मे जाओ, तुम नौकरशाह हो। (कमिसार की तरफ देखते हुए) आप कुछ नही कहती! बैठी-बैठी सिर्फ सोच रही हैं!

कमिसार मजबूरी है—मुझे खुद भी सोचना पड़ता है और उन लोगों के लिए भी सोचना पड़ता है जो सोचना नही जानते।

ओडेसा वाला आदमी सोचना नही जानते! मैं अभी आप को बतला दूँगा कि कौन नही जानता सोचना।

चेचक दाग़ वाला सैनिक (ओडेसा वाले आदमी को ढकेल कर रास्ते से हटाते हुए) चुप भी रह, पिल्ला कहीं का!

अलेक्सी काश, हमारी रेजीमेन्ट वक्त से यहाँ आ जाती!

कमिसार श श! (अलेक्सी अपना ओंठ काट लेता है और अपने इर्द-गिर्द देखने लगता है) धीरज रखो, अलेक्सी, हमे भावावेश मे नही बहना है।

अलेक्सी नौसैनिको के जोश को बढाये रखना है?

कमिसार हाँ।

नौअधिकारी अब सैनिकों को जगा देना चाहिए।

कमिसार आप बिल्कुल ठीक कहते है। नौ अधिकारी, यहाँ भी आप जहाजी कायदे कानूनो का पालन करते है।

नौअधिकारी यहाँ तो खासतौर से—इस चीज़ को देखकर कि हमारी दुश्मन—पैदल सेना है, और वह भी विदेशी। पैदल सेना के जाहिलो के हुक्म बजाने से पहले मैं मर जाना बेहतर समझता हूँ!

कमिसार उसका हुक्म हममे से कोई नही मानेगा, नौअधिकारी। पर यह पुण्य भूमि हमारी है।

अलेक्सी : हमारे जीवित रहते इसे कोई हाथ नही लगा सकता।

कमिसार उठो, जगाओ लोगो को ! रणभेरी बजवा दो !

[नौसेना मे बिताये अपने अनेक वर्षों की याद करते हुए नौ-अधिकारी बिगुल बजाने की नकल करता है। एक कल्पित बिगुल को हाथ मे सँभालकर धीरे-धीरे, किन्तु सही-सही रणभेरी के स्वर सीटो से वह निकालता है।]

नौअधिकारी : उठो, उठो ! बहुत सो लिये। बोको तैयार है।

[दर्द से चूर पड़े लोगों के शरीर हिलने लगते है। उनमे से कुछ सीटो से तूर्यनाद की ध्वनि बजाने लगते है। यहाँ भी नौअधिकारी अपने को उनके लिए उत्तरदायी समझता हुआ उन्हे आलोचनात्मक ढग से देखता है। फिर कमिसार के पास जाकर कहता है, "नौसैनिक जाग गये।"]

कमिसार : सलाम साथियो। (रेजीमेन्ट के बचे-खुचे लोगो के जवाबी सलाम का स्वर धीमा होने पर भी सर्व-सम्मत है।)

ओवरकोटवाला आदमी ओह ! तो आपके "सलाम" का जवाब देने के चक्कर मे हम अपनी जान गवाँ दें ?

कमिसार : खामोश ! (अन्य लोगो से) हम नही जानते कि हमारे साथी हम तक पहुँच पायेंगे या नही, लेकिन एक चीज हमे अच्छी तरह याद रखनी चाहिए• कि हमारे मुँह एकदम बन्द रहें ! दूसरी दो बटालियनें हमारी कहाँ गयी है इसके सम्बन्ध मे एक शब्द भी कही न कहा जाय।

अलेक्सी : चाहे हम मर जायँ, लेकिन मुँह न खुलें ! समझे ?

नेपथ्य से आवाज : क्या यह ठीक न होगा कि हम झूठ बोल दें जिससे दुश्मन गुमराह हो जाय ? (पहरेदारो की दिशा मे देखकर इशारा करते हुए)

अलेक्सी झूठ बोलें, और फिर जिरह में पकड़ जायें ? फिर हममें से कोई नहीं बचेगा, इसलिए आदेश यह है कि चाहे मर जाओ। जबान से कुछ न निकले। बस ! और सबलोग साथ रहना। इस समय मुख्य लक्ष्य वक्त हासिल करना है।

कमिसार अलेक्सी, आप ठीक कहते हैं।

अलेक्सी जितना वक्त बिता सको—बिताओ। हर आदमी देर कराने की कोशिश करो। कम से कम पाँच बजे तक जरूर मामले को खींचा जाय—उसके बाद हम आशा ही कर सकते हैं, और क्या कहें।

ओडेसा वाला आदमी ओह ! मूर्खों के ऐसे जमघट से पहली ही बार मेरा साबका पड़ा है। तुम लोग भी खूब हो—तुमने एक जारशाही अफसर को छुट्टा छोड़ दिया और अब उम्मीद करते हो कि वह तुम्हारी खातिर जान गवाँ देगा ? (पहरेदारों की तरफ देखता हुआ) यकीन मानो, वह कभी का भाग चुका है !

[सैनिक द्विविधा पूर्वक कमिसार की तरफ देखते हैं।]

नेपथ्य से आवाज हो सकता है उसका खयाल सही हो।

[पहरेदारों के साथ शत्रु की सेना का एक अफसर अन्दर प्रवेश करता है।]

अफसर अटेन्ट्र (सावधान) ! तो अब कौन गवाही दे रहा है ?

[एक भयंकर, क्रोधभरी और कठोर खामोशी।]

ट्रमको नहीं मालूम हालत क्या है ? ट्रम्हारा खेल खत्म हो गया। जो गवाही देगा, बच जाएगा। कून बोलना चाहटा है ?

खामोशी।

तुमको बोलना होगा !

[पहरेदार ग्रफ को पकड कर लाते हैं। वह नौसैनिकों को देख-कर रुक जाता है। नौसैनिक उसे देखकर आश्चर्य प्रकट करते है।]

तुम लोग इस आदमी को जानता है ?

खामोशी।

ओडेसा वाला आदमी पहली बार इसका चेहरा देख रहा हूँ।

अफसर (ग्रफ से) बोलो, तुम्हारा रेजीमेन्ट का हालत कैसा है ?

[ग्रफ चुप रहता है।]

चलो, बोलो ! नही बोलेगा तो तुमको भी इनके साथ मार दिया जायगा। मेरा रूसी समझता है ? बोलो !

ग्रफ डरवाने की कोशिश किसी और के साथ करो, समझे ! "मारना ?" छि ! मैं थूकता हूँ तुम्हारे ऊपर। (कमिसार की तरफ इशारा करते हुए) और इस धघरिया पर भी मैं थूकता हूँ। मैं किसी के भी आदेश नही मान सकता।

अफसर (ग्रफ से) तब तुम हमारे तरफ क्यो आया ? अपने लोगो के साथ गद्दारी क्यो किया ? खुद अपने सिपाही के छुरा क्या भोंका ?

[इस सुनकर जहाजी नौसैनिक ग्रफ की तरफ दौडते हैं। पहरेदारो की सगीनें उन्हे रोक देती है।]

कमिसार याइनोनिन कहाँ है ?

ग्रफ अपने पुरखो के पास चला गया।

[जहाजी नौसैनिक फिर क्रोध से उसकी तरफ बढते है।]

मेरे नजदीक जो भी आयेगा उसका गला मैं दांतो से चबा डालूंगा !

अफसर : इसे यही छोड दो ।

[पहरेदार उसे जहाजी नौसैनिको के बीच ले जाते हैं ।]

ग्रफ ये मुझे मार डालेंगे । (अफसर से) मैं कुछ नही जानता । आप तो इनसे—कमिसार से पूछताछ करना चाहते है न ! इन्हे सब कुछ मालूम है ।

अफसर आबफुर्न,—इसे ले जाओ यहाँ से ।

[ग्रफ को सिपाही बाहर ले जाते है ।]

कमिसार कौन है ?

[तनावपूर्ण सन्नाटा । कुछ जहाजी कमिसार को आड मे लेने की कोशिश करते है ।]

कमिसार मैं हूँ कमिसार ।

अफसर आप ? आप मेरे साथ आओ ।

[कमिसार उठ खडी होती है और अफसर के पास पहुँच जाती है ।]

अलेक्सी हम सबको ले चलो ।

कमिसार साथियो, आप शान्त रहे । शायद यह अच्छा ही है कि हम लोग कुछ बात करने जा रहे है ।

[जिस ढग से वह बोलती है उससे साफ हो जाता है कि वह उनसे कह रही है कि बातचीत से समय बिताने म मदद मिलेगी । सिपाही कमिसार को ले जाते हैं ।]

अफसर मैं तुम लोगो को ५ मिनट देता हूँ। सोच लो, क्या चाहते हो।

अलेक्सी माफ कीजिएगा, इस वक्त क्या बजा है?

अफसर पाँच बजने मे १५ मिनट बाकी हैं। (बाहर चला जाता है)

अलेक्सी : साथियो!

ओडेसा वाला आदमी हे भगवान, कितनी तेजी से वक्त गुजरता है! एक मिनट। दो मिनट। और जिन्दगी खत्म हो गयी। सेकेन्ड कैसे भागते हैं!— एक, दो, तीन, चार, पाँच, छ, सात, आठ, नौ, दस— मौत आ गयी है।

[नौसैनिको की तरफ देखता है, उसे घबडाहट का दौरा आ जाता है। हँसने लगता है—हँसी का जोर अधिकाधिक तेज होता जाता है। पागलो की तरह, उन्मत्त होकर वह भयकर अट्टहास करने लगता है। उसके होठ सूख जाते है, मुँह पर फेन निकल आता है, वह गिर जाता है, उसका बदन अकड जाता है।]

नेपथ्य से आवाज तो एक गया। इसका दिमाग खराब हो गया।

नौअधिकारी (ओडेसा वाले आदमी को ध्यानपूर्वक देखते हुए) हाँ, हाँ, कुछ और करतब दिखाओ। शाबाश, छोकरे! तुम्हारी तरह के और भी बहुतेरो को मैंने देखा है। तुम्हारे जैसे मक्कारो से कैसे निपटना चाहिए इसे मैं बखूबी जानता हूँ। २५ वर्ष से यही कर रहा हूँ।

ओडेसा वाला आदमी (उठकर इस तरह बैठते हुए जैसे कुछ हुआ ही नही था) ओह, चला नही? कोई पागल हो जाता है तो वे उसे गोली नही मारते। मूर्ख कही के! तुम भी क्यो नही ऐसा ही स्वाग करते?

अलेक्सी (ओडेसा वाले आदमी का कॉलर पकड़कर उसे ऊपर उठाते हुए) स्त्री तक उनका सामना कर सकती है, लेकिन तुम, नाबदान के कीड़े, तुम ! ......(उसे धकियाकर एक तरफ करते हुए) इस कमबख्त पर नजर रखना !

[अफसर और पहरेदार वापिस आ जाते है ।]

अफसर वक्त पूरा हो गया । तुम लोगो ने सोचा ? कौन गवाही देगा ?

[नौसैनिक एक दूसरे की तरफ देखते हुए इशारे करते है । वे सब एक साथ बैठ जाते है । अलेक्सी अपना गला साफ करता है और अफसर के पैरो पर थूक देता है । दो और जहाजी भी ऐसा ही करते है । अफसर कूदकर पीछे को हटता है ।]

अलेक्सी : साथियो ! अन्त के लिए तैयार हो जाओ ! तुम्हारी क्या राय है, नौअधिकारी ? वह अफसर हमे धोखा तो नही देगा ? समय पर यहाँ लौट आयगा न ?

नौअधिकारी मैं उसकी तरफ से क्या कह सकता हूँ ।

[द्वार पर एक व्यक्ति आता दिखलाई देता है । उसे देखते ही जहाजियो के बीच सन्नाटा छा जाता है । वह दुश्मन की फौज का पादरी है । वह अन्तिम क्रिया कराने आया है । वह धीरे-धीरे आगे बढ रहा है । चलते चलते नौसैनिको के ऊपर सलीब का निशान बनाता जाता है ।]

अलेक्सी : अच्छा, तुम क्या चाहते हो ?

पादरी - वे लोग फौजी सख्ती के साथ, बिना एक शब्द बोले, तुम्हे मार देना चाहते हैं । और उनकी बात सही है । वे बहादुर लोग हैं और आप जैसे बहादुरो से बदले के लिए उनके पास कुछ

नही है। (नौअधिकारी के करीव जाते हुए) तुम्हारा क्या पद है?

नौअधिकारी नौअधिकारी।

पादडी . ईश्वर मे विश्वास करते हो?

नौअधिकारी : सर्वशक्तिशाली, सबके पिता और निर्माता ईश्वर मे—

पादडी तुमने फौज मे बहुत दिन काम किया है और तुम्हे आसानी से माफ करके तुम्हारा फिर विश्वास किया जा सकता है।

[जहाजी नौसैनिक आगे पादडी की तरफ वढते है।]

नौअधिकारी बहुत बहुत शुक्रिया। मुझे आपकी मेहरवानी की जरूरत नही। मैने अपने देश के प्रति वफादारी की शपथ ली है।

पादडी उससे पहले तुमने अपने बादशाह के प्रति वफादारी की शपथ ली थी।

नौअधिकारी हाँ लेकिन जिस तरह १९१७ म उन्होने गद्दी छोड दी उसके बाद उस शपथ का कोई महत्व नही रह गया।

पादडी जो ठीक समझो! मै तो तुम्हारी मदद करना चाहता था। मैने सोचा था कि शायद मैं तुम्हारी जिन्दगी बचा लूँ लेकिन मै देखता हू कि तुम्हे मौत ही पसन्द है। (अलेक्सी के पास जाकर) तुमको पता है कि मौत कैसी होती है? शरीर अकड जाता है, उसका सडना शुरू हो जाता है। कीडे गले से नाक तक घुस जाते है। आँखें पथरा जाती है। खामोशी के सिवा कुछ नही रह जाता वेहतर हो कि एक बार फिर सोच लो। इन्सान की एक ही जिन्दगी होती है—सिर्फ यही चगी जिन्दगी। (अलेक्सी से, धीरे से) केवल एक शब्द कह देने से तुम वच जाओगे। अपनी भूल मान लो, पश्चाताप कर लो, फिर हम लोग तुम्हारी सहायता करेंगे।

[क्षणभर सोचने की मुद्रा बनाये रखकर, अलेक्सी स्वाग करने लगता है पादडी की बात को वह ध्यानपूर्वक सुनता है और

झूठ मूठ यह दिखाने की चेष्टा करता है कि वह अत्यधिक प्रभावित हुआ है। प्रार्थना की मुद्रा में वह हाथ जोड़कर खड़ा हो जाता है और अपने साथियों को इशारा करता है कि वे ध्यान दें।]

अलेक्सी हाँ, पिता, आप ठीक कहते हैं। हम लोगों को गुमराह कर दिया गया है। हम कुछ नहीं समझ पाते। यही तो कठिनाई है।

[वह हलका सा इशारा करता है तो दो आदमी और आकर उसके साथ इस स्वाग में शामिल हो जाते हैं।]

नेपथ्य से आवाजें सच है सच है हमारी समझ में कुछ नहीं आता। यही कठिनाई है। हम लोग निपट मूर्ख हैं।

पादड़ी (यह देखकर कि आखिर वे उसकी शरण में आ रहे हैं) जहाजियो, मैं किस प्रकार तुम्हारी मदद करूँ? तुम्हारे होंठ कुछ दूसरे शब्द कह सकते हैं—साधारण मानवी शब्द। याद है तुम्हें? (वह अलेक्सी को जो कि ऐसा लगता है कि एक जबरदस्त मानसिक संघर्ष से गुजर रहा है सांत्वना देने की कोशिश करता है।] तुम उन शब्दों को जानते हो न? संसार की हर भाषा में वे एक ही जैसे लगते हैं।

अलेक्सी हाँ पिता, एक ही जैसे।

पादड़ी उन्हें मेरे साथ दोहराओ 'हमारे पिता जो आकाश में निवास करते हैं'

अलेक्सी (अपने पड़ोसी को कोहनी से कोचते हुए) तुम भी सुनते हो न? हमारे पिता जो आकाश में निवास करते हैं

[जहाजी पूरे मन से पादड़ी के शब्दों को दोहराने की चेष्टा करते हैं। तभी दूर से युद्ध का शोर सुनाई देने लगता है। जहाजी

कान लगा कर सुनते है। तैयारी का बिगुल बजने लगता है और पहरेदार युद्ध-स्थल की तरफ दौडते है। गोलीबार की आवाज़ अधिकाधिक तेज और नजदीक होती जा रही है।]

अलेक्सी (जो घुटनो के बल बैठा हुआ था एकदम खडा हो जाता है और पादडी का कालर पकड कर डाँटते हुए कहता है) ओ, बालो वाले बन्दर! लोगो के दिमागो को खराब करना बन्द करो! (पादडी का दस कदम दूर फेंककर उत्तेजित सा आगे दौड पडता है) साथियो, चलो! कमिसार का छुडाने के लिए आगे बढो।

[सिपाही उन्हे रोकने की कोशिश करते है। पहला सिपाही धक्का खाकर तुरन्त वही गिर जाता है और हवा मे हिलती उसकी टाँगो के अलावा और कुछ नही दिखलाई देता। जहाजी पहरेदारो पर टूट पडते है। गोलियाँ चलाने लगते है। एक जहाजी घायल होकर गिर पडता है। फिर एक और धराशायी हो जाता है। अलेक्सी घेरे को तोडकर बाहर निकल जाता है। उसके पीछे-पीछे और लोग भी निकल जाते है। पर्दे के पीछे से लोगो के गिरने, भागने और लडने की आवाजे सुनाई देती है। भाग निकलने की कोशिश मे ग्रफ जहाजियो पर टूट पडता है। वह मारा जाता है। पहरेदार भाग खडे होते है। रात मे घबडाहट फैली हुई है। केवल रेजीमेन्ट के मार्च करने की आवाज स रात का सन्नाटा भग होता है। जहाजी कमिसार को लिए हुए अन्दर आते है। कमिसार का शरीर लहू-लुहान है। वे उसे जमीन पर रख देत है। जो बटालियनें मदद के लिए आयी थी वे भी तेजी स अन्दर आ जाती है। कमिसार पर नजर पडते ही उनका शोर-गुल थम जाता है।

अलेक्सी (हाथ उठाकर) श, श।

[दूसरी बटालियनो के सैनिक भी कमाण्डर और पुराने नौसैनिक के नेतृत्व मे अन्दर घुस आते हैं। वे अत्य त उत्तेजित हैं। अलेक्सी और नौअधिकारी का इशारा पाते ही वे खामोश हो जाते हैं। कई लोग कमिसार के ऊपर झुके हुए उसे देख रहे हैं। खामोशी गहरी होती जाती है।]

अन्त समय तक भी उनके मुँह से एक भी शब्द नही निकला। उन्होने हमारा साथ नही छोडा।

कमाण्डर अभियान को कामयाबी के साथ पूरा कर लिया गया है। (कमिसार के ऊपर झुकते हुए) आप मेरी बात सुन रही हैं?

खामोशी

नौअधिकारी काश आप दस मिनट और पहले यहा आ गये होते।

अलेक्सी नेक साथियो, हमने उनका मलीदा बना दिया है! उनके साथ साथ पूरे क्षेत्र को साफ कर दिया! और मुझे मेरी अकार्डियन वापिस मिल गयी है!

[कमिसार सकेत करती है कि वह कुछ कहना चाहती है।]

कमिसार (मुश्किल से सुनाई पडता है) क्रान्तिकारी युद्ध समिति को रिपोर्ट पहुँचा दो कि जहाजी बेडे की प्रथम रेजीमेन्ट की स्थापना हो गयी है और उसने दुश्मन को हरा दिया है।

अलेक्सी हम कर देंगे साथियो! देखो, हमसे कौन बिछुड रहा है!

[खामोशी। हर आदमी चुपचाप मूर्ति जैसा बना खडा है। उसकी वेदना असह्य है।]

कमिसार इतने खामोश क्यो हो? (मृत्यु के गहरे होते हुए धुंधलके के अन्दर से कमिसार कमाण्डर, नौअधिकारी, पुराने नौसैनिक तथा

हाथ मे अकार्डियन थामे हुए अलेक्सी की तरफ देखती है) अलेक्सी, तुम्हे तुम्हारी अकार्डियन मिल गयी ?

अलेक्सी हाँ, हाँ, देखो न !

[दु ख और असह्य पीडा से विचलित होकर अलेक्सी १६०५ की क्रान्ति की एक पुरानी और अत्यन्त प्रिय ध्वनि आहिस्ता-आहिस्ता बजाने लगता है। तमाम नाविक कमिसार के इर्द-गिर्द खडे हुए है। अलेक्सी बेसुध होकर धुन बजा रहा है। धीरे धीरे धुन के स्वर मन्द हो जाते है। कमिसार मृत्यु से पहले अपने मित्रो को एक नजर देखने की कोशिश करती है।]

कमिसार (अन्तिम साँस लेते हुए) झण्डे को ऊँचा रखना .

[सगीत सुप्त हो जाता है। गहरी निस्तब्धता छा जाती है। कमिसार के प्राण-पखेरू उड गये। नौसैनिक टोपियाँ उतारकर अपने सिर उघार लेते है। वे साहस-पूर्वक खडे है, यद्यपि उनकी तबियाँ टूटी जा रही है और जान जैसे निकली जा रही है। उनकी आँखो मे सूर्य प्रतिबिम्बित हो रहा है। सूर्य की किरणें उनकी टोपियो के रिबन मे स्वर्णाक्षरो मे अकित उनके जहाजो के नामो पर दमक रही है। अचानक युद्ध के सगीत के स्वरो मे सन्नाटा भग हो जाता है। फिर सैनिको के मार्च करने की आवाज सुनाई देने लगती है। वे हमे लडाई के लिए ललकार रहे है। वे जाग उठे है। वे मजबूत है। उनके अन्दर हिचकिचाहट का नाम नही है। विजय और जीवनोल्लास की राह पर एक विराट लहर उन्हे आगे बहाये लिए जा रही है। तभी छ तोपो के एक साथ छूटने की सलामी जैसी आवाज गूँज उठती है। मैदानो, आल्प्स पर्वत माला, पायरनीज पर्वत शृखला की चोटियो के ऊपर से उडती हुई आवाज दूर-दूर तक चली जा रही है। हर चीज जिन्दा

हो उठती है। पौ-फूटने के समय की किरणो से धूल के कण जगमगा उठते है। जीवित इन्सानो की सख्या अनगिनत है! चारो तरफ अदम्य जीवन की सरसराहट, उसका स्पन्दन और उसकी गति है।]

प्रथम वक्ता : इस सुन्दर ससार को देखकर, जिसमे बहादुर लोग मृत्यु के डर की पुरानी कहानियो के चेहरो पर थूकते चलते है, इन्सान का हृदय खुशी से पागल हो उठता है!

[इन्सानो की धमनियो मे खून दौड रहा है। तीव्र प्रकाश से आलोकित विशाल नदियो के प्रवाह की तरह, प्रकृति की भयावह शक्तियो के दुर्दमनीय वेग की तरह, सगीत के स्वर लहरा उठते हैं। और अब उनमे सगीत नही है—बल्कि विप्लवो का, प्रलयो का गर्जन तथा जीवन-शक्ति का ठेठ, शुद्ध और विराट तुमुलनाद है।]

दूसरा वक्ता : हमे कोई नही हरा सकता।

प्रथम वक्ता . क्रान्ति को कोई नही रोक सकता!

पटाक्षेप

धर्म

लेखक : कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स

वैज्ञानिक समाजवाद के आद्य संस्थापकों की इस अमर कृति में धर्म के सार-तत्व, धर्म की उत्पत्ति तथा वर्ग समाज में धर्म की भूमिका के बारे में सही मार्क्सवादी विचारों को प्रतिपादित किया गया है ।

जिस तरह स्त्रियों के दुख को देखकर गोस्वामी तुलसीदास के मुँह से निकल पड़ा था, "पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं", उसी प्रकार धर्म के नाम पर जनता के दोहन-उत्पीडन को देखकर महान् मनीषी मार्क्स कह उठे थे "धर्म—जनता की अफीम है।" इन शब्दों को पा जाने के बाद मार्क्सवाद के विरोधियों ने यह भी सोचने समझने या बतलाने की जरूरत नहीं समझी कि उनका प्रयोग मार्क्स ने किस सदर्भ में और क्यों किया था। इसकी वजह यह थी कि शोषक वर्ग यह नहीं चाहते थे कि कोई ऐसी क्रांतिकारी विचारधारा आगे बढ सके जो उनके शोषण के खिलाफ है ।

इस ग्रन्थ में सविस्तार बतलाया गया है कि मार्क्स और एंगेल्स ने धर्म के "मिथ्या" तथा भ्रांतिपूर्ण" रूप की आलोचना किसलिए की थी और इस आलोचना के द्वारा मनुष्य के लिए वे किस प्रकार का बोधत्व प्राप्त करना चाहते हैं ।

यह महान् ग्रन्थ अब तक हिन्दी में अप्राप्य था। ग्रन्थ में मार्क्स और एंगेल्स के चित्र भी दिये गये हैं ।

पृष्ठ संख्या ५३०, सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य मात्र ५ रुपया ।

बीसवीं सदी का पूँजीवाद

लेखक : प्रो० ई० वार्गा

प्रसिद्ध सोवियत अथशास्त्री और विचारक, अकादमीशियन प्रो० इ० वार्गा ने अपने इस महत्वपूण ग्र थ मे वत्तमान पूँजीवादी समाज का ऐतिहासिक ढग स विवेचन करके उसकी सारी अस नियत को सामने खोलकर रख दिया है।

पूजीवाद की स्थिति आज क्या है ? क्या पजीवाद अब भी बाकी है ? क्या उसने शोपण करना बन्द कर दिया ? क्या उसने एक सवकल्याणकारी समाज का रूप धारण कर लिया ? क्या मजदूर तथा अ य आम लोग उसके हिस्सेदार बन गये ? और, आखिर म, क्या पूजीवाद और समाजवाद मे अब कोई फक नहीं रह गया ? आदि आदि न जाने कितने प्रश्न आज उठ रहे है अथवा कहना चाहिए उठवाय जा रहे है। प्रो० वार्गा न इन सबका ठोस सप्रमाण उत्तर दिया है। उनका यह उत्तर व्यावहारिक दृष्टि से भी महत्वपूण है क्योंकि, करोडा लोगा के आन्दोलनो को वह प्रभावित करता है या कर सकता है।

राष्ट्र भाषा हिन्दी म मार्क्सवादी दृष्टिकोण से लिखी हुई यह पहली पुस्तक है। इसे पढ बिना आज की दुनिया को समझना कठिन होगा।

पृष्ठ २३४, सुन्दर जिल्द, मूल्य तीन रुपया।

इण्डिया पब्लिशर्स

सी—७/२, रिवर बैंक कालोनी, लखनऊ

मार्क्सवादी अर्थशास्त्र के मूल सिद्धान्त

लेखक : एल० लियोन्तीव

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान तथा अनेक प्रामाणिक और प्रसिद्ध ग्रन्थो के रचयिता, प्रोफेसर एल० लियोन्तीव ने इस पुस्तक मे मार्क्सवादी राजनीतिक अर्थशास्त्र के मूल सिद्धान्तो का अत्यन्त सरल और सुबोध शैली मे परिचय प्रस्तुत किया है।

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के आत्मनाशक अन्तर्विरोधो का विश्लेषण करने के साथ-साथ प्रो० लियोन्तीव ने अपनी इस रचना मे समाजवादी अर्थ-व्यवस्था को सचालित करने वाले नियमो की भी वैज्ञानिक व्याख्या की है। उन्होने यह भी बतलाया है कि समाज समाजवाद से साम्यवाद की ओर—सोशलिज्म से कम्युनिज्म की ओर कैसे सक्रमण करता है।

इस महत्वपूर्ण विषय पर हिन्दी मे अभी तक कोई रचना प्राप्त नही थी। विषय को सुगम बनाने की दृष्टि से विद्वान लेखक ने इस पुस्तक मे प्रश्न-उत्तर की लोकप्रिय प्रणाली को अपनाया है।

पृष्ठ २०२, सुन्दर जिल्द,
मूल्य दो रुपया पचास पैसा।

इण्डिया पब्लिशर्स

सी—७/२, रिवर बैंक कालोनी, लखनऊ

कम्युनिस्ट नैतिकता

लेखक : मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, आदि

कम्युनिस्ट नैतिकता क्या है ? क्या कम्युनिस्ट किसी नैतिकता को मानते भी हैं ? सत्य के बारे मे उनकी क्या राय है ? क्या अपने लक्ष्यो की प्राप्ति के सम्बन्ध मे वे साधनो की कोई परवाह नही करते ?

इसके अतिरिक्त, विवाह, प्रेम, परिवार, देशभक्ति, कर्तव्य-परायणता, मनुष्य के आत्मिक जीवन तथा मूल्यो से सम्बन्धित प्रश्नो के विषय मे कम्युनिस्टो की क्या धारणाएँ हैं ?

इन प्रश्नो के उत्तरो से परिचित होना आज केवल सैद्धान्तिक या दार्शनिक महत्व की चीज नही रह गयी । यह तात्कालिक, व्यावहारिक महत्व की भी चीज बन गयी है ।

इस पुस्तक मे सग्रहीत स्फुट उद्धरणो, पत्रो, लेखाशो, आदि मे उपर्युक्त प्रश्नो पर प्रकाश डाला गया है । इससे कम्युनिस्टो को और निकट से जानने तथा कम्युनिस्ट आन्दोलन की अविजेय शक्ति के नैतिक स्रोतो को समझने म सहायता मिलेगी ।

पृष्ठ २२५, सुन्दर जिल्द,
मूल्य तीन रुपया ।

इण्डिया पब्लिशर्स

सी—७/२, रिवर बैंक कालोनी, लखनऊ